निवेदन

जयपुर राज्य के अंतर्गत हणोतिया ग्राम के रहनेवाले बारहट नृसिंहदास जी के पुत्र बारहट बालाबख्शजी की बहुत दिनों से इच्छा थी कि राजपूतों और चारणों की रची हुई ऐतिहासिक और (डिंगल तथा पिंगल) कविता की पुस्तकें प्रकाशित की जायँ जिसमें हिंदी साहित्य के भांडार की पूर्ति हो और ये ग्रंथ सदा के लिये रक्षित हो जायँ। इस इच्छा से प्रेरित होकर उन्होंने नवंबर सन् १६२२ में ५,०००) रु० काशी नागरीप्रचारिणी सभा को दिए और सन् १६२३ २०००) रु० और दिए। इन ७०००) रु० से ३॥) वार्षिक सूद के १२०००) के अंकित मूल्य के गवर्मेंट प्रामिसरी नोट खरीद लिए गए हैं। इनकी वार्षिक आय ४२०) रु० होगी। बारहट बालाबख्शजी ने यह निश्चय किया है कि इस आय से तथा साधारण व्यय के अनंतर पुस्तकों की बिक्री से जो आय हो अथवा जो कुछ सहायतार्थ और कहीं से मिले, उससे "बालाबख्श राजपूत चारण पुस्तकमाला" नाम की एक ग्रंथावली प्रकाशित की जाय, जिसमें पहले राजपूतों और चारणों के रचित प्राचीन ऐतिहासिक तथा काव्य-ग्रंथ प्रकाशित किए जायँ और उनके छप जाने अथवा अभाव में किसी जातीय संप्रदाय के किसी व्यक्ति के लिखे ऐसे प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथ, ख्यात आदि छापे जायँ, जिनका संबंध राजपूतों अथवा चारणों से हो। बारहट बालाबख्शजी का दानपत्र काशी नागरीप्रचारिणी सभा के तीसवें वार्षिक विवरण में अविकल प्रकाशित कर दिया गया है। उसकी धाराओं के अनुकूल काशी नागरीप्रचारिणी सभा इस पुस्तकमाला को प्रकाशित करती है।

———

विषय-सूची

भूमिका

ग्रंथ परिचय

वीसलदेव रासो की एक प्राचीन हस्त-लिखित प्रति का पता, पहले पहल काशी-नागरीप्रचारिणी सभा को सन् १९०० में हिन्दी हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज करते समय जयपुर में लगा। यह प्रति विद्याप्रचारिणी जैन सभा जयपुर के पास थी*। यह संवत् १६६६ (सन् १६१२) की लिखी हुई थी। सभा द्वारा इसकी प्रतिलिपि मँगवाई गई। बाबू श्यामसुन्दरदासजी ने सन् १९०१ में नागरीप्रचारिणी पत्रिका में एक लेख 'वीसलदेव रासो' शीर्षक प्रकाशित किया जिसमें उसके विषय में अपने विचार प्रकट किये। आपके प्रतिवाद में सन् १९०२ में पंडित रामनारायण दूगड़ ने पत्रिका में एक लेख छपवाया। तत्पश्चात् इसके विषय में काई चर्चा न हुई और न ग्रंथ ही प्रकाशित हुआ।

सन् १९२२ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने एम० ए० की परीक्षा के हेतु नियत अन्य विषयों में हिन्दी को भी स्थान

---

* देखो—Annual Report on the Search for Hindi Manuscripts, for the year 1900—Notice No. 90. Page, 77.

ईति राजा वीसलदेव रास राजमती च्यारै षंड संपूर्ण भवति। संवत् १६६६ वर्षे फागुण वदि १ भोमे लिषतं फूलषेड़ा मध्ये राज्य श्री षीची राजचंद्रजी राज्ये। शुभ भवतु।

दिया और हिन्दी परीक्षा के लिए नियत पुस्तकों में लाला सीताराम बी० ए० द्वारा संगृहीत Bardic Selection नामक संग्रह भी रक्खा। इसमें बीसलदेव रासो का एक सर्ग (चतुर्थ) उद्धृत है। परीक्षा के हेतु अध्ययन करते समय उसमें मुझे अनेक अशुद्धियाँ दिखाई पड़ीं। मैंने यह बात अपने पिता स्व० बा० जगन्मोहन वर्म्मा से कही। उन्होंने मुझे 'बीसलदेव रासो' की एक संपूर्ण प्रतिलिपि दी, जो संभवतः काशी नागरीप्रचारिणी सभा की प्रति से नकल की हुई थी। यह प्रतिलिपि साफ नहीं लिखी थी, अतः मैंने स्वयं इसे साफ साफ अलग कापी पर लिखा और उसे अध्ययन किया। पश्चात् मेरे मन में यह बात आई कि मैं इस ग्रंथ के कठिन शब्दों पर नोट दे डालूँ, जिससे अध्ययन करने में लोगों को सुबिधा हो। इस उद्देश्य से मैंने 'बीसलदेव रासो' के कठिन शब्दों पर कुछ टिप्पणी दी। उसके पाठ में जब मुझे कहीं कहीं शंका हुई तो मैंने इसे अपने पिता से कहा। उन्होंने मुझे एक दूसरी प्रति कहीं से मँगवा दी थी जो संवत् १६५६ की लिखी हुई थी। उस प्रति से मैंने अपनी प्रतिलिपि की हुई प्रति को मिलाया तो उसमें अनेक संशोधन करने पड़े। यह प्रकाशित ग्रंथ उसी कापी के आधार पर है। उस में यत्र तत्र जहाँ कहीं मुझे कुछ शब्द छुटे हुए जान पड़े हैं, वहाँ मैंने उन्हें कोष्ठक में दे दिया है। ग्रंथ के छंदक्रम में मुझे अनेक स्थलों पर प्रसंग के अनुसार व्यतिक्रम जान पड़ा है पर उसे ठीक करने में मुझे संकोच करना पड़ा है कि कहीं ऐसा करते समय ग्रंथ का वास्तविक क्रम नष्ट न हो जाय। फिर भी एक आध स्थलों पर मुझे विवश होकर पदों के एक आध चरणों को इधर उधर करने पर विवश ही होना पड़ा है।

बीसलदेव रासो की प्रतिलिपि बहुत ही अशुद्ध है। इसके

कारण उसमें शब्दों के रूप विकृत हो गये हैं। छंदोभंग-दोष भी इसी कारण हुआ है। प्रतिलिपि के अशुद्ध होने का यह कारण है कि यह 'रासो' बहुत दिनों तक मौखिक रहा पीछे किसी ने किसी को गाते हुए सुनकर लिपि-बद्ध किया होगा, यही हाल जगनिक के 'आल्हा' का हुआ है।

वीसलदेव रासो स्वयं कवि 'नरपति नाल्ह' ने कभी लिपि-बद्ध नहीं किया, इस बात की पुष्टि स्वयं कवि के कथन से होती है। प्रथम स्वर्ग में 'नाल्ह' कहता है—

'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
हियडइ हरषि गायण कइ भाइ॥ पृ० ३.

अर्थात्—'नाल्ह' रसज्ञ नर (कवि) कहता है हृदय में हर्षित होकर गाने (गीत) की भाँति। पुनश्च वह कहता है—

सरसति सामणी करउ इउ पसाउ।
रास प्रगासउँ बीसल—दे—राउ॥
खेलाँ पइसइ माँडली।
आखर आखर आणाजे जोड़ि॥ पृ० ४.

* * * *

इससे प्रकट है कि उसने किसी समाज में यह 'रास' जोड़ कर (छंदो-बद्ध करके) उसी समय लोगों को सुनाया था: इस प्रकार 'रासो' में जहाँ कहीं इस प्रकार का वर्णन है वहाँ 'नाल्ह' ने 'गाता हूँ' 'कहता हूँ' या 'आरंभ करता हूँ' इत्यादि ही लिखा है। यथा—

(१) गायो हो रास सुणै सब कोइ।
साँभल्याँ रास गंगा-फल होइ॥ पृ० ५.

(२) कर जोड़े नरपति कहइ।
रास रसायण सुणौ सब कोई॥ पृ० ५.

(३) पहिलइ खंड कहइ छइ व्यास।
राजमती राय पूरीय आस॥ पृ० ३१.

(४) दूजौ षंड चय्यो परिमाण।
जे नर सूणइ ते गंगा न्हाण॥

(५) 'नाल्ह' रसायण नर भणाई।
तीजो खंड चयो परिमाण॥

* * * *

वीसलदेव रासो के मौखिक ग्रंथ होने का एक प्रमाण यह भी जान पड़ता है कि 'रास' श्रोताओं को संबोधन करके कहा गया है क्योंकि कवि ने यत्र तत्र यही लिखा है कि 'सब लोग सुनो', रास सुनने से गंगा फल होता है * इत्यादि। इससे स्पष्ट है कि वीसलदेव रासो को कवि ने लिपिबद्ध नहीं किया था, उसने केवल सुननेवालों के लिये गीत रूप में इसे छंदोबद्ध किया था और वह उसे गाकर सुनाता फिरता था।

निर्माण-काल।

कवि नरपति नाल्ह वीसलदेव रासो में निर्माण-काल यों लिखता है—

बारह सै बहोत्तराहाँ मझारि।

---

*—सयल सभा सामलो हो संयोग।
गंगा फल 'नरपति' कहइ॥
पुत्र कलत्र नवि हुवई विजोग। पृ० १००

* * *

जेष्ठ बदी नवमी बुधवार ॥
'नाल्ह' रसायण आरंभई ।

इससे प्रकट है कि कवि नाल्ह ने बीसलदेव रासो संवत् बारह सै बहोत्तर में जेष्ठ बदी नवमी बुधवार को आरंभ किया था। बारह सै बहोत्तर का अर्थ लोगों ने कई प्रकार से किया है। बाबू श्यामसुंदर दासजी ने सन् १६०० की हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की रिपोर्ट में इसे १२२० शक् संवत माना है* इसी का अनुकरण मिश्र-बंधुओं ने भी 'विनोद' में किया है। लाला सीताराम ने अपने Bardic selection नामक पुस्तक में इसे १२७२ विक्रम संवत माना है जो ठीक नहीं है। क्योंकि गणना करने से विक्रम संवत के १२७२ में जेठ बदी नवमी बुधवार को नहीं पड़ती।

'बारह से बहोत्तर' का स्पष्ट अर्थ १२१२ होगा। 'बहोत्तर' यह 'बरहोत्तर' 'द्वादशोत्तर' का रूपांतर है जिसका अर्थ होगा † द्वादशोत्तर बारह सै अर्थात् १२१२। इसी प्रकार 'सोलोत्तरो' 'सतोत्तर' ‡ क्रमशः सोलह (१६) और सात (७) के लिये मिलते हैं। गणना करने पर

---

* The author of this chronicle is Narpati Nalha and he gives the date of the composition of the book as Samvat 1220. This is not Vikram Samvat.

† दामो कृत—लक्ष्मण सेन पद्मावती की कथा का समय संवत पंदरह सो **सोलोत्तरा** मझारि। संवत—१५१६—देखो—Report Hindi Search 1900. P. 76

‡ हरराजकृत—ढाला मारू की कथा का समय-संवत सोलह **सतोतरइ**—संवत १६०७। देखो—वही—Page 84

विक्रम संवत् १२१२ में जेष्ठ बदी नवमी को बुधवार पड़ता है; अतः गणना से भी यह ठीक उतरता है।

नरपति नाल्ह ने 'रासो' में संवत् स्पष्ट नहीं लिखा है पर राव बहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंदजी ओझा ने मुझे एक पत्र में लिखा है कि 'राजपूताने में विक्रम संवत ही लिखा जाता था शक संवत नहीं।' अतः यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि विक्रम संवत १२१२ में नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो की रचना की। इस निर्माण-काल की पुष्टि एक प्रकार से और भी होती है।

नरपति नाल्ह ने अपने ग्रंथ में प्रायः सर्वत्र वर्तमान-कालिक क्रिया का प्रयोग किया है। इससे यह निश्चय होता है कि कवि बीसलदेव का समकालीन था। बीसलदेव विग्रहराज चतुर्थ का दूसरा नाम है। बीसलदेव के शिलालेख संवत १२१० और १२२० के प्राप्त हैं। अजमेर बसने के पश्चात् केवल यही बीसलदेव हुआ है। यह अर्णोराज का पुत्र और जगदेव का छोटा भाई था। यह अपने बड़े भाई जगदेव के जीते जी उससे राज छीन कर गद्दी पर बैठा था। इसको विद्या का बड़ा प्रेम था। इसका रचा हुआ हरकेलि नाटक है। यह नाटक वि० सं० १२१० (सन् ११५६) की माघ शुक्ला पंचमी को समाप्त हुआ था। यह उक्त संवत में शिला पर खुदवा दिया गया था जो अजमेर में 'ढाई दिन का झोपड़ा' नामक स्थान में खुदाई करने पर प्राप्त हुआ है। इसी स्थान में बीसलदेव द्वारा स्थापित पाठशाला थी।

बीसलदेव बड़ा वीर और प्रतापी था। दिल्ली की प्रसिद्ध फीरोजशाह की लाट पर वि० सं० १२२० वैशाख शुक्ला १५ का इसका एक लेख है। जिसमें लिखा है—

"इसने तीर्थ यात्रा के प्रसंग से विंध्याचल से हिमालय तक के देशों को विजय कर उनसे कर वसूल किया और आर्यावर्त से मुसलमानों

को भगा कर एक बार फिर भारत को आर्यभूमि बना दिया। इसने मुसलमानों को अटक पार निकाल देने की अपने उत्तराधिकारियों को वसीयत की थी।"*

अब यह निश्चय है कि वीसलदेव संवत १२१०-१२२० तक अजमेर का शासक था। अतः नरपति नाल्ह का दिया हुआ वीसलदेव रासो का संवत् १२१२ माननीय है और वह वीसलदेव का समकालीन था।

कथा

वीसलदेव रासो में दी हुई घटनाओं की ऐतिहासिक जाँच करने के पूर्व उसकी कथा का सारांश जान लेना आवश्यक है। यह ग्रंथ चार खंडों में है।† इस ग्रंथ का सारांश यों है—

---

* आविन्ध्यादाहिमाद्रे विरचितविजयस्तीर्थयात्रा प्रसंगा—
दुदग्रीवेषु प्रहर्पोन्नृपतिषु विनमत्कन्धरेषु प्रयत्नः।
आर्यावर्त्तं यथार्थं पुनरपि कृतवान्म्लेच्छविच्छेदनाभि—
देवः शाकंभरीन्द्रो जगति विजयते वीसलः क्षोणिपालः॥
ब्रूते सम्प्रति चाहुवाणतिलकः शाकंभरी भूपति—
श्रीमान विग्रहराज एष विजयी सन्तानजानात्मनः।
अस्माभिः करंदव्यावापि हिमवद्विन्ध्यान्तरालंभुवः
शेष स्वीकरणीयमस्तु भवतामुद्योगशून्य मनः॥

× × × ×

† ग्रंथ छपते समय भ्रम से पहले खंड के आदि में 'प्रथमसर्ग' छप गया अतः पाछे अन्य तीनों 'खंडों' को भी 'सर्ग' लिखना पड़ा। काव्य में 'सर्ग' का होना बुरा नहीं। पर नाल्ह ने 'खंड' के अनुसार विभाग किया है।

प्रथम खंड—

कवि नरपति नाल्ह पहले सरस्वती की और फिर गणेश की वंदना करता है और संवत् १२१२ जेठ बदी नवमी बुधवार को वीसलदेव रासो आरंभ करता है। धार नामक एक नगरी है जहाँ भोज परमार राज करते हैं। इनके अस्सी सहस्र हाथी और पाँच अक्षोहिणी सेना है। इनकी राजवल्लभा बहुत हैं। भोज की पुत्री अत्यंत रूपवती है। इसका नाम राजमती है। एक दिन भोज की रानी उनसे कहती है "राजा! अपने रहते ही पुत्री का विवाह कर दो। इसके लिये वर ढूँढो।" भोज अपने पंडित (पांडे) को वर खोजने के लिये भेजता है। राजा भोज का पुरोहित वर ढूँढ़ता हुआ चारों ओर जाता है। वह जेसलमेर, तोड़ा, अयोध्या, दिल्ली, मथुरा आदि स्थानों में वर ढूँढ़ता है पर कोई उसे राजमती के योग्य नहीं जँचता। तब वह अजमेर जाता और वीसलराय को देखता है। यह वर उसके मन बैठता है और वह आकर भोज से इसकी सूचना देता है। भोज लगन सोपारी लेकर उसे वीसलदेव के यहाँ अजमेर भेजता है। वह वहाँ जाकर मानिक मोती से चौक पुरा कर वीसलदेव का पैर पखाल कर उसे राजमती का वर करार देता है। तिलक चढ़ने का समाचार सारे नगर में फैलता है और सब अजमेर निवासी प्रसन्न हो जाते हैं।

बरात पहले चित्तौरगढ़ जाती है, वहाँ से पुरपाटन होकर वीसलपुर पहुँचती है फिर प्रस्थान करके मालवगिरि पहुँचती है। यहाँ से 'धार' नगर नजदीक है। धार के निकट थोड़ी दूर पर डेरा डाला जाता है। मालवगिरि में बड़ा उत्सव होता है, आठ सहस्र ब्राह्मण उस उत्सव में वेदोच्चारण करते हैं। सब आए हुए लोग भाँति भाँति के पकवान भोजन करते हैं। माघ पंडित 'अगुवानी' की वेला बतलाते हैं और बारात अगुवानी के लिये चलती है। सब सरदार भिन्न भिन्न घोड़ों पर

सजकर चलते हैं और उज्जैनी में मिलते हैं। दोनों ओर के लोग मिलते हैं। दोनों ओर से पान बीड़ा बाँटा जाता है। लोग जनवासे में ठहराए जाते हैं। विवाह के लिये बीसलदेव विवाह मंडप में आता है स्त्रियाँ आरती उतारती हैं। माघ पंडित के कहने पर राजमती बीसलदेव के गले में जयमाल डालती है। माश्रम ज्योतिषी, देश्रम व्यास, माघ अरिजन और कवि कालिदास वेदोच्चारण करते हैं। राजमती और बीसलदेव का ब्याह होता है। सब लोग प्रसन्न होते हैं।

पहली फेरी में राजा भोज बीसलदेव को आलीसर और कुडाल देश देता है। दूसरी फेरी में बहुत से घोड़े और बहुत सा धन और मडोवर सौराष्ट्र और गुजरात देश देता है। तीसरे फेरे में साँभर, तोड़ा, टोंक देश देता है। चौथे फेरे में बीसलदेव नीरवाड़ा देश माँगता है। चेटी कहती है 'भोज तुझे फिर बहुत देगा तूँ क्यों चित्तोड़ माँगता है। हे साँभर के राजा राजमती को अंगीकार कर। अगर माँगना है तो धार माँग, उजयनी माँग, चंदेरी खेडला माँग, अयोध्या माँग पर चित्तोड़ मत माँग, क्योंकि वह देवता को भी अलभ्य है।' अंत में राजमती के कहने पर भोज उसे चित्तोड़ भी देता है। बहुत सा धन देकर भोज बीसलदेव का मान रखता है। विवाह के अनंतर पहिरावणी होती है। और बहुत सी दासियाँ, घोड़े आदि देकर भोज बीसलदेव को विदा करता है। राजमती को हाथी पर बैठा कर बीसलदेव अजमेर के लिये प्रस्थान करता है। रास्ते में उसे 'आना सागर' मिलता है। अजमेर पहुँच कर वह राजमती को लेकर अंतःपुर में प्रवेश करता है और उसकी अनुपम सुंदरता अन्य रानियाँ देखती हैं। राजा बीसलदेव राजमती के साथ सुख भोग करता है। 'नरपति' हाथ जोड़ कर कहता है कि तुझ पर तैंतीस कोटि देवता प्रसन्न हैं। अतः तू ने (कवि) राजमती के स्वयंवर का वर्णन कह कर समाप्त किया।

द्वितीय खंड—

गौरीनंदन की वंदना करके 'नाल्ह' कहता है साँभर के राजा बीसलदेव ने गर्व करके कहा है कि मेरे सदृश और कोई राजा नहीं है। इस पर राजमती ने कहा "मेरे पति! गर्व न करो, बहुत से राजा आप से बड़े हैं। लंकापति रावण गर्व ही से नष्ट हुआ। तुम सरीखे अनेक राजा हैं। एक उड़ीसा का राजा है, जिसके यहाँ हीरा खान उगहा जाता है।" यह सुन कर राजा के मन में क्रोध हो गया और उसने कहा "मैं भूला था तू ने मुझे चेता दिया। या तो मेरे हीरे की खान होगी नहीं तो मैं प्राण दे दूँगा।"

राजमती कहती है "राजा, क्रोध छोड़ो, मैंने यह हँसी में कहा था। मुझे छोड़ कर चले जाओगे तो मेरा जीना कैसे होगा?" बीसलदेव पूछता है "तेरा जन्म तो जैसलमेर में हुआ, तू विवाहित होकर १२ वर्ष की अवस्था में अजमेर आई। तुझे उड़ीसा के जगन्नाथ के विषय में कैसे ज्ञात हुआ। तू अपने पहले जन्म का वृतांत कह।" राजमती अपने पूर्व जन्म का वृतांत राजा से यों कहती है "मैं पूर्व जन्म में हरिणी थी और बन में रहती हुई निर्जला एकादशी (ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी) का व्रत किया करती थी। एक दिन एक अहेरी (शिकारी) ने मेरे हृदय में बाण मारा जिससे मैं मर गई। इसके उपरांत मेरा जन्म जगन्नाथपुरी में हुआ। वहाँ मृत्यु के समय मैंने शंख, चक्र, गदाधारी विष्णु का ध्यान किया। उनके प्रसन्न होने पर मैंने वर माँगा कि मेरा जन्म पूर्व देश में न हो।" इस पर राजा बीसलदेव पूछता है कि तू ने क्यों पूर्व देश को छोड़ा वहाँ तो पाप का प्रवेश नहीं है। वहाँ के लोग बड़े चतुर होते हैं। वहाँ गंगा, गया, काशी (वाराणसी) आदि तीर्थ हैं, जहाँ नहाने से पाप का नाश होता है। राजमती कहती है "पूरब के लोग पान फूल आदि भक्षक होते हैं। बड़े कंजूस और अभक्ष्य पदार्थों के भक्षक होते हैं। ग्वालियर

के लोग और दक्षिण के लोग बड़े भोगी होते हैं।" राजा कहता है कि तेरा जन्म मारू के देश (मारवाड़) में हुआ तू बड़ी सुंदरी है। रानी कहती है "हे साँभर के राजा, तुम परदेश क्यों जाते हो तुम्हारी ६० रानियाँ हैं। तुम इन्हें छोड़ कर परदेश मत जाओ।" राजा कहता है कि हे राजकुमारी, तू दुःखित मत हो मैं तेरे लिये उड़ीसा जाकर लाख टका का हार लेकर जगन्नाथ को पूज कर आऊँगा। रानी कहती है "तू मेरे घर भेज कर असंख्य धन मँगा सकता है, परदेश जाने की कोई आवश्यकता नहीं।" रानी ने बहुत समझाया पर राजा ने एक नहीं मानी और पुरोहित को बुला कर चलने का मुहूर्त्त पूछता है। रानी ने पुरोहित को बुला कर कहा कि कातिक तक मुहूर्त मत देना। इस प्रकार एक मास का विलंब करना। उसने वैसा ही किया फिर इसके बाद राजा फिर चलने के लिये तैयार होता है। राजमती और राजा बीसलदेव की भावज (जगदेव की स्त्री) ने बहुत समझाया उसने कहा कि तुम सात वर्ष पहले बाहर रहे, जन्म भर इधर उधर देश जीतते रहे इस प्रकार तुम्हारा सदा किराये के टट्टू की तरह घूमना ठीक नहीं है। राजा ने एक न मानी। उसने कहा "हम बारह वर्ष तक जगन्नाथ का पूजन करेंगे या विष खाकर मर जायँगे। मुझे राजमती ने ताना दिया है, मैं उड़ीसा अवश्य जीतूँगा।" यह कहकर वह उड़ीसा जाने की तैयारी करता है और सब मंत्रियों को बुला कर उनकी राय लेकर अपने भतीजे को राज सौंप कर बड़े धूम धाम से सेना लेकर प्रस्थान करता है। साथ उदयसिंह, अचल चौहान, वत्सराज, देवजी, सक्त सिंह आदि सरदार जाते हैं। चलते समय राजा को बड़े अपशकुन होते हैं। फिर भी वह नहीं मानता और अच्छे शकुन होने पर प्रस्थान कर देता है। बनास नदी पार कर, गंगा पार करता है और उड़ीसा पहुँचता है। वहाँ का राजा देव उसका स्वागत करता है और अपने भाई के तुल्य आदर सत्कार करके ले जाता है।

तृतीय खंड—

राजा के वियोग में रानी विलाप करती है और सखियाँ समझाती हैं। कवि रानी के बारहो मास के दुःख का पूर्णतया वर्णन करता है, इस प्रकार दस वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। ग्यारहवें वर्ष राजमती पत्र देकर पंडित को उड़ीसा राजा के पास भेजती है। पांडे को रास्ते में सात मास लगते हैं। उड़ीसा पहुँच कर वह राजा को पत्र देता है और उसके कहने पर बीसलदेव घर चलने पर उद्यत होता है तथा उड़ीसा के राजा से बिदा माँगता है। देवराज (उड़ीसा नृपति) ने बीसलदेव को बहुत धन दिया। चलते समय बीसलदेव देवराज की रानी से मिलने जाता है। रानी कहती है कि कुछ दिन और ठहर जाओ तेरा विवाह दो स्त्रियों से करा दूँगी। पर वह राजी नहीं होता और कहता है कि "मेरे ६० रानियाँ हैं मैं विवाह नहीं करूँगा।" बीसलदेव वहाँ से चलता है और मार्ग से एक आदमी को अजमेर भेज देता है कि वह वहाँ जाकर पहले से ही उसके आने की खबर कर दे—राजा का भतीजा, राजमती आदि यह सुन कर प्रसन्न होते हैं और राजा के आने की प्रतीक्षा करते हैं। बीसलदेव घर आता है और सब उससे मिल कर प्रसन्न होते हैं।

चतुर्थ खंड—

नरपति नाल्ह हनुमान की वंदना करके धार नगरी से भोज का आना वर्णन करता है। बीसलदेव के आने का समाचार सुनकर उसका भतीजा उससे मिलने आता है। राजा दरबार करके अपने भतीजे को युवराज के पद पर स्थापित करके चित्तौड़ में रहने को उसे स्थान देता है और पुरोहित को बुला कर धार नगरी भेजता है कि जाकर भोज को ले आवे। पुरोहित वहाँ जाता है और समाचार भोज से कहता है। राजा भोज बीसलदेव के यहाँ आता है। दोनों राजा मिलकर प्रसन्न

होते हैं। अजमेर में आनंद उत्सव मनाया जाता है। राजा भोज तो कुछ दिन रह कर लौटते समय राजमती को साथ ले जाता है। तीन महीने के बाद बीसलदेव धार जाता है और राजमती को लेकर वापस आता है और आनंद से राज्य करता है। तब नरपति नाल्ह यह आशीर्वाद देकर—कि जब तक पृथ्वी पर सूर्य उगे जब तक गंगा में जल रहे, जब तक पृथ्वी पर जगन्नाथ रहें तब तक राजा तुम अजमेर पर राज्य करते रहो, ग्रंथ समाप्त करता है।

ऐतिहासिक तत्त्व

ग्रंथ के अध्ययन से निम्नलिखित ऐतिहासिक बातों का पता चलता है।

(१) बीसलदेव का विवाह धार के राजा परमार वंशीय भोज के यहाँ हुआ था। इनकी पुत्री का नाम राजमती था और उसकी माता का नाम भानुमती था।

(२) बीसलदेव तीर्थ यात्रा के प्रसंग में उड़ीसा गया और वहाँ पर विजय करके बहुत सा धन लाया।

(३) बीसलदेव का बड़ा भाई उस समय जीवित नहीं था जब वह उड़ीसा गया केवल उसकी भावज वर्तमान थी। बीसलदेव की बहन का नाम अंकन कुँवरि था।

(४) बीसलदेव उड़ीसा जाने के पूर्व भी एक बार सात वर्ष के लिये बाहर गया था।

(५) उड़ीसा जाते समय उसने अपने भतीजे को अपना स्थानापन्न बनाया था।

(६) बीसलदेव की अवस्था उड़ीसा जाते समय २२ वर्ष की थी।

(७) राजमती की अवस्था व्याह के समय १२ वर्ष की थी।

(८) वीसलदेव को घर से अजमेर लौटते समय 'आना सागर' नामक सागर मिला था।

(९) वीसलदेव के अन्य सर्दारों में एक मुसलमान भी था।

(१०) वीसलदेव के उड़ीसा जाते समय उसे अपने पिता का श्राद्ध करना पड़ा था अतः वह उस समय पितृहीन था।

उपरोक्त ऐतिहासिक तत्व की ऐतिहासिक परीक्षा लेने के पूर्व यह कह देना उचित है कि हमें यह न भूलना चाहिये कि यह ग्रंथ किसी इतिहासज्ञ द्वारा नहीं प्रणीत हुआ था। एक भाट ने लोक मनोरंजनार्थ कुछ तुकबंदियाँ की थीं और वह उन्हें जाकर लोगों को सुनाता फिरता था। पीछे कई शताब्दियों तक यह मौखिक रूप में लोगों में प्रचलित था और तदुपरांत किसी ने उसे लिपिबद्ध किया। प्रायः तीन शताब्दी से अधिक जो ग्रंथ मौखिक रहा हो उसमें कितने परिवर्तन हो जाते हैं तथा उनका रूप कितना मूल से विरूप हो जाता है। यह सहज ही में अनुमान किया जा सकता है। हिंदी साहित्य में 'आल्हा' तथा अमीर खुसरु की 'पहेलियाँ' इनके जीते जागते उदाहरण हैं।

इन बातों के होते हुए भी हमें इन तत्वों पर एक बार ऐतिहासिक दृष्टि से प्रकाश डालना ही पड़ेगा और अन्य कठिनाइयों तथा दोषों के होते हुए भी इनमें ऐतिहासिक सत्य जो उनमें बीजरूप से अंतर्हित हैं, कुछ न कुछ अवश्य हस्तगत होगा।

(१) कवि 'नरपति नाल्ह' के अनुसार वीसलदेव का विवाह भोज की कन्या राजमती से हुआ था। राजा भोज परमार वंशीय थे और कवि के कथनानुसार वे वीसलदेव के यहाँ आये थे। अतः वे वीसलदेव के समकालीन थे ऐसा मानना पड़ेगा। इतिहास देखने पर यह बात असत्य जान पड़ती है।

परमारवंशीय भोज बड़ा प्रतापी था। इसके शिलालेख विक्रम संवत १०७६ और १०७९ के प्राप्त हैं। उसके उत्तराधिकारी जयसिंह (प्रथम) का दानपत्र वि० सं० १११२ का मिलता है। अतः ऐतिहासिकों ने भोज का समय वि० सं० १०७६ से १११० तक माना है। वीसलदेव रासो का नायक वि० सं० १२१२ में वर्तमान था। अतः भोज से यदि हम तात्पर्य परमारवंशीय प्रसिद्ध भोज से लें तो बीसलदेव और भोज का समकालीन होना सर्वथा असंभव है। हमारा अनुमान है कि कवि 'नरपति' का तात्पर्य किसी अन्य 'भोज' से है। इस अनुमान की पुष्टि में दो बातें होती है।

(१) पृथ्वीराज विजय नामक काव्य में लिखा है कि मालवा के राजा उदयादित्य ने विग्रहराज से उन्नति पाई और उसके दिए हुए घोड़ों से गुजरात के राजा कर्ण को जीता। इससे यही कहा जा सकता है कि उदयादित्य ने चौहानों से मेल कर अपने वंशपरंपरा के शत्रु गुजरात के सोलंकी राजा कर्ण को परास्त किया। ऐसी दशा में यह माननीय है कि मैत्री करने के लिये भोज वंशीय किसी नृप ने वीसलदेव को अपनी लड़की व्याह दी हो।

(२) हम्मीर काव्य के कवि ने भोज द्वितीय के लिये 'भोजो भोज इवापरः' लिखा है। अतः यह भी अनुमान किया जा सकता है कि भोजवंशीय किसी अन्य के लिये कवि 'नाल्ह' ने भोज शब्द का व्यवहार किया है।

सारांश यह कि हम यह कह सकते हैं कि वीसलदेव ने परमार वंशीय किसी राजा की लड़की से विवाह किया जिसे कवि नरपति ने भोज लिखा हो*। 'राजमती' वास्तव में परमार वंशीय किसी राजा की

---

* 'पृथ्वीराज रासो' में लिखा है कि बीसलदेव के एक पमारवंशीय रानी थी। देखो—भूमिका H. Search Report. 1900.

पुत्री थी इसका जानना कठिन है। 'वीसलदेव रासो' के अतिरिक्त अन्य कहीं भी उसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। बीजोलियाँ के शिला लेख में विग्रहराज तीसरे को 'राजदेवी' का पति कहा है—

ततोपि वीसल नृपः श्रीराजदेवी प्रियः—
पृथ्वीराज नृपोथ तत्तनुभवो रासल्लदेवी विभुः—

संभव है कि इस 'राजदेवी' के कारण भ्रम से कवि ने वीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) की रानी का नाम 'राजमती' कर दिया हो। पर ये नाम वास्तविक नहीं माने जा सकते, ये कल्पित हैं।

(२) 'नरपति नाल्ह' के कथनानुसार राजमती के कहने पर बीसलदेव उड़ीसा चला गया था और वहाँ बारह वर्ष तक रह कर लौटा था। इस बात की पुष्टि में केवल एक यही ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है कि बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ने 'तीर्थ यात्रा के प्रसंग में विंध्याचल से लेकर हिमालय तक के देशों को विजय किया था'*। अतः यह निश्चय है कि वीसलदेव रासो का नायक तीर्थ यात्रा करने उड़ीसा गया था और वह वहाँ के राजा को विजय करके और असंख्य धन लेकर लौटा था।

राजमती के कहने पर बीसलदेव उड़ीसा गया या अन्य किसी कारण से गया इसके लिये कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

यहाँ पर एक बात सोचने की यह है कि 'नाल्ह' के कथनानुसार बीसलदेव बारह वर्ष तक जगन्नाथ की पूजा करता रहा। पर वास्तव में क्या यह ठीक है? विचार करने पर यही मानना पड़ेगा कि कवि ने अपनी अनभिज्ञता के कारण वीसलदेव की अनुपस्थिति (१२ वर्ष)

* देखो 'भारत के प्राचीन राजवंश' पृ० २४४.

का कारण जगन्नाथ का पूजन दिया है। पर जान पड़ता है कि बीसल-देव को पूर्व देश के राजाओं को विजय करने में इतने दिन लगे थे।

नरपति नाल्ह ने 'रासो' संवत् १२१२ में निर्माण किया। यदि उसी वर्ष या उसके एक वर्ष पूर्व बीसलदेव उड़ीसा से लौटा था, तो यही मानना पड़ेगा कि वह संवत् १२०० में या ११९९ में घर से निकला था और उसका विवाह राजमती से संवत् ११९७ या ११९९ में हुआ होगा; क्योंकि विवाह के बाद ही वह बाहर गया था।

बीसलदेव के पिता अर्णोराज के शिलालेख संवत् ११९६ के मिलते हैं और उसका संवत् १२०७ तक जीवित होना माना जाता है*। अतः यदि हम बीसलदेव का प्रवास १२ वर्ष का मानें तो जिस समय वह उड़ीसा गया, उस समय उसका पिता वर्तमान था। पर बीसलदेव रासो से यह बात प्रतीत नहीं होती कि उस समय उसका पिता जीवित था। अब यदि यह कहा जाय कि बीसलदेव उस समय उड़ीसा गया, जब उसका पिता मर चुका था,† तो यही मानना पड़ेगा कि वह १२०७ या १२०८ में गया होगा। अतः उसके प्रवास के १२ वर्ष नहीं माने जा सकते। संभव है कि कवि ने यों ही १२ वर्ष लिखा हो। (जैसे राम के प्रवास की अवधि १४ वर्ष थी।)

(३) बीसलदेव का बड़ा भाई जगदेव था। उसने अपने पिता को मारकर उससे गद्दी छीन ली थी। इसकी और इसके पिता अर्णो-राज की मृत्यु संवत् १२०७ और १२१० के बीच में किसी समय

---

* देखो ना० प्र० पत्रिका; भाग १. अंक ४. पृ० ३९६.

† उड़ीसा जाने के पूर्व बीसलदेव अपने पिता का श्राद्ध और पिंड-दान करता है। देखो बीसलदेव रासो, पृ० ५२.

हुई।* बीसलदेव रासो के अनुसार उसके उड़ीसा जाते समय उसे उसकी भावज ने समझाया था। नरपति नाल्ह ने जगदेव या बीसलदेव के बड़े भाई का कहीं उल्लेख नहीं किया है। इससे यह अनुमान होता है कि वह उस समय वर्तमान नहीं था : इसकी पुष्टि एक और बात से भी होती है। वीसलदेव को बाहर जाते समय अपने राज्य का अधिकार अपने भतीजे को देना पड़ा और उसने यह सर्व सम्मति से किया था†। अतः यह निश्चय है कि उसका बड़ा भाई जगदेव उस समय नहीं था। चाहे उसकी उस समय मृत्यु हो चुकी हो या वह पितृ हत्या‡ करने के कारण देश बाहर कर दिया गया हो। ऐसा प्रायः होता भी है। मेवाड़ के महाराणा कुंभकर्ण को मारकार उसका बड़ा लड़का उदयसिंह मेवाड़ का राजा बना; परंतु सरदारों ने उसकी अधीनता न स्वीकार कर उसके छोटे भाई रायमल को राजा बनाया और उदयसिंह को राज्य के बाहर निकाल दिया था। संभव है कि उसके रहने पर भी कवि ने उनकी चर्चा न करनी चाही हो। बीजोल्या के वि० सं० १२२६

---

* देखो ना० प्र० पत्रिका—भाग १. अंक ४. पृ० ३६६.

† देखो वी० दे० रासो पृ० ५६। 'सब मिलि मंत्र तिणि ठाई।

‡ बी० रासो में एक स्थान पर राजमती कहती है—

मइ काँइ नवि बोलियो। देवर मनावई अरी वड़ो जेठ॥ पृ० ५४.

संभव है कि यहाँ कवि का तात्पर्य वीसलदेव के छोटे भाई सोमेश्वर और बड़े भाई जगद्देव से हो। ऐसी दशा में यही मानना पड़ेगा कि उसका बड़ा भाई वर्तमान था, पर वह गद्दी से उतार दिया गया था। उसके भाई के विषय में एक स्थान पर और लिखा है कि वीसलदेव के लौटने पर वह अपने भाई भतीजे से मिलता है। (भाई भतीजा राव का। मोल्या महाजन वीसलराव ॥ पृ० ६६.) संभवतः यह उसके छोटे भाई के विषय में है।

के शिलालेख में तथा पृथ्वीराज विजय में भी इसका कोई उल्लेख नहीं है।* साधारणतः राजपुताने के कविगण ऐसे अन्यायी राजाओं का उल्लेख नहीं करते थे।

केवल नरपति नाल्ह के कथन से यह पता चलता है कि उसकी बहन का नाम अकन कुँवर था†। इसके विषय में और कहीं कुछ उल्लेख नहीं है।

(४) उड़ीसा जाते समय बीसलदेव को उसकी भावज समझाती है और कहती है—'तुम सात बरस पहले भी बाहर रहे इस प्रकार जन्म भर बाहर रहते हो'‡ इत्यादि। इससे यह ज्ञात होता है कि बीसलदेव उड़ीसा जाने के पूर्व भी सात वर्ष के लिये बाहर युद्धार्थ गया था और वह प्रायः अपना अधिक समय बाहर युद्धों में व्यतीत करता था।

बीसलदेव का राजत्व काल सं० १२१०–१२२० तक माना जाता है। उसने इन्हीं दस वर्षों में विंध्य से लेकर हिमालय तक की भूमि विजय की हो और आर्यावर्त को मुसलमानों से रहित किया हो, यह माननीय नहीं है। इस भारी काम के लिये उसे कम से कम बीस वर्ष लगे रहे होंगे। यह असत्य तथा असंभव नहीं कि वह उड़ीसा जाने के पूर्व भी एक बार सात वर्ष तक युद्धार्थ बाहर रहा हो। अपनी वीरता

---

* परंतु हम्मीर महाकाव्य और प्रबंधकोष की हस्तलिखित पुस्तकों के अंत में दी हुई चौहानों की वंशावली में,उसका नाम जगद्देव मिलता है। (ना० प्र० पत्रिका, भाग १. (नवीन संस्करण) अंक ४. पृ० ३६६.)

† झूरइ राइ—बहनड़ी अंकन कुँआर। पृ० ५७.

‡ सात बरस पेहलो रह्यो।

× × ×

लाहो लेता जनम गो। पृ० ४४.

और युद्ध-कौशल ही के कारण वह अपने भाई का उत्तराधिकारी बनाया गया था।

(५) बीसलदेव ने उड़ीसा जाते समय तथा राजमती को लिवाने धार जाते समय अपने भतीजे को राज सौंपा था*।

इतिहास से इस बात का प्रमाण मिलता है कि बीसलदेव का उत्तराधिकारी उसका भतीजा जगद्देव का पुत्र (पृथ्वीभट) हुआ। इस पृथ्वीभट ने बीसलदेव के पुत्र अमरगांगेय से राज छीना था। पृथ्वीभट का पहला शिलालेख वि० सं० १२२४ का हाँसी में मिला है।†

मेवाड़ राज्य के जहाजपुर जिले के धौड़ गाँव के पास के रूठी राणी के मंदिर के स्तंभ पर वि० सं० १२२५ ज्येष्ठ बदी १३ का पृथ्वीदेव (पृथ्वीभट) का एक लेख खुदा है। उसमें उसे 'रण खेत में अपने भुजबल से साकंभरी के राजा को जीतने वाला लिखा है'‡।

पृथ्वीराज विजय में लिखा है—'पृथ्वीराज के द्वारा सूर्यवंश (चौहानवंश) की उन्नति को देखते हुए यमराज ने इस (विग्रहराज के पुत्र) अमरगांगेय को हर लिया +।' इससे पता चलता है कि बीसलदेव का पुत्र अमरगांगेय अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहा। उसके पश्चात् (चाहे उसे मारकर) पृथ्वीभट, जो बीसलदेव का भतीजा था, संवत् १२२४ में उसका उत्तराधिकारी हुआ।

यहाँ चिंतनीय बात यह है कि बीसलदेव ने उड़ीसा तथा वहाँ से लौट कर घर जाते समय भी अपने भतीजे को राज सौंपा था। अतः

---

* देखो बीसलदेव रासो, पृ० ५६.

† देखो Indian Antiquary. Vol. XIV. p. 218.

‡ देखो ना० प्र० पत्रिका भाग १, अंक ४, पृ० ३६७.

+ सुतोऽप्यमरगांगेयो निन्येऽस्य रविसूनुना।
उन्नति रविवंशस्य पृथ्वीराजेन पश्यता॥ सर्ग ८, ५४.

यही मानना पड़ेगा कि दोनों अवसरों पर उसको पुत्र नहीं था। उड़ीसा जाने का समय यदि हम विक्रम संवत् १२०७-८ ही मानें। तो उस समय उसके पुत्र अमरगांगेय का जन्म नहीं हुआ था, यह मानना पड़ेगा। पर यदि हम उड़ीसा प्रवास के बाद वीसलदेव का लौटना संवत् १२१२ ही मानें, तो उस समय भी उसके पुत्र का होना नहीं मान सकते। संभव है कि उसके पुत्र का जन्म उसके पश्चात् हुआ हो। ऐसा हो भी सकता है; क्योंकि वीसलदेव के पश्चात् उसके पुत्र का कोई शिलालेख नहीं मिलता। इससे यह अनुमान होता है कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र की मृत्यु अल्प काल ही में हुई होगी। वीसलदेव तथा उसके पुत्र दोनों की मृत्यु संवत् १२२१ और १२२४ के बीच किसी समय हुई, यह निश्चित है*। अब यदि अमर-गांगेय की अवस्था मृत्यु के समय दस या बारह वर्ष मानी जाय, तो उसका जन्म १२१२ के बाद ही होगा! अतएव बीसलदेव रासो के निर्माण काल के समय बीसलदेव के पुत्र का जन्म नहीं हुआ था; इसी लिये उसे अपने भतीजे को राज्य भार सौंपना पड़ा था।

बीसलदेव रासो में नरपति नाल्ह ने लिखा है—

कोक भतीजौ सूँपजए राज।

इससे कुछ लोगों ने यह मान लिया है कि उसके भतीजे का नाम कोक या कोकि था। वास्तव में यह बात प्रतीत नहीं होती कि कवि का तात्पर्य किसी नाम विशेष से है। 'कोकि' का साधारण अर्थ बुला कर

* देखो ना० प्र० पत्रिका भाग १, अंक ४, पृ० ३६९.

होगा। 'कोकना' का अर्थ कोलाहल करना या पुकारना होगा। कवि ने कई स्थानों पर इस शब्द का प्रयोग किया है; यथा—

(१) अंतेवर सहू कोकियो।
(२) कोकि भतीजौ सौंप्यो राज।
(३) कोकै पांड्यौ अरि परधान।

(६) बीसलदेव के उड़ीसा चले जाने पर जब राजमती पाँडे को उसके पास पत्र लेकर भेजती है, तब वह कहती है—"पाँडे मेरे प्रिय की बाइस की अवस्था है, इत्यादि।"*

राजमती ने वीसलदेव के कई वर्ष उड़ीसा में रहने पर पांडे को भेजा था। यदि हम वीसलदेव का उड़ीसा जाना संवत् १२०७-८ में मानें, जैसा ऊपर मानना पड़ा है और उसका वापस आना संवत् १२११-१२ ही माने तो यह मानना पड़ेगा कि पांडे संवत् १२१० में उड़ीसा गया होगा। उसे उड़ीसा पहुँचने में सात मास लगे थे†। यदि इतना ही समय वीसलदेव को उड़ीसा से आने में लगा मानें तो उसके अजमेर पहुँचने और पांडे के वहाँ जाने के समय में लगभग चार मास का अंतर होगा। वीसलदेव के उड़ीसा से लौटने पर राजमती धार गई; वीसलदेव धार गया और वापस आया। इसके लिये भी यदि ४, ५ मास रखें तो सब मिला १६, २० मास होंगे। यदि हम यह भी मान लें कि इन सब बातों के होने के पश्चात् कवि ने उसी वर्ष (संभवतः वीसलदेव के धार से लौटने पर) रासो रच कर गाया, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि संवत् १२१२ के जेठ के १६, २० महीने पूर्व पाँडे उड़ीसा गया होगा। अतः उसका जाना १२१०-११ में हुआ होगा। उस समय यदि वीसलदेव की अवस्था २२ वर्ष मानें तो उसकी मृत्यु संवत् १२२१-१२२४ में ३२-३६ वर्ष की अवस्था में हुई होगी। यदि ऐसा हुआ तो उसका जन्म संवत् ११८६ के लगभग हुआ होगा। इस अवस्था में यह मानना पड़ेगा कि उसने अपने पिता के जीवन

---

* पंडया म्हाँ को प्रिय छुइ इण तो सहिनांण।
बरस बावीस कौ बाली-वेस।
दन्त कचाख्या, सिर किलकिला केस॥ पृ० ७७.

† सतमइ मास पहूंतउ हो जाई। पृ० ७६.

काल (संवत् १२०७-८) में ही युद्धादि में संमिलित होना आरंभ कर दिया होगा और वह राजा होने के समय २२ वर्ष के लगभग रहा होगा।

यद्यपि यह अवस्था ठीक प्रमाणिक नहीं मानी जा सकती, फिर भी कवि नरपति नाल्ह के कथन में सत्य कुछ न कुछ है। वीसलदेव अधिक अवस्था को प्राप्त होकर नहीं मरा, क्योंकि उसका पुत्र उसकी मृत्यु के समय अल्प अवस्था का था, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। यदि वीसलदेव की अवस्था उसकी मृत्यु के समय ३६ मानें, तो उसके पुत्र का जन्म उसकी २४ वर्ष की अवस्था में हुआ होगा और उसके पुत्र का जन्म उसके उड़ीसा से लौटने के पश्चात् मानना पड़ेगा। वीसलदेव के अन्य किसी पुत्र का उल्लेख भी नहीं मिलता। केवल एक ही पुत्र अमरगांगेय था। ऐसी दशा में यही मानना पड़ेगा कि यह उसका प्रथम पुत्र था और वीसलदेव की अल्प अवस्था में मृत्यु होने के कारण तथा उसके पुत्र के अल्प अवस्था में होने के कारण उसके भतीजे ने उससे राज्य छीन लिया।

(७) वीसलदेव उड़ीसा जाने के पूर्व राजमती से बातचीत करते समय कहता है—तू बारह वर्ष की गोरी (स्त्री) है* इत्यादि। यदि हम कवि प्रथा के अनुसार नाल्ह का 'बारह बरस की गोरड़ी, लिखना किसी युवती स्त्री के लिये मानें, तो यह भी ठीक नहीं होगा, क्योंकि स्त्रियों की युवावस्था का समय १५, १६ वर्ष मानना युक्त है। राजमती का अल्प अवस्था में विवाह होना हो सकता है, क्योंकि हिंदुओं में उस

---

* जननी गोरी तू जेसलमेर।
परणी आवी गढ अजमेर॥
बारह बरस की गोरडी॥ पृ० २४.

समय अधिकतर लोग 'अष्ट वर्षा भवेत् गौरी दश वर्षा च रोहिणी' प
अंध विश्वास करते थे।

(८) बीसलदेव जब राजमती को लेकर धार से लौटा, तब उ
रास्ते में आनासागर मिला†। आनासागर के विषय में बाबू श्यामसुंद
दासजी का मत है कि वह अनापर्णा देवी के नाम पर बना था§। अन
लोगों का मत है कि यह सागर अर्णोराज का बनवाया हुआ था×
बाबू साहब बीसलदेव में आए हुए आनासागर और अर्णोराज द्वार
निर्मित आनासागर में भेद करते हैं। यह बात चिंतनीय है।

जाँच करने पर यह बात मालूम होती है कि 'आनासागर' केवल
एक ही है और वह अजमेर के निकट कुछ दूरी पर है। यह बहुत सुंद
सागर है। वास्तव में यह प्राकृतिक झील ही जान पड़ता है जिसके
एक तरफ कृत्रिम बाँध बना हुआ है, जिसके कारण उसमें पानी एकत्र
हो जाता है। संभव है कि इस बाँध का निर्माण अर्णोराज ने कराया
हो। यह बात प्रचलित किंवदंती से भी पुष्ट होती है।

नरपति नाल्ह के समय में अर्णोराज (बीसलदेव के पिता) का
बनवाया हुआ यह सागर नवीन रहा होगा, उसकी शोभा उस समय
बहुत ही सुंदर रही होगी। जान पड़ता है कि कवि ने अपने समय के
नवीन निर्मित, सागर की अतुलनीय शोभा का तथा बीसलदेव का
वर्णन करते समय उसके पिता की कीर्ति का स्मरण दिलाने के लिये ही
इसका उल्लेख किया है। सारांश यह कि नाल्ह द्वारा बीसलदेव रासो
में उल्लिखित आनासागर वही आनासागर है, जो उसके पिता
अर्णोराज ने बनवाया था।

---

† दीठउ आनासागर समंद तणी बदार ॥ पृ० २७.

§ देखो ना० प्र० पत्रिका, सन् १९०१ (भाग ५) पृ० १४१.

× देखो 'भारत के प्राचीन राजवंश' पृ० २४०.

(६) नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो में बीसलदेव के सरदारों में एक मुसलमान का उल्लेख किया है* । यह तो ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध है कि बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ने मुसलमानों से युद्ध किया था † । अतः उस समय में नरपति नाल्ह का उसके सरदारों में किसी मुसलमान के होने का उल्लेख अनुचित नहीं है । उसने बीसलदेव रासो में बहुत से फारसी, अर्बी शब्दों का व्यवहार किया है । उन शब्दों में अधिकतर शब्द ऐसे हैं जो राजकीय तथा सैनिक बोलचाल के हैं । यवनों की संगति से ऐसे शब्दों का प्रयोग हिंदू राजाओं के यहाँ भी होने लगा था । उन शब्दों पर विशेष रूप से बीसलदेव रासो की भाषा पर विचार करते समय लिखा जायगा ।

(१०) बीसलदेव को उड़ीसा जाने के पूर्व अपने पिता का श्राद्ध करना पड़ा था‡ । इससे पता चलता है कि उसका पिता उसके उड़ीसा जाने के पूर्व मर चुका था । उसके विवाह (राजमती से) के समय भी जान पड़ता है कि उसका पिता जीवित नहीं था, क्योंकि नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो में इसका कोई जिक्र नहीं किया है । पर उसकी माता जीवित थी+ ।

---

* चढ़ि चाल्यो है मीर कबीर । पृ० १७.

† देखो 'भारत के प्राचीन राजवंश' पृ० २४४-४५.

‡ पीतरपंड भरावइ छइ राई ।

× × ×

सराध सराव्यो बीसलराव ।

+ माई तेड़ावी राव की ।

सब मिलि मंत्र कियो तिणि ठाई ।

× × ×

माता भूरइ राव की ।

सारांश

ऊपर के सारे कथन का सारांश यह है कि बीसलदेव रासो क नायक बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) ही था और उसने धार नृ भोजवंशीय किसी प्रतापी राजा की कन्या से विवाह किया था। इसके पश्चात् वह तीर्थ यात्रा के प्रारंभ में उड़ीसा गया और उसने वहाँ के राजाओं को विजय किया। उड़ीसा जाने के पूर्व वह राजा हो चुका था। अपनी अनुपस्थिति में उसने अपने भतीजे को राजा बनाया था। संवत् १२१२ तक इसके कोई पुत्र नहीं हुआ था। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उसकी माता जीवित थी। उसने स्वयं मुसलमानों से युद्ध किया था। उसके यहाँ मुसलमान सरदार नौकर थे। उसके समय में बहुत से मुसलमानी शब्द राजकीय बोलचाल में आ गए थे। उसका भाई जगद्देव पितृ हत्या करके राज्याधिकारी होने पर गद्दी पर से उतार दिया गया था।

भाषा

बीसलदेव रासो की भाषा हिंदी भाषा का प्राचीनतम उदाहरण है। यद्यपि इस ग्रंथ के कई शताब्दियों तक मौखिक रहने के कारण इसका रूप कुछ बदल गया है, फिर भी इसके अंतस्थल में प्राचीनता का ढाँचा अब भी वर्तमान है। इस विषय पर भाषा विज्ञान की दृष्टि से विवेचन करने के पूर्व पहले इस ग्रंथ की भाषा से उस भाषा का संक्षिप्त व्याकरण दे देना उचित जान पड़ता है।

संक्षिप्त व्याकरण

(१) कारक

बीसलदेव रासो में कारक दो प्रकार से व्यक्त होते हैं। कुछ में तो विभक्तियों का प्रयोग हुआ है, कुछ में कारक-चिह्न लगे हैं। इस प्रकार इसकी भाषा में कारकों की संयोगात्मक और वियोगात्मक दोनों अवस्थाएँ मिलती हैं।

(क) संयोगात्मक अवस्था ।

	एक०	बहु०
प्रथमा०		भ्रमरां, बानरां, ऊटां, फूलाँ, रतनालियाँ, दिहाँ, आखडियाँ, कविताउँ, दिवसनई।
द्विती०	एकाँ, सराँ, छुराँ, परभोमई, कुवँरहइ।	
तृतीया०	(करण) एकइँ, इन्द्रानी [इन्द्रेण-एण- आधुनिक 'ने'] (उपकरण) नयणे, वाणाँ, कुसले	
चतुर्थी०	परणावाँ, धीहहे, मोहइ (मह्यि) मोहि देवहइ, नगराजहइ	
पंचमी०	पुत्रीहे, देवहइ	
षष्ठी०	कुलह, वनह, घरह, मनह, पाटणह, रामा, जणह, सनेहा, रांजनी	रानह, वेदाँ, उलिगणाँ, खोपराँ बालहो फूलाँ, दीहाँ, साथलाँ, परदेसाँ काश्मीराँ, नागफणाँ
सप्तमी०	मनि, सिरह, वघेरइ रावलइ, उरहु, आसोजाँ हियडइ, पत्तरमइ, मथुराँ, अजमेराँ, खेलाँ, उलगइं,	कमलाँ, संदेसाहि

अवासाँ, सवाराँ,
प्रधानपणइ, देसां
आगणाँ

संबोधन० पांड्या, एकादन्तो,
सखी, कंत, वीर

(ख) वियोगात्मक अवस्था ।

	एक०	बहु०
कर्ता०	❀	❀
कर्म०	को, थे	
करण०	नी, नइ *	
उपक०	सौं, सूं	
सम्प्र०	को, लियाँ	
अपा०	सुं सू, सौं, सू, ते, थी, सौं, सो, हइ (भ्यस्-सइ-से)	
संबंध०	क, का, कइ, के, कै, की, को, कौ, तणा तणी, तणइ, तणे, तणो, रा, री	
अधि०	माँ, महँ माँहि, माँह, मँझारि, तर, माही	

* १. इन्द्रनी उपायो आप हइ । पृ० २४.
२. राणी नइ दियो फोढि टका चलि हार । पृ० ८८.

(२) क्रियाएँ।

वर्तमान काल

वर्तमानकाल दो प्रकार से व्यक्त हुए हैं। एक तो खड़ी बोली की भाँति 'है' का रुपांतर 'छइ' वा 'हइ' मूल क्रिया में लगाकर दूसरा पूर्वी हिंदी की भाँति मूल क्रिया में परिवर्तन करके।

(क) सामान्य वर्तमान।

(१)

	एक०	बहु०
प्रथम०	करूँ हूँ, लाँगू हों, तिजूं हूँ, विसद्धो हूँ, आलबूं हुं, जाँणू हूँ, उठूं छूं, जाऊँ हूँ, जागूँ हूँ, फडाऊँ हूँ	
मध्यम०	*	* *
अन्य०	दूषइ छइ, बरसइ छइ, वसइ ही, बषाणइ छइ; समदइ छइ; लागइ छइ, बोलावइ छइ, पूछै छइ, कहइ छइ, परिपूजइ छइ, लागइ छइ, सूकइ छइ, भरावइ छइ, छोडइ छइ, वईठी छइ, फरकइ छइ, छंडइ छइ; वरसइ छइ,	

(२)

	एक०	बहु०
प्रथम०	विनमूँ, कोहारूँ, प्रगासउ, कराउँ कहूँ, देउँ; बोलूँ, कथूँ लागूँ, फलूँ, उलंभोउ, अऊँ (आऊँ) लाँउ, लाँगू, लेउँ	
मध्यम०	सुणेस, निगमीस, सराहो	
अन्य०	सिरजइ, जाइ, कहइ, तप्पई, गाई, कहई, हंसई, लहइ, जाइ, प्रापिजइ, पइसइ, होइ, प्रतीपे, भोगवइ वइसतो, मिलइ, वसइ, बोलइ, गिणे, बोलावइ, उगहइ, वाजइ, वावे, फिरइ, वाजइ, फरहरई, पेपीयइ	भमहिँ जाणही

(ख) आज्ञा, विधि।

	एक०	बहु०
उत्तम०	बोलज्युँ	
मध्य०	आणज्यो, करो, आवज्यो, आचरउ, मोकियऊ, तेडावो, कहि, कीज्यो, पूछइ, कहो, मंगाय, पलाणजइ, सुणी, चालि, पलाँण, दीठ, रहि, लेहि, सिखाव, देहि, चालो,	

एक० बहु०

मध्य० लावो, हारि, संजोइ, धोई,
खींचि, जोवज्यो, जाहि,
राखज्यो, दीजो, निरिवाहज्यो,
सिधाव, साँभलो,

अन्य० पूरज्यो, यछै, आवइ, हुवइ, होइ,
भंमइ, सुणै, माँडइ, वाई,
रहियौ, परिरहइ, बोलिजइ,
हंसोउ, जाई,

भूत काल

(क) सामान्य भूत

एक० (१) बहु०

उत्तम० गायो, जोहारयो, झंखियो,
माँडियो, निरखियो, फरूक्या,

मध्यम० भरीयो, बंधियो, कियो, वंचियो,
विलखीयो, वेदिठा, समरयो,
वीलंबावज्यो,

अन्य० जोयो, दीठो, भराया, पषालज्यो, आवीया
पहूँता, जुहारियो, पखाल्या, उछली
(स्त्री०) नीगस्या, उधरयो, दीन्हउ,
देख्यो, मोकल्या, मिल्यो, सिरजी
(स्त्री०) वैसज्यो, गयो, आव्या,

	एक०	बहु०
अन्य०	दीठो, किया, दियो, पडी (स्त्री०) वंधीयो, चाली (स्त्री०), परूसज्यो, हुई (स्त्री०), हणी (स्त्री०) पहुँती, जन्मी (स्त्री०), विध्वंसी (स्त्री०) चमकियो, बाँध्यो-इत्यादि—	

(२)

[है, था, थी, या (छइ) लगाकर बना हुआ भूतकाल ।]

	एक०	बहु०
उत्तम०	... ...	
मध्यम०	... ...	
अन्य०	जोयो छै, उठी छै, फेरयो है, हुवउ हो, चाल्यो छइ, मोकलावी छइ, जुहारी छइ, आव्यो छई, ऊभो छै, कह्यो हो, पहुतो छइ, गलीयो छइ, पहुँतो छइ, पलारांयो छइ, छायो है, जिमावइ छइ, वैसाड़ी छइ, दिखाली छइ, पुजाई थी, दीई थी,	

भविष्य काल

	एक०	बहु०
उत्तम०	रइहस्यां, आवस्यां, देसइ, राखस्युं, देऊ, पर्षांलसूं, ठोलसूं, जागसूं, सेवसूं, देसूं, तलांसूं, आलंबू, आणिसूं, तपुहुँ, लाजसूं, आवसूं, रहस्युं, चालस्याँ, सेवूं, पावस्युँ, वुहारूं, वससूं	
मध्य०	... ...	
अन्य०	बरसी, देगा, गीलसइ, देसी, लहैसी, होसी, भोगवी (तव्य-प्रत्य०) करेसतो, आवसी, मीलसी, बोलसी, कहइगो, होसी, भेटस्याँ,	

(३) उच्चारण

(१) अधिक स्थानों में 'न' के स्थान पर 'ण' होता है—यथा—गिणइ, कुमाणस्याँ, मसाण, हंस—वाहिणी, जिण, विणास, आणजे, आणि, गायण, रसायण, धीणु, दाहीणो, कुलहीण, सामणी, ईणी, जाणे, सुणै, दिवाण, पुणि, सामणी, भाण, मिलाण—इत्यादि।

(२) अपभ्रंश की भाँति संज्ञाओं के अंत में 'ड़ा' 'डी' और 'ड' आता है। यथा—

दिहाड़उ, हियड़इ, गोरड़ी, मोचड़ी, मूंदड़ड, बइहनड़ी, आँखड़ी-इत्यादि।

भाषा की प्राचीनता

बीसलदेव रासो की भाषा यद्यपि बहुत कुछ नवीन रूप में हो गई है, तो भी उसकी प्राचीनता एक दम लुप्त नहीं हो गई है। प्रायः कारकों, क्रियाओं और संज्ञाओं के रूप प्राचीन हैं।

कारकों के विषय में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कुछ कारक-चिह्नों का रूप नवीन हो गया है। पर जिस समय की यह पुस्तक है, उस समय कारकों के वियोगात्मक तथा संयोगात्मक दोनों रूप थे। हाँ, इतना अवश्य था कि वियोगात्मक रूप का विकास हो रहा था और संयोगात्मक रूप क्रमशः लुप्त होता जा रहा था।

क्रियाओं में यह बात हम स्पष्ट देख सकते हैं कि कुछ क्रियाओं का रूप प्राचीन संस्कृत तथा प्राकृत की क्रियाओं के रूप से निकला है। कुछ नवीन बनी हैं, जैसे वे क्रियाएँ जिनमें कालभेद खड़ी बोली की भाँति 'है' क्रिया के लगने से होता है। भविष्यकालिक क्रिया का रूप प्राचीन है और वे संस्कृत की भाँति 'स्यति' आदि के रूपांतरों के मेल से बनी हैं।

संज्ञाओं के विषय में इतना कहना आवश्यक है कि कुछ तो संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से आई हैं, कुछ देशज हैं। इनमें से अधिकांश का रूप प्राचीन ही है। यहाँ एक बात याद दिलाना आवश्यक है कि बीसलदेव रासो में कुछ संज्ञाएँ ऐसी आई हैं जो हमारी भाषा की नहीं हैं। जैसे—महल, इनाम, नेजा, बगनी, ताजिनो,

लवाजिवा, ताजी, खुंदकार, खुरासान, पायगाह, किसमत, चाबुक इत्यादि।

ये शब्द जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मुसलमानों के संसर्ग से भाषा में आ गए हैं।

अभी तक हिंदी साहित्य में सब से प्राचीन ग्रंथ पृथ्वीराज रासो माना जाता है; पर वास्तव में यह बात नहीं। निर्माण काल तथा भाषा की दृष्टि से बीसलदेव रासो को पृथ्वीराज रासो से प्राचीन मानना पड़ेगा। पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के विषय में भी अभी विद्वानों को संदेह है। उस की भाषा को देखते हुए तो यह कोई नहीं कह सकता कि वह ग्रंथ बहुत ही हाल में लिखा गया है; पर यह अवश्य कहा जा सकता है कि उसकी भाषा बोलचाल की तत्कालीन स्वाभाविक भाषा नहीं है। उसमें कृत्रिमता तथा साहित्य-पन अधिक है। बीसलदेव रासो के विषय में यह बात नहीं है। इसकी भाषा बोल चाल की भाषा है। हमारा तो अनुमान है कि पश्चिमी हिंदी का प्राचीनतम उदाहरण अभी तक यदि कहीं मिल सकता है, तो इसी ग्रंथ में। इस ग्रंथ की भाषा उस समय की माननी चाहिए, जब हिंदी बोलचाल की भाषा हो चुकी थी पर उसे साहित्य में स्थान नहीं मिला था।

हिंदी भाषा की उत्पत्ति कब हुई, इसका कोई निश्चित समय बतलाना असंभव है। पर साधारणतया यह मानना पड़ेगा कि ईसवी १० वीं शताब्दि के पश्चात् उसका विकास आरंभ हुआ और १२ वीं शताब्दी तक वह साहित्य में प्रवेश पाने लगी। नरपति नाल्ह ने अपने रासो का निर्माण उस समय किया, जब हिंदी का साहित्य में विशेष आदर नहीं था। उस समय भी लोग साहित्य की भाषा संस्कृत,

प्राकृत और अपभ्रंश ही रखते थे। हमारा कवि साधारण भाट था, पर था उत्साही और निर्भीक। उसने प्रचलित भाषा में तत्कालीन शासन के विषय में चार खण्डों का एक काव्य बना डाला। उसके काव्य का प्रचार लोक में बहुत हुआ होगा। इसका कारण उसके काव्य के नायक (तत्कालीन शासक) की सर्वप्रियता और प्रसिद्धि भी थी। बीसलदेव प्रतापी राजा था। जनता उससे बड़ी प्रसन्न रहती थी। उसकी अचल कीर्ति सभी गाते फिरते थे। नरपति नाल्ह ने ऐसी स्थिति में लोक मनोरंजनार्थ अपने रासो की रचना की थी और इसी कारण उसे प्रचलित भाषा का आश्रय लेना पड़ा था।

नरपति नाल्ह की भाषा का ढाँचा पश्चिमी है। हमें तो यह कहने का साहस होता है कि उसकी भाषा आधुनिक खड़ी बोली की नानी या दादी है। इसमें हम खड़ी बोली की प्रायः सभी विशेषताएँ पाते हैं।

(१) खड़ी बोली में क्रिया का काल प्रायः 'है' लगाकर व्यक्त किया जाता है। सो हम देख ही चुके हैं कि नरपति नाल्ह ने वर्तमान तथा भूत कालिक क्रियाओं में 'है' के पूर्व रूप 'छइ' का व्यवहार किया है।

(२) खड़ी बोली में क्रियाओं में लिंग भेद होता है। यह भी हम इस रासो में पाते हैं। यथा—

(क) अकर्म० क्रिया में—

(१) सा धन <u>खलती कसो</u>रज्युं।

(२) जणिक <u>वैठी</u> प्रिय की खोलि।

(३) राजी-कुँवर हरखी फिरई।

(ख) सकर्मक क्रिया में—

(१) चीठी आपी तणी राई।

(२) बचन बोल्या तिणि ठाई।

(३) बाँची उपली आलि।

(४) चीरी रही घन हीयडउ लगाई।

(३) खड़ी बोली में कर्ता (वास्तव में करण) के साथ 'ने' का प्रयोग होता है और सकर्मक भूत क्रिया का लिंग और वचन भी कर्म के अनुसार होता है। नरपति नाल्ह ने अपने रासो में 'ने' का प्रयोग कम किया है। कारण यह जान पड़ता है कि कविता में 'ने' का अधिक प्रयोग खटकता है। पर फिर भी उसने एक आध स्थान पर किया ही है। यथा—

(१) इन्द्रानी उपायो आपहइ। पृ० २४.

(२) राणी लइ दियो कोडि टंकावलि हार। पृ० ८८.

(४) खड़ी बोली के कारक-चिह्न वियोगावस्था में हैं। ऊपर हम देख चुके हैं कि 'नाल्ह' की भाषा में कारक-चिह्न दोनों अवस्थाओं में हैं। उस समय उनका कोई निश्चित रूप नहीं था। प्रायः दोनों प्रकार के रूपों का प्रयोग होता था।

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि खड़ी बोली की सारी विशेषताएँ वीसलदेव रासो की भाषा में वर्तमान हैं। अतः यह मानना पड़ेगा कि उस समय खड़ी बोली का अस्तित्व था और उसकी जन्मभूमि पश्चिम

(मथुरा के पश्चिम राजपूताने तक) में थी। धीरे धीरे इसका प्रचा
बढ़ा और अब वह सारे भारत की व्यावहारिक भाषा हो रही है।

बीसलदेव रासो की भाषा वास्तव में उस समय (संवत् १२१२
की भाषा है, इसकी भी परीक्षा कर लेना आवश्यक है, क्योंकि कु
लोगों का मत है कि यह ग्रंथ भी पृथ्वीराज रासो की भाँति किस
भाट ने इतिहास-काल की तिमिरावस्था में रचा है, अतः यह बहु
पीछे लिखा गया है।

इसके उत्तर में दो बातें कही जा सकती हैं। एक तो यह कि
पृथ्वीराज रासो की भाँति यह कोई वृहद् ग्रंथ नहीं और न इसं
कवि ने अपने या अपने नायक के विषय में बड़ी बड़ी बातें लिखक
अपने आप को प्रसिद्ध करने की इच्छा ही की है। ऐतिहासिक दृष्टि से
तो यह ग्रंथ लिखा ही नहीं गया है।

ऐतिहासिक दृष्टि से जो कुछ थोड़ी बहुत इस ग्रंथ की परीक्षा हो
सकती थी, वह ऊपर हो चुकी है। दूसरे, अब भाषा की दृष्टि से इसकी
थोड़ी परीक्षा कर लेना उचित है। इसकी भाषा के संक्षिप्त व्याकरण में
इसका ढाँचा स्पष्ट हो गया है। ऊपर कहा जा चुका है कि जिस समय
यह ग्रंथ निर्मित हुआ, उस समय साहित्य की भाषा कुछ और थी।
प्रायः देखा जाता है कि साहित्य की भाषा अपने समय की भाषा से
कुछ प्राचीन होती है। काव्य में वही भाषा चल सकती है, जो पहले
से परिमार्जित और प्रयुक्त होते होते मँज गई हो। एकाएक कोई
अच्छा कवि अपने समय की बोलचाल की भाषा में काव्य रचने का
साहस नहीं करता। यदि करे भी तो वह सफल मनोरथ न होगा।
काव्य या गद्य में तत्कालीन भाषा का प्रयोग वही लेखक करते हैं जो

प्राचीन या परम्परागत साहित्यिक-भाषा से अनभिज्ञ रहते हैं और जो अपनी अनभिज्ञता के कारण अपने समय की (यही नहीं वरन् अपनी) भाषा का प्रयोग करने के लिये विवश होते हैं

नरपति नाल्ह न तो कोई बड़ा कवि था, न बहुत पढ़ा लिखा ही था। उसने प्रचलित भाषा में तुकबन्दियाँ की थीं; अतः उसकी भाषा उसी समय की माननी पड़ेगी जब उसने ग्रंथ निर्माण किया था। हिंदी भाषा के कुछ प्राचीन नमूने और मिले हैं जिनसे उस समय की भाषा का अन्दाज हो सकता है।

(१) होहिन्ति एत्थ वंसे पुरिसा एहइय गाख महग्घा।
इअ हाविऊण जेणं पालीस परिग्गहो गहिओ ॥
(संवत् १०६६)

(२) विसामित्त गोत्त उतिम चरित त्तिमल पविवो गाण।
अरघड़ घड़णों ससिजय द्ववड्डो भूवाण ॥
द्ववड्डो पठि परिठिअऊँ खत्तियविज्जय-पालु।
जेणे काइउ रणि विजिणिउ तह सुअ भुवण पालु।
कलचुरि गुजर ससहरह दक्खिण चइ सुख अंड।
चहुरा अहरण विजिणण हरिसराह भवज दंड ॥
संघरि भंगरि रण रहसु गउ हरिसरुअ कि अन्न।
हयइत पठियर सुहड समुहु न कोवु समन्न ॥
जेणें रंजिऊ जग पउरिण वु ग्राम महागठ हेठि।
विजय सीह भुर अठि अह अरियणनियहिंत पेठि ॥
जो चित्तोडहं जुझिअउ जिण ठिली दलु जितु।
सो सुपसंसहि रभह कइ हरि सर आतिय सुत्त ॥

खेदिअ गुजर गौदहइ कीय अधियं भारि।
विजय सीह कित संहलहु पौरिस कह संसार॥
भुंभुक देवह पअ पणधि पअडि अकित्ति सभव्व।
विजय सीह दिढ़ दित्तु करि आरंभिअ सुख सव्व॥

यह लेख एक शिला पर खुदा हुआ है जो, दमोह जिले में मिली थी। इसकी भाषा पृथ्वीराज रासो की भाषा से बहुत कुछ समानता रखती है। क्योंकि यह भी उसकी भाँति बोलचाल की न होकर साहित्यिक है। पर फिर भी उसमें और वीसलदेव रासो की भाषा में कुछ समानता है। उदाहरणार्थ—

(१) सर्वनाम—जेणो, जिण, (येन) सो (सः), और जो (यः)—मिलाइये नरपति नाल्ह के 'जिण' सा (स्त्री०) और श्रो (वह) से।

(२) क्रियाएँ—आरंभिअ, सहंलहु, कह, और कीय (भूत०) मिलाइए वीसलदेव रासो के 'आरंभइ', 'साँभलो', 'कहइ', और 'कियो' से।

(३) विभक्ति—करण के लिये 'एण' (जेणो), अधिकरण के लिये 'हं' और 'इ' (जैसे चिचोड़हं और रणि में) का प्रयोग हुआ है प्रायः ऐसी ही विभक्तियाँ बीसलदेव रासो में प्रयुक्त हुई हैं।

उस शिलालेख की मँजी हुई भाषा को यदि हम 'नरपति' की बोल चाल की भाषा में परिणत करें, तो उसके रूप में बहुत ही कम अंतर पड़ेगा। उदाहरणार्थ हम उक्त शिलालेख की दो पंक्तियों को लेते हैं—

नोट—ये अवतरण ना० प्र० पत्रिका भाग ६ अंक १ (संवत् १६८२) पृ० ७, ५ से लिए गए हैं।

(१) जो चित्तोड़हं जुझिअउ जिण ठिली दलु जित्तु ।

(२) विजय सिंह कित संहलहु, पौरस कह संसारि ।

नरपति की भाषा में उसका रूप संभवतः यह होगा—

[१] जो चितोडाँ (या-चितोडंइ) जुझियो ।

जिण ढीली दल जीतज्यो ॥

× × +

[२] विजय सिंहह कीति साँभलो ।

जह (या जास) पौरिस कहइ संसार ॥

उपर्युक्त कथन का तात्पर्य यह कि यद्यपि १२ वीं शताब्दी की साहित्यिक भाषा और नरपति के बोलचाल की भाषा में पूर्णतया साम्य नहीं, तो भी अंशतः समानता अवश्य है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि नरपति नाल्ह की भाषा १२ वीं शताब्दी की है। यह बात अवश्य है कि नरपति के रासो के बहुत दिनों तक मौखिक रहने के कारण उसकी भाषा में परिवर्तन हो गया है। पर इससे यह नहीं कहा जा सकता यह ग्रंथ जाली है और अपने उल्लिखित काल से बहुत पीछे निर्मित हुआ है।

ग्रंथ की उपयोगिता।

इस ग्रंथ की साहित्यिक उपयोगिता का कारण यह है कि यह साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ है। पर इसका विशेष साहित्यिक मूल्य नहीं है क्योंकि इस दृष्टि से यह ग्रंथ उच्चकोटि का नहीं है। ऐतिहासिक मूल्य भी इस ग्रंथ का उतना अधिक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि न तो यह किसी इतिहास लेखक द्वारा ही प्रणीत हुआ है और न इति-

हास की दृष्टि से ही इसका निर्माण हुआ है। इस ग्रंथ का यदि किस प्रकार अमूल्य उपयोग हो सकता है, तो भाषा विज्ञान की दृष्टि से।

हिंदी साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ होने के अतिरिक्त यह ग्रंथ इ बात का प्रमाण है कि १२ वीं शताब्दी में भारतवर्ष में हिंदी भाषा क भली भाँति प्रचार था और वह सर्व साधारण की भाषा थी। स साधारण की भाषा होने के अतिरिक्त वह साहित्य की भाषा होने का भ प्रयत्न कर रही थी। इस प्रयत्न में भाट और चारण गण उसके विशे सहायक थे।

खड़ी बोली की उत्पत्ति के विषय में अनुसंधान करनेवाले सज्जनं को इस ग्रंथ की भाषा देखते हुए विश्वास हो जायगा कि पश्चिमीय प्रांतों की बोलियों ही से खड़ी बोली की उत्पत्ति हुई है; और यह प्राय उन्हीं स्थानों में उत्पन्न हुई है, जहाँ अपभ्रंश का प्रचार पहले बहुतायत से था। इस ग्रंथ की भाषा को देखते हुए यह बात भी स्पष्ट हो जायगी कि रासो (पृथ्वी०) की भाषा हिंदी भाषा का प्राचीनतम उदाहरण नहीं है। वह बहुत पीछे की है, और वह बहुत कुछ कृत्रिम और विकृत की हुई है। यह सब उसे साहित्यिक साँचे में ढालने की इच्छा रखनेवालों के कारण हुई है, यहाँ विषयांतर में जाने के भय से हम पृथ्वीराज रासो की भाषा पर विशद रूप से अपना विचार प्रकट करना उचित नहीं समझते। पर संक्षेप में यह कह देते हैं कि पृथ्वीराज रासो के लेखक का आदर्श रासो लिखते समय अपभ्रंश और प्राकृत के सुंदर विकट काव्य थे। उसी कारण उसे रासो की भाषा को विरूप करना पड़ा। पीछे के कुछ उसके प्रशंसकों और भक्तों ने भी उस पर बहुत कुछ कृपा की है, जिसके कारण हमें आज उसका विराट, भयानक और विकट रूप देखकर हमें, उसके विषय में अनेक शंकाएँ करने का अवसर मिलता है।

कवि

कवि नरपति नाल्ह कौन था, यह जानने के लिये हमें अन्यत्र कोई सामग्री अभी तक हस्तगत नहीं हुई है। कुछ लोगों का यह अनुमान कि यह कोई राजा था, ठीक नहीं है। उसने स्वयं अपने को स्थान स्थान पर 'व्यास' 'रसायण' आदि लिखा है। इससे प्रकट है कि वह कोई भाट था। 'नरपति' उसका नाम है 'नाल्ह' उसका कौटंबिक नाम है। राजपूताने में अभी तक 'नरपति' 'महीपति' आदि मिलते हैं, जिन्हें अब 'नापा' 'महपा' कहते हैं*। 'नरपति' साधारण भाट था जो इधर उधर तुकबन्दियाँ करके गाता फिरता था। यह कोई राजा नहीं था। कवि, चाहे जो कुछ हो, हमारी प्रशंसा का पात्र है। उसने प्रचलित भाषा में विजयी बीसलदेव का यश गान करके तत्कालीन भाषा को अमर कर दिया, उसी ही की कृपा से हम उस समय की प्राचीन भाषा के अब भी दर्शन कर सकते हैं। इस श्लाघनीय कार्य के लिये उसका नाम हिन्दी साहित्य के पृष्ठों पर सदा स्वर्ण अक्षरों में लिखा रहेगा।

---

* श्रद्धेय गौरीशंकर हीराचंद ओझा जी ने मुझे यह बात अपने एक पत्र द्वारा सूचित की है।

वक्तव्य

इस ग्रंथ के प्रकाशन के लिये मैं नागरीप्रचारिणी सभा और उसके प्रधान मंत्री बाबू श्यामसुन्दर दास जी को धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता। वास्तव में इस ग्रंथ के संपादन में मुझे जो कुछ सफलता हुई है वह मेरे विद्यागुरु श्रद्धेय बाबू श्यामसुन्दर दास जी ही के कारण हुई है। उन्हीं के निरन्तर प्रोत्साहन तथा अमूल्य उपदेशों ने मुझको इसके सम्पादन करने का साहस दिलाया है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में मैंने अभी पैर रखा है। किसी ग्रंथ का सुचारु रूप से संपादन करना मेरे लिये दुष्कर ही नहीं वरन् असंभव है। पर माननीय गुरु की आज्ञा स्वीकार कर मैंने यह प्रथम प्रयास किया है। यह संभव नहीं कि मुझ से अनेक भूलें और त्रुटियाँ न हुई हों। सहृदय पाठक तथा माननीय विद्वज्जन उन्हें सुधारने तथा मुझ पर क्षमा करने की कृपा करेंगे।

उस ग्रंथ में आए हुए नामों की एक अनुक्रमणिका इस के साथ जोड़ दी गई है जिसके बनाने में मेरे मित्र पं० अयोध्यानाथ शर्मा एम० ए० ने मुझे बहुत सहायता दी है, जिसके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। अस्तु—

वसंत पंचमी,
संवत् १९८२
काली-महल, काशी।

सत्यजीवन वर्मा।

बीसलदेव रासो

प्रथम सर्ग

हंस-बाहणि मिग-लोचनि नारि ।
सोस समारइ[1] दिन गिणइ ॥
जिण सिरजइ[2] उलिगण[3] घरनारि ।
जाइ दिहाड़ाउ[4] झूरिताँ[5] ॥ १ ॥
गौरी-नंदन त्रिभुवन-सार ।
नाद वेदाँ[6] थारे[7] उदर भँडार ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ ।
मूषा बाहन तिलक सेंदुर ॥

---

१. शीश सँभालती हुई (बाल सुलझाती हुई)। २. सिरजना-रचना करना। ३. उलिगण (उद्गताः) बाहर गए हुए, मुसाफिर, युद्ध पर गए हुए। ४. दिहाडा=(दिवस) दिन; पुरानी हिंदी में 'ड' या 'डल' प्रत्यय अल्प, कुत्सित, स्वार्थ के अर्थ में आता है। यथा-संदेसडा, मोरडो [संदेश, मोर (मयूर)] ५. झूरना-सूखना-पछताना, विलाप करना। झूरतां=विलाप करती हुई, (विरह में) दुःखित होती हुई। ६. वेदों का। ७. तुम्हारे (तिहारे)।

एक दंतउ मुख झलमलइ[1]।
जाणिक[2] रोहणीउ[3] तप्पई सूर ॥ २ ॥
'नाल्ह' रसायण[4] रस भरि गाई।
तुठी[5] सारदा त्रिभुवन-माई ॥
उलिगणाँ गुण वरणताँ[6]।
कुकठ[7] कुमाणसाँ[8] जिण कहई रास[9]
अस्त्री-चरित-गति को लहइ ?।
एकइँ आखर रस सवइ विणास[10] ॥ ३ ॥
तुठी सारदा त्रिभुवन-माई।
देव विनायक लागू हूँ पाय ॥

---

१. झलमलाना-चमकना। २. जानो-मानों। ३. रोहणी नक्षत्र में ४. रसज्ञ-(कवि)। ५. तुष्ट हुई। ६. वर्णन करते हुए। ७. कुकथ्य अकथ्य। ८. कुमनुष्यों का। ९. रास=गीत। १०. स्त्री चरित्र को कौ जान सकता है; अर्थात् जैसे स्त्री के चरित्र की गति जानना कठिन है उसी प्रकार काव्य का भी मर्म जानना दुष्कर है। एक ही अक्षर (दु अर्थ वाला) सब रस नष्ट कर देता है। यह भाव भवभूति के "स्त्रीण तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः" से मिलता है। 'आखर' के स्थान में 'अखइ' भी पाठ मिलता है। तब उसका अर्थ होगा :—स्त्री के चरित्र को लेकर अर्थात् श्रृंगार रस को लेकर (मैं कविता करता हूँ) यही एक अक्षय (अखइ) है और सब रस (श्रृंगार के अतिरिक्त) विनष्ट हो जाते हैं। विणास=विनाशी, विनाश-शील। पहला पाठ अच्छा जान पड़ता है।

तोहिं लंबोदर बीनमूँ[1] ।
चउसठि जोगिनि का अगिवाँण[2] ॥
चउथ जोहारूँ खोपराँ[3] ।
भूलेउ अक्खर आणजे[4] ठाइँ ॥ ४ ॥
हँस-वाहणि देवी कर धरइ वीण ।
कुकठ कथूँ बोलूँ कुल हीण ॥
तो तूठाँ[5] वर प्रापिजइ ।
भूलउ हो आखर आणि वहोडि[6] ॥
बीसल-दे-रास प्रगासताँ[7] ।
'नाल्ह' कहइ जिणि आवइ हो खोडि[8] ॥ ५ ॥
कसमीराँ पाटणह[9] मँझारि ।
सारदा तुठी ब्रह्म - कुमारि ॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ ।
हियड़इ[10] हरषि गायण कइ भाइ[11] ॥
खेलाँ मेल्ह्या[12] माँडली ।
बइस[13] सभा माँहि मोहेउ[14] छइ राइ ॥ ६ ॥

---

१. विनय करता हूँ । विनऊँ-(अवधी) । २. अग्रगामी । ३. नारियल । ४. आणजे- (आ+नयेत्) लाना । ५. तुष्ट होने पर-(तुष्टन्त्याः) । ६. वहोहि=बाहुड़ना, पुनः स्मरण होना । ७. प्रकाश करते हुए, कहते हुए । ८. कमी-(क्षुद्र-क्षुद्र, छोटा, खोटा, खोर, खोरि-खोडि) । ९. पट्टन के बीच । पट्टन एक नगर । १०. हृदय । ११. गायण कइ भाइ=गान के सदृश, गीत की तरह । १२. एकत्र किया, मिलाया, (मेलना) । १३. बैठ कर । १४. मोहा है ।

सरसति[1] सामणी तूँ जग जीण[2] ।
हँस चढी लटकावै बीण ॥
उरि कमलाँ[3] भमराँ भमइँ ।
कासमीराँ मुख मंडणी[4] माइ ॥
तो तूठाँ वर प्रापिजइ ।
पाप छयासी जोयण[5] जाइ ॥ ७ ॥
सरसति सामणी करउ हउ पसाउ[6] ।
रास प्रगासउँ बीसल-दे-राउ ॥
खेलाँ पइसइ[7] माँडली ।
आखर[8] आखर आणजे जोड़ि ॥
कर जोड़ि 'नरपति' कहइ ।
'नाल्ह' कहइ जिण लावइ खोड़ि ॥ ८ ॥
बारह सै बहोत्तराँ हाँ मँझारि ।
जेठ वदी नवमी बुधवारि ॥
'नाल्ह' रसायण आरंभइ ।
सारदा तुठि ब्रह्म-कुमारि ॥
कासमीराँ———मुख———मण्डणी ।
रास प्रगासौं बीसल - दे - राइ ॥ ९ ॥

---

१. सरस्वती । २. जीवन । ३. हृदय के कमल (माला में) ४. मुख मंडनी-मुख की शोभा बढ़ाने वाली माता । ५. योजन, या, योनि का । ६. प्रसाद । ७. खेल में प्रवेश करती हुई मंडली । ८. अक्षर ।

गायो हो रास सुणै सब कोइ।
साँभल्याँ[1] रास गंगा-फल होइ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ।
रास रसायण सुणै सब कोइ॥१०॥
गावणहार माँडइ[2] (अ)र गाई।
रास कइ (सम) यइ वँसली[3] वाई[4]॥
ताल कई समचइ[5] घूँघरी।
माँहिली[6] माँड़ली छीदा[7] होइ॥
बारली[8] माँडली साँघणा[9]।
रास प्रगास ईणी विधि होइ॥११॥
'नाल्ह' बषाणइ[10] छइ नगरी जू धार।
जिहाँ वसइ राजा भोज पँवार॥
असीय सइहस सजे करि मैमत्ता।
पञ्च त्वोहण[11] जे कइ मिलइ नरिंद॥
कर जोड़े 'नरपति' कहई।
विसुन पुरी जाणे वसइही[12] गोव्यंद॥१२॥

---

१. सुनने से–(संवरना (स्मृ) स्मरण करना, सुनना)। २. मंडन करै–बनावे, स्वर इत्यादि को ठीक करके। ३. वाँसुरी-वंशी। ४. वजे–(वाद्य) ५. साथ। ६. मध्य की। ७. चीण, कम सघन। ८. बाहर की। ९. सघन। १०. बखानता है, कहता है। ११. अक्षौहिणी। १२. बसता है, या बसाई है।

धार नगरी राजा भोज नरेस।
चउरास्या[१] जे कै वसइ असेस[२] ॥
राजबेलावल[३] अति घणइँ।
राज कूवँरि अति रूप असेस ॥
बेटी राजा भोज की।
ऊनंत[४]— पयोहरवाली — वेस ॥१३॥
राजा भोज कइ मिल्यो दिवाण।
मील्या सुर नर इन्द्र विमान ॥
राई राणा चहु देसी का।
राणी पूछइँ सुणि राइ नरचंद ॥
बारइ वहतई[५] आपणइँ।
कुँवर परणावौ,[६] सोझउ[७] वींद[८] ॥१४॥
पांड्या[९] तौहि बोलावइ हो राय।
ले पतड़ो[१०] जोसी वेगो तुं आई ॥
सूंदिन[११] कहे रूड़ा[१२] जोवसी[१३]।
चतुर नागर ईसउ[१४] आणज्यो चंद ॥

---

१. जागीरदार-(चतुरास्या-चारों ओर बैठने वाले, मुसाहिब-जागीरदार)। २. अशेष-असंख्य। ३. राजवल्लभाः, रानियाँ। ४. उन्नत पयोधरवाली अवस्था=युवावस्था। ५. वार जाते हुए=आयु बीतते हुए अपने। ६. परणावों-ब्याहो-(परिण का प्रेरणा० क्रिया)। ७. सोधो-खोजो-तलाश करो (अनुसंधान करो)। ८. वींद-वीरेंद्र-वर। ९. पांडे। १०. पत्रा-पंचांग। ११. सुदिन, शुभ दिन। १२. रूरा-अच्छा, चतुर। १३. ज्योतिषी। १४. ऐसा (ईदृक्)।

सुर नर मोहई देवता।
जिम गोवल माँहि सोहइ गोव्यंद ॥१५॥
राजा भोज बोलइ तिणी[1] ठाई।
चिहुँ षंड जोवज्यो[2] भूपती राय ॥
तेड़उ[3] पुरोहित राव कउ।
महूरत लगन गिणे तिणि ठाई ॥
कर जोड़ राजा कहइ।
राजमती को करउ विवाह ॥१६॥
ले महुरत चाल्योऊ तिणि ठाई।
चिहुं षंड जोवज्यो भूपति राय ॥
प्रोहित राजा भोज कउ।
हियड़इ हरिष मनि रंग अपार ॥
चंद-वदन कइ कारणइ[4]।
कुण[5] वर वरसी[6] भोज कुँवार ? ॥१७॥
जोयो[7] छै तोड़उ[8] जेसलमेर[9]।
जउओ छइ नयर[10] अयोध्या को देश ॥

---

१. ठाँव-स्थान। २. जोहना-ढूँढ़ना-देखना। ३. टेरा-बुलाया। ४. कारणे-वास्ते-लिए। ५. कौन वर। ६. वरेगा-(वरिष्यति)। ७. जोया है, जोहा है-देखा है-ढूँढ़ा है। ८. एक नगर का नाम (जैपुर के राज्य में)। ६. जैसलमेर (नाम)। १०. नगर।

ढीली[1] मंडल पुणि जोईयउ।
जउयो छइ मथूरां मंडण[2] राय॥
एको चित्त न मांनीयौ।
नयणे[3] दीठो तव बीसल राय॥१८॥

पांड्यो तोहि बोलावइ राय।
लगन सोपारी लेकरि जाहि॥
गढ़ अजमेरां गम[4] करउ।
चउरो[5] बइसी पषालज्यो[6] पाव॥
बेटी राजा भोज की।
राजमती वर बीसल राव॥१९॥

पांड्यो—प्रधान चल्यो तिणी ठाई।
गढ़ अजमेर पहूंता[7] जाई॥
जाई[8] करी राय जुहारीयउ[9]।
माणिक मोती चउक पूराय॥
पाव पपाल्या राव का।
राजमती दीई बीसलराव॥२०॥

---

१. दिल्ली मंडल (प्रदेश या प्रांत)। २. मथुरा मंडन के राजाओं को। कुछ लोगों का मत है कि यह नाम है—मंडल राय (?)। ३. नयन से (नयनेन) देखा (दीठो-दृष्टः)। ४. गमन किया। ५. चँवरी में बैठ कर। ६. पखालजो-धोना (प्रक्षालन)। ७. पहुँचा। ८. जाई करी=जाकर। ९. जुहारा-प्रणाम किया।

हुई सोपारी[1] मनि हरष्यो छइ राव।
वाजित्र[2] वाजइ नीसांणो घाव॥
गढ़ मांहि गूडी उछली[3]।
घरि घरि मंगल तोरण च्यारि॥
चहुआंण वंस उधरउ[4]।
जो घरि आवी जाति पंमार॥ २१॥
ब्राह्मण समदइ[5] छइ बीसलराय।
हांसलउ[6] घोड़उ कुलह[7] कवाई[8]॥
दीन्हउ सोनउ सोलहउ[9]।
पाट[10] पटोला बीड़ा पान॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ।
पाड्यां थोड़उ[11] म्हांको राषज्यौ[12] मान॥ २२॥
देइ कुंवर चाल्यो तिणि ठाई।
राजा भोज जूहारयउ जाई॥

---

१. सोपारी हुआ-सगाई हुई। ब्याह होने के पूर्व एक रीति जिससे ब्याह होना निश्चित समझा जाता है। २.वाद्ययंत्र-बाजे। ३. उत्सव मनाया गया-विवाह इत्यादि शुभ अवसरों पर गुड्डी उछलती है। (मान) कवि ने भी (राजविलास) में विवाह के अवसर पर लिखा है कि 'गोरि (गोडि-गुडो) घन ऊछली'। ४. उद्धार हुआ। ५. समदाना-बिदा करना'। ६. कंठभूषण। ७. टोपी-कुलाह। ८. लंबा अचकन। ९. सोलहवां सोना-उत्तम सुवर्ण। १०. पाटपोटला-रेशमी वस्त्र। ११. थोड़ा है (स्तोक)। १२. रखना-रखिएगा।

सुणि हरष्यौ मनि अति घणइं।
वावै[1] जवारा राजकुमार[2] ॥
चिहुँ दिसि नौतां मोकल्या[3] ।
षंड षंड रा[4] आवीया राइं ॥ २३ ॥
फिरइ वीनउला[5] राज कुमार।
षंड षंड का मील्या खंधार[6] ॥
नयरी नइँ माढै[7] वीचंइ।
हस्ती पायक[8] अंत न पार ॥
भोज तणई[9] नउँतइ मील्यौ।
जांणे उदयाचल उगइ छइ भाँण[10] ॥ २४ ॥
फिरइ विनउला वीसलराय।
वाजित्र वाजइ नीसाणो घाई[11] ॥
जीमणवार[12] साजत हुइ।
कुँ कुँ चन्दन पाका[13] पान ॥
कर जोड़े राजा कहई।
चालउ चउरासी राव की जान[14] ॥ २५ ॥

---

१. वावै—वोआवे। जौ वोना। एक रीति है जिसमें जौ वोते हैं। २. कुमारी (भोजपुत्री)। ३. भेजा। ४. का। ५. एक रीति जिसमें विवाह के पूर्व वर अथवा कन्या के मित्र उसे खिलाते हैं। ६. खण्डाधीश-मालिक-राजा। ७. कन्या के पितृ-गृह में। ८. पदातिक-पैदल। ९. कन्या-तनया। १०. भानु-सूर्य्य। ११. घाव-निसान पर वाव अर्थात् बाजा बजना। १२. ज्योनार-भोजन। १३. पक्के- (पक्व)। १४, यान-बारात।

परणवाँ[1] चाल्यो बीसलराय।
चउरास्या सहु[2] लिया बोलाई॥
जान तणी[3] साजति[4] करउ।
जीरह[5] रंगावली पइहरज्यो[6] टोप॥
घोड़ा बैसज्यो,[7] हांसला।
कडि,[8] सोनहरी, हाथे जोड़ी॥२६॥

जान सजाई बीसलराव।
खेह, उड़ी रवि गयो लुकाई॥
कोतिग,[9] आव्या देवता।
कोतिग आव्या इन्द्र विमान॥
लूण,[10] उतारे अपछरा[11]।
धनि धनि हो बीसल चहुँवाण॥२७॥

पूजी विनायक चाल्यो छइ जान।
चौरास्या सहू दीधउ[12] छइ मान॥
आठ सेहस नेजा[13]—धणी।
पालखी बइठा सहस पँचास॥

---

१. परिणयार्थ-विवाह करने के लिये। २. सब (सर्व)। ३. तणी=की। मिलाइये तणौ=को। ४. तैय्यारी-साज। ५. कवच। ६. पहना। ७. बैठा-चढ़ा। ८. कंकड़-कड़े। ९. कौतुक-(देखने)। १०. लवण-नमक उतारना-एक रीति। ११. अप्सराएँ। १२. दिया। १३. नेजा भाला बरदार।

हाथी चाल्या दोढ़सो[१] ।
असीय सेहस चाल्या केकाण[२] ॥
रथ ऊपरि धज फरहरई ।
खेहाडमर[३] नवि[४] सूझइ भाण ॥२८॥
परणवाँ चाल्यो बीसलराव ।
पञ्च सखी मिलि कलस वन्दावि[५] ॥
मोती जा आषा[६] किया ।
कूँ कूँ चंदन पाका पान ॥
अमली समली[७] आरती ।
जाई वघेरइ[८] दियो मिलांण[९] ॥२९॥
जाई वघेरइ दीयो मिलाण ।
बाचउ ब्राह्मण वेद पुराण ॥
मङ्गल गावै कांमनी ।
पंच सबद तणतुं[१०] झुणकार ॥
मेघाडंमर छत्र सिर दियउ ।
आज सफल राजा जनम संसार ॥३०॥
पाई कंकण[११] सिर बंधीयो मोड़[१२] ।
प्रथम पयाणउँ[१३] दूरग चीतोड़ ॥

---

१. डेढ़सौ । २. कैकय देश के घोड़े । ३. खेहाडंबर-धूल राशि । ४. नहीं । ५. कलसा चंदाना-विवाह में एक रीति जिसमें स्त्रियाँ पानी भरे घड़े सिरपर रखकर शुभार्थ ले जाती हैं । ६. अक्षत । ७. उलटी सीधी । ८. एक स्थान (?) । ९. मिलान=डेरा । १०. तंत्री । ११. कंकण पाया, पाना-(बांधना) । १२. मोर (मौलि) । १३. प्रयाण-प्रस्थान ।

राता फूदाँ[1] पाटका।
ब्राह्मण उचरइ वेद पुराण ॥
मंगल गावइ कांमनी।
उठीय षेह नवि सूझै भांण ॥ ३१ ॥

परणवा चाल्यो बीसलराव।
बाज्या ढोल नीसांणे घाव ॥
डोरउ[3] बांध्यउ पाटको।
पालीय[4] परगह[5] अंत न पार ॥
पालखी (की) चाली सात सइ।
नाल्ह कहइ राव पूरज्यो आस ॥ ३२ ॥

टाटर[6] पाषर संजति कियो राव।
धार नगरी राजा परणवा जाइ ॥
एक बासउँ[7] औ (र) बाटइ[8] बसउँ।
उठी प्रभातै सौंण[9] बंदाई ॥
मेघाडंमर सिर छत्र ठयो[10]।
देश मालगिर चालीयो राई ॥ ३३ ॥

---

१. रक्त फूंदन (फुलरा)। २. रेशम के। ३. डोरा-तागा। ४. पालकी। ५. परगह (परिग्रह) परिजन। ६. पाखर, घोड़ों पर रखने की एक लोहे की बनी झूल, टाटर पापर से घोड़ों को सज्जित किया। ७. वास-स्थान ८. रास्ते में। ९. सौंण-शकुन वंदानां-एक रीति जिसमें सवेरे कोई पक्षी (नीलकंठ आदि) लेकर सामने आते हैं। १०. हुआ-रखा गया।

पुर पाटण[1] थी चाल्यो राव ।
बीसलपुर जाई दियो मीलाण ॥
कोट कोटी कोठी, सामधी[2] ।
पाली परिगह अंत न पार ॥
बाजा वाजइ डुवडुभी[3] ।
परणवा चाल्यो बीसलराव ॥ ३४ ॥

सांमजि[4] करि उभा[5] रजपूत ।
हरषि नरायण दीधो सूत ॥
कड़ी सोनहरी झलमलै ।
बाजाहो[6] पलेटा[7] लाबी झूल ॥
पग मचकंती मोजड़ी[8] ।
असंष सारहली[9] वाजइ ढूल ॥ ३५ ॥

गढ़ अजमेरां को चाल्यो राव ।
परणवा चाल्यो भोज कुमार ॥
देस मालागिर गम कीयो ।
राजकुली[10] साथइं तिणि ठाई ॥
धार नगरी नीडा[11] गया ।
डेरा दीवाड़या[12] वीसल-राव ॥ ३६॥

---

१. पट्टन (नगर) से होकर । थी-से । २. कोठी सजायी समधी (भोज) ने । ३. दुंदुभी । ४. समाज करके । ५. खड़ा हुआ । ६. घोड़ों को-(वाजिनः) । ७. लपेटना का विपर्यय । ८. मचमचाती जूती । ९. साँडनी (ऊँटनी) पर बजता है ढोल । १०. राजकुल । ११. नियरा-समीप, निकट । १२. दिलवाया, डेरा कराया ।

देस मालागिर हुवउ हो उछाव[1]।
राजमती कउ रचउ वीवाह ॥
च्यारि खंड जीव नउतीया[2]।
मिल्या हो चउरासीया अंत न पार ॥
भांट चारण कुण अंत गिणइ।
विप्र वेदां करे[3] आठ हजार ॥३७॥
गलइ.....उभउ छइ देव[4]।
लावण लाडु परुसज्यो सेव ॥
घृत सत्यासी[5] को मूंकिज्यो[6]।
रायभोग मंडोवरां[7] मूँग ॥
उभउ राजा सीष[8] दइ।
जीमइ चउरासीया तुगं[9] तुंग ॥३८॥
माघ पंडित बोलइ तिणि ठाई।
चउघड़्यउ[10] बाजइ सीह दुवारि[11] ॥
सांमेला[12] की बेला हुई।
राजी का रजपूत माढो[13] तुषार ॥

---

१. उत्सव (उच्छव)। २. जीव नउतीया–जो (प्राणी) निमंत्रित थे। ३. वेदां-वेद पाठ करैं। ४. इस पंक्ति में कुछ छुटा हुआ है अर्थ स्पष्ट नहीं है। ५. सत्यासी (साचोर) का घी-एक स्थान जहां का घृत अच्छा होता है। ६. भेजना। ५. मंडोवर–एक स्थान जहां का मूंग अच्छा होता है। ८. आज्ञा। ९. तुंग–समूह, यूथ के यूथ। १०. चतुर्थ प्रहर का घड़ियाल वजते ही। ११. सिंहद्वार–प्रधान फाटक। १२. अगुआनी–मिलने की। १३. कसौ तुपार-देश के घोड़े।

मनमानैं जे पलाणजइ[1] ।
हिव[2] चालो ठुकराला[3] सांमहा[4] जानि ॥३९॥
राजा कोड बोल हूवइ परिमाण ।
सिरेका[5] ताजी लेहि पलांण ॥
छार दहीय, पलाणज्यो ।
सावहू खेड़ा नेतरवार ॥
दुंदुभी सीग मोचाववो ।
चलता चालज्यों आपण माण[6] ॥४०॥
चल्या ठकुराल्या न लावीय वार[7] ।
भोज तणाँ[8] मिलिया असवार ॥
वीरमदे[9] चढीयो जग-रूप[10] ।
महल[11] पलांरायों ताज दी [न] ॥
खुरसांणी[12] चढ़ी चाल्यो गोड[13] ॥४१॥
अंबर[14] सो चढ़ि चाल्यो छे भांण[15] ।
कुँवर पलांरायो छे केकाँण ॥
ताजी चढ़ीयो खेत सी[16] [ह] ।

---

१. पलानी कसना-जीन कसना । २. अभी । ३. ठाकुर लोग । ४. बारात की अगुआनी करने । ५. अव्वल सिरे का—उच्च श्रेणी का, उम्दा । ६. मान—इज्जत । ७. वार—देर । ८. तणा-का ९, १३, १५, १६, सरदारों के नाम । १०, ११, १२, १४, घोड़ों के नाम ।

पाटसूत[१] दीयो चंद परमार ॥
हंस[२] पलारायो बीर[३] जी ।
मेघनादै[४] चढि उभौ राण ॥४२॥
चढ़ि चाल्यो छै मीर[५] कबीर[६] ।
खुंद कार[७] तुह्म ढुकेटुक[८] धीर ॥
अमल[९] खलीती धरि रही ।
भीना पौसत[१०] छाड्या, छारिण ॥
उभा वगितारा[११] करइ ।
दोड़, सीताब[१२] बगनी[१३] भरि लाव ॥४३॥
जाणिक इन्द्र चढ्यो भुवाल ।
खइराड्या[१४] आया खुर[१५] साँण ॥
गोड[१६] चढ्या गज केसरी[१७] ।
कछवाह[१८] कहुं नीर[१९] - वाण ॥
केई सोलंकी[२०] साँषलाँ[२१] ।
के चावडा[२२] केइ चहुवाँण ॥
केई षीची[२३] केई देवड़ा[२४] ।
केई गहिलोत[२५] सरिस परमार ॥४४॥

१,२,४,६, नाम घोड़ोंके ३. नाम सर्दार ५.मीर-पदवी ७.नौकर, ८. ढुक एक धीरज धरो । ९. अमल (नशे) की थैली । १०. भीना पोस्ता, भींगे पोसते (Poppy) ११. पुकारता है—वकबक करता है । १२. शीघ्र जल्दी । १३. बधनी (वर्द्धन) एक बरतन जिसे मुसलमान काम में लाते हैं १४. खेडार से आये । १५. खुरासानी घोड़े । १६. गौड़ (राजपूत) १७. हाथी का नाम १८,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२५, नामभिन्न२वंश के लोग ।

सोनीगरा[१] का हूं करूं वषांण।
हाडा—बुंदी[२] का घणी[३]॥
हथ्र उजेणी जाई दीयो मेलहांण।
चउरास्या सहुं तिहा मिल्या॥
उढीय छे षेह न सूझै भाण ॥४५॥
हुश्रौ साँमेलौ[४] जुहार जुहार।
पान श्रटागर काथ श्रीकार॥
उतरेव लाड—लावाजीवा[५]।
जांन को कटक[६] असीय हजार॥
जांणे उद्याचल ऊलट्यो।
परदेसी जाइ लोपी[७] छइ धार ॥४६॥
कूंवर चढावती वोलै वोल।
श्रगर चंदन कीजइ पोल (र)॥
भला भला ताजी चढै।
श्राचरै[८] वीड़ा पाका पान॥
ऊटां लीजइ श्राकरा[९]।
चालीय चतुरास्या साँमहा[१०] जान ॥४७॥
धार नगरी श्राव्यौ वीसलराय।
पंच सपी मिली देषिवा जाय॥

---

१. सोनगिरवालों का। २. बूँदी। ३. स्वामी। ४. श्रगुश्रा[...]
५. लाव, लश्कर। ६. सेना। ७. छा लिया, घेर लिया। लो[...]
(लोपन)। ८. श्राचरण करते हैं-बाँटते हैं। ९. श्राकर-तेज। १०. साम[...]

मोती थाल भराविया[1]।
माँहि बीजउरउ[2] तिलक सिंदूर ॥
अमली समली आरती।
जाणि प्रतक्ष उगीयो सूर ॥४८॥
वीसल आव्यौ धार मँझार।
मन हरषी घन[3] राज-कुमार ॥
चाल्यौ सषी करौ आरती।
सकल दिसो जीसो[4] पुनिमचंद ॥
सुर नर मोहै देवता।
जिम गोवल[5] मांहि सोहइ गोव्यंद ॥४९॥
धार नग्री आयो बीसलराव।
जानीवासउ[6] दीयौ तिणि ठाव ॥
चउरास्या सहु ऊतरया।
बाजइ ढोल निसाणे घाव ॥
आड़ि विनउला[7] संचरयउ।
तोरण आवीयो बीसलराव ॥५०॥
देस मालागिर भोज छइ राव।
राजमती को रच्यो हो वीवाह ॥

---

१. भराया। २. बीजौरा-छोटा कलश (?)। ३. बहुत। ४. जैसा। ५. गोपों में। ६. जनवासा। ७. एक रीति।

जान माहइ नौता[1] फिरइ।
चउथ ब्रहसपतिवार आदीत॥
नावी[2] फीरइ उतावला।
स्वाति नषत्र आठमी परणेत॥५१॥
तोरण आव्यो वीसलराव।
पंच सखी मिली कलस वंदावि॥
मोती का आषा किया।
कुँकुँ चंदन तिलक सिंदूर॥
अमली समली आरति।
जाणिक तोरण उगीयो सूर॥५२॥
तोरण आवीयो वीसलराय।
वर - वेहड़ा[3] वंदावइ नारि॥
जूसल मूसल[4] वंदीया।
कुँकुँ चंदन अंग विलास॥
साथै मुकुट सोना तणौ।
राजा इन्द्र सभा मोहे कविलास[5]॥५३॥
माघ पंडित वोलइ तिणि ठाय।
हथलेवो[6] वेगो मँगाय॥

---

१. नवेद। २. नाई। ३. एक रीति। मिट्टी के छोटे कलशों को 'वर वेहडा' कहते हैं। ४. विवाह में वर के अंगों से मूसल इत्यादि का स्पर्श करा के पूजा करते हैं। ५. कैलाश। ६. पाणिग्रहण के लिये। हथलेवा के लिये। देखो-दियो हियो सँग हाथ के, हँथलेवा ही हाथ (बिहारी)।

माघ[1] पंडित ईम उचरई।
ब्राह्मण वेदतणां भुणकार॥
मंगल गावई कांमनी।
राज - कुंवर घाली[2] वरमाल॥५४॥
माश्रम[3] जोसी देश्रम व्यास[4]।
माघ-आचारज कवि कालिदास[5]॥
ए च्यारइ वेद उचरइ।
चउरी दीसउ मांडहा मांहि॥
राजमती राही[6] [या] जी सी।
इस कुंवरि नहीं त्रिभुवन मांहि॥५५॥
माह मास सीय[7] पड़े अति सार।
रामजती घन अखय[8]-कुमारि॥
देही कण इंगार[9] जू तपै।
राजर मांथ भयउ उगतउ भाण॥
माघ पंडित ईम उचरई।
चउरी कुंवर वैसाड़ी छुई आंणि॥५६॥
पंच सखी मिलि बइठी आई।
राजा है माय[10] पूजावण जाई॥

---

१. ३. ४. ५. नाम। २. घालना-डालना-पहनाना। ६. राधिका—(प्रा० राहिआ—राहआ, राधा) ७. शीत—सीय—'जायसी' ८. अक्षय कुमारी। ९. अंगार के समान, अग्नि के तुल्य। १०. मृत्तिका, मातृका पूजन।

मोती का आखा किया ।
काथ सोपारी पाका पान ॥
हइ हथलेवउ जोड़ीयउ[१] ।
जाणिक रुकमिणी मिलीयो कान्ह ॥५७॥
पाटै वइठा दुइ राजकुमार ।
पहिरो वस्त्र जादर—सार[२] ॥
कांन्हे कुंडल आड़ीया[३] ।
सरव सोनारो[४] मुकुट लीलाट ॥
रूप देखि राजा हंसई ।
त्रिभुवन मांहइ छइ जाति पमार ॥५८॥
चउंरी मांहि वइठउ छइ राई ।
पंच सखी मिलि मंगल गाई ॥
मोती चउक पुरावीया ।
वाजीत्र वाजै घुरइ निसांण ॥
चहुवांण वंश उघरयो ।
जइ घरि आवी जाति पमार ॥५९॥
देस मालागिर हूवउ हो उछाह ।
राज कुंवर को हूवउ विवाह ॥
चन्दन काठ को मांडहो[५] ।
सोना की चौरी, मोती की माल ॥

---

१. जोड़ा-पाणिग्रहण कराया । २. एक प्रकार का वस्त्र । ३. लटकते हैं । ४, सोने का । ५. मढ़ा हुआ या-मँडवा (मंडप) ।

पइहलइ फेरइ राय दैड़ाइचौ[1]।
आलीसर[2] सो देइ कुडाल[3] ॥६०॥
दुजइ फेरो जब फेरइ छै राय।
सडु अंतेवर[4] लियो बोलाइ॥
राजमती .... दाडाइचौ।
दीया साधन[5] अरथ भंडार॥
दीयो देस मंडोवरो[6]।
समंद सोरठ[7] सारी गुजरात ॥६१॥

तीजो फेरो जब फेरयो छइ राय।
पाट महादे[8] राणी लीई छइ बुलाई॥
राज कुँवर दाड़ाइचौ।
दीधा सँभर नागर[9] चाल॥
तोड़ा[10] टोंक बिछाली[11] छो।
मांडल गढ से ऊपर माल ॥६२॥
चउथइ फेरइ जबि दीज्यो छइ थोल[11]।
नीरवाड़ी का जांचत डोल॥

---

१. दहेज (दाइज) में दिया। २–३. देशों के नाम। ४. अन्तःपुर। ५. साधन में। ६. एक देश। ७. सौराष्ट्र (काठियावाड़)। ८. पट्टमहादेवी। ६. एक स्थान (मारवाड़) १०–११. नाम देश। १२. विशाल। १३. थोड़ा (स्तोक)। १४. नीरवाड़ा (?) का देश माँगता है।

हस्यारथ[1] करे चेलकी[2]।
भोज घणां देसी[3] तेइ बहोड़॥
कहइ समझाई, कर पेलवी[4]।
राजा कीसीव तुं मांगि चितोड़॥६३॥
कुँवर अवधारइ[5] सूंणि सांभरया राव।
बीनती म्हांकी चितह सुहाई॥
भोज मया कर वीसलराय॥६४॥
रहि रहि कुँवर न बोली अयांण।
धार सूं लछउ[6] मांगी उजेणी॥
मांगी चंदेरी, पेडलै।
मांगाँ अजोध्या देवता मोड़॥
इंद्रनी [उ] पायो[7] आपहइ।
सरग का देवता अलंभ चितोड़॥६५॥
धी को वोलनूं[8] मानीयो बाप।
कांई न मारी[9] राजा पाई वचन॥
कांई कहेसी[10] सासरइ[11]।
गांव न उतरयो हीया[12] थी एक॥

---

१. हँसी। २. चेरी-(चेटकी)। ३. देगा (दास्यति)। ४. प्रणाम-(पैलगी-पैर पर लग कर)। ५. अवधारण कर-स्वीकार कर। ६. सहित लय के। ७. उपजाया। ८. बोलना। ९. मारी=मेरी। १०. कहेगी (कथयिष्यति)। ११. ससुराल में। १२. हृदय से=गले से।

लंका कउ माल परणतै[1] लीयउ।
थारउ कांई होसी ईणी चीतोड़ विसेष ॥६६॥
उचितयो राजा बचन दीयो भोज।
सूणि बाई! वचन तै कह्या चौज[2] ॥
ज्यानकी लिय पटंतरइ[3]।
धीय तणइ सिर सोवन मौड ॥
धीय थी सग[4] राजा हुवो धीय!।
इवइ धीहहै धमि[5] आपीयो[6] चीतोड़ ॥६७॥
परणइ, राजा, बीसलराय।
माघ पंडित है हुवउ पसाव ॥
वंभण भाट तेड़ावीया।
दीधा ताजी[7] उतिम ठाई ॥
दीधो सोनो सोलहो।
दीधी सुरह सबछी[8] गाई ॥६८॥
हुई पहिरावणी[9] हरषीउ राई।
अंचल वंधी राजकुमार ॥
चौरी चढीयो भोज की।
वाजइ बरगूं भूगल भेर ॥

१. व्याह करते ही। २. सुंदर, चीज। ३. पटतरइ=बराबरी करती हुई। (केहि पटतरिय विदेह कुमारी–तुलसी०) ४. धी (पुत्री)। धी (पुत्री) से राजा (वीसल) भी सगा हुआ। ५. धर्म करके। ६. अर्पण किया (अर्पितः)। ७. ताजी घोड़े। ८. सवत्सा=बछड़े सहित। ६. एक रीति।

हुवउ पंधारउ[1] रावलइ।
धार कउ द्विज चाल्यो अजमेर ॥६६॥
राजा भोज आयो तिणि ठाई।
गउरोउ[2] जीमाज्यो छै वीसलराय ॥
चउरास्या सहुको मील्यौ।
पालो परिघउ सयल असेस ॥
पहिरावणी राजा करइ।
दे वर-दषीणां लागइ छइ पाय ॥७०॥
सासू जूहारवा[3] चाल्यो छइ राई।
वाजित्र वाजै निसांणे घाई ॥
कुलीय छत्तीसइ साथ छई।
माणिक मोती भरया नारेल[4] ॥
भाणमती[5] आसीस दइ।
अविचल राज कीज्यो अजमेर ॥७१॥
मोकलावी[6] छइ भोज कुंवार।
दीधी दासी सहस दुई चारि ॥
दीधी वाला[7] पालषी।
दीधा हाथी उतम ठाई ॥

---

१. एक रीति। २. भात खिलाया। ३. जुहारने के लिये=प्रणाम करने के हेतु। ४. नारियल (नारिकेल)। ५. भानुमती=राजमती की माता (भोज की पट्टमहिषी)। ६. विदा करते हैं। ७. वाला पालषी= जनानी पालकी।

कुँवर बलावे बाहुड़्या[1]।
राजमती मूकलावी सुभाई ॥७२॥
राजमती मुकलावी सुभावी।
सारी जान मांहइ हुओ हो उछाह ॥
सुणी प्रधान राजा कहई।
मोहि[2] तुठो छइ सिरजणहार[3] ॥
आषर लिखाया वेहका[4]।
जाइ सूखासण बइठो छइ राय ॥७३॥
अयरापति[5] चढ़ि चाल्यो राय।
ली अस्त्री अरधंग वइसाय ॥
ज्यूँ ईश्वर सँग गोरज्या[6]।
चहुवाण वंस हुव [उ] उछाह ॥
राजा कहइ परधान सुं।
गढि अजमेर पहुँता जाई ॥७४॥
दीठउ आनासागर[7] समंद तणी वहार।
हंस-गवणी मृग-लोचणी-नारि ॥

---

१. लौट आया (सं० व्याघुटितः)। २. मुझ पर। ३. ईश्वर=रचनेवाला। ४. वेह (वेधस्) विधाता। ५. ऐरावत=बड़ा हाथी। ६. गौरी=पार्वती। ७. एक सागर=यह एक प्राकृतिक झील है जो 'अना' अथवा 'अनार्पण' देवी के नाम पर बनाई गई थी और जिसके तीर पर ऐसा कहा जाता है कि वान ऋषि ने प्राचीन समय में बहुत काल तक वास किया था।' बा० श्यामसुंदर दास-ना०प्र० पत्रिका-भाग पंचम पृ० १४१।

एक भरइ बीजी[1] कलिरव करइ।
तीजी घरी[2] पीवजे ठंडा नीर॥
चौथी घन सागर जूं घूलई[3]।
ईसो हो समंद अजमेर को तीर॥७५॥
हुवउ पइसारोउ[4] वीसलराव।
आवी सयल अंतेवरी[5] राव॥
रूप अपूरव पेषीयइ[6]।
इसी अस्त्री नहीं सयल[7] संसार॥
ईसीय न देवल-पुत्तली।
जइ घरि आवी भोज-कुँवार॥७६॥
जाइ सिंघासण वइठो छइ राय।
डोरो[8] छोरी, जुहारो छइ माय॥
सेज पधारी राव की।
अतिरंग स्वामी सुं मीली राति॥
बेटी राजा भोज की।
राजमती रंग वीसलराव॥७७॥
परणे आयउ वीसलराव।
वाजइ गुहिर नीसांणो घाव॥

---

१. द्वितीय-दूसरी। २. खड़ी। ३. घूलती है-पानी में पैठती है, प्रवेश करती है। ४. पइसार-प्रवेश-पैठारा-[विवाह करके लौटे हुए वर का घर में प्रवेश] ५. अंतःपुर-महल। ६. देखता है (सं० प्रेक्षति) ७. सब-सकल। ८. कंकण डोरा।

गढ माँहि गुड़ी उछली ।
गण गोत्रज जूहारि माई ॥
चउरास्या सहू वाहूड्या ।
राजा सेज पहुँतो जाई ॥७८॥
धन धन पिता, धन तोरी माय ।
जीणी प्रणामुँ राजा बीसलराव ॥
भोज - तणी चउरी चड्यौ ।
राजमती परणी रंग माँहि ॥
व्यास वचन ईम उचरई ।
"दिन दिन प्रतिपे[1] बीसलराई" ॥७६॥
तोही आँणू भइरव[2] चांपा का फूल ।
चोवा चंदन अंग कपूर ॥
पाका पान घउंटहुली[3] ।
जाई सेवती, नीरवालो[4] का फूल ॥
सांझ समइ राय बोलसी ।
हँसि हँसि बोल (ई) अंवला[5] मूंध[6] ॥८०॥
भयो हो सवारो[7] बोसलराय ।
भोज कुँवर हइं चित्त लगाय ॥

---

१. प्रदीप्त हो—प्रताप बढ़े । २. भैरव देवता । ३. नागर वेल, नागवल्ली । ४. निवारी—(फूल) । ५. अवला—स्त्री । ६. मूंध—मुग्धा । ७. सवेरा—प्रातःकाल ।

अंतेउर सहूँ वीसर्यो[1] ।
दुईकूउ हँस[2] भयो ईक ठाई ॥
अहि निसि चित न वीसरई ।
राजमती रंग वीसलराय ॥८१॥
ईणि अंतर[3] वीसल - दे - राय ।
सवा लाख पाईगह[4] केकांण ॥
हाथी घूमइ जे सात - सइ :
गठ मठ मंदिर उत्तिम ठाई ॥
देषे राई मन हरषीयौ ।
गरब करि बोल्यो छइ चहुवांण ॥८२॥
साठ अंतेवर राजकुमार ।
साघलां[5] ऊपरि जाति पमांर ॥
वीसल—दे तीणी रंजीयौ ।
च्यार पौहर[6] नीतु वीसलइ भोग ॥
सैज सूखासण कूंवरी[7] ।
राजमती वीसल—दे जोग ॥८३॥
'नरपति' व्यास कहइ करि जोड़ ।
तो तूठा तैंतिसों[8] कोड़ि ॥

---

१. भूला (विस्मृत) । २. प्राण । ३. अंतर में, बीच में । ४. सवारी में तबेले में । ५. सब के ऊपर । ६. प्रहर । ७. कोमलांगी । ८. तैंतीस कोटि देवता ।

रास स्वयंबर नीपजइ[1] ।
राजमती बीसल चहुवाण ॥
बहु संवादइ[2] चालीयउ ।
तास रसायण करूं बखाण ॥८४॥

पहिलइ षंड कहइ छइ व्यास ।
राजमती राय पूरीय आस ॥
खाय पीवै घरि विसलजइ भोग ।
कलिजुग कविताउँ कहई ॥
पूरब जनम तणइ सराप ।
कितमक[3] लीष्या सो भोगवी[4] ॥
विण भोग्या नहीं छूटसी[5] पाप ॥८५॥

इति प्रथम खंड ।

---

१. निपटा–कह चुका । २. वार्ता, संवाद । ३. किस्मत–भाग्य ४. भोगना है । भोग+तव्य (सं० प्रत्य०) । ५. छूटेगा । छूट+स्यति (सं० प्रत्य०) ।

द्वितीय सर्ग

गवरी को नंदन आव्यो छुई भाव[1] ।
दोय कर जोड़े लागु हो पाय ॥
'नाल्ह' रसायण रस भणइ ।
भूलो अषिर आणजो ठाई ॥
एकदन्तों[2] ! करूँ वीनती ।
रास प्रगासुं वीसल-दे-राई ॥ १ ॥

गरब करि ऊभो छुइ सामरयो-राव[3] ।
मो सरीखा नहीं ऊर[4] भुवाल ॥
म्हां घरि सांभर उगहइ[5] ।
चिहु दिस थाण जेसलमेर ॥
लाख तुरी पापर पड़इ ।
राजिकउ थानिक[6] गढ़ अजमेर ॥ २ ॥

गरव न बोलो हो मो भरतार[7] ।
वाजा[8]-वाजे राजा असिय हजार ॥
लंकापति रावण धणी ।
सात समंद विच वस्तो फेर ॥

---

१. मन में-ध्यान में । २. एक दन्त-गणेश जी । ३. साँभर का राजा-वीसलदेव । ४. और । ५. उगहना-एकत्र होना-वसूल होना । उद्ग्रहण (सं०) उग्गाहन (प्रा०) ६. राजकीय स्थान-राजधानी । ७. भरता=पति, प्रेमी । ८. कोई कोई ।

"लंक बिधुसी[1] बांनरां ।
थे कोई सराहो राजा गढ अजमेर ॥ ३ ॥
गरभि[2] न बोलो हो सांभरया-राव ।
तो सरीखा घणा और भुवाल ॥
एक उड़ीसा को धणी ।
बचन हमारइ तुं मान जु मानि ॥
ज्युं थारइ सांभर उगहइ ।
राजा उणि घरि उगहइ हीरा-खान" ॥ ४ ॥
"धणक[3] बोल बस्यो मन मांहि ।
चित चमकियउ[4] वीसलराय ॥
हूं बीसह्यो[5] तैं वेदिठा[6] ।
म्हा तु बरस बारइ की लांब[7] ॥
कइ[8] म्हारइ हीरा ऊगहई ।
नहीं तो गोरी ! तिजूहूँ पराण" ॥ ५ ॥
"हूँ वराकी धणी ! मोकियउ[9] रोस ।
पांव की पाणही सुं कियउ रोस ॥
मे य हसंती[10] बोलीयो ।
आपणइ मान हतौ मानस छइ सांस ॥

---

१. विध्वंस किया—नष्ट किया। २. गर्व। ३. धन का-स्त्री का। ४. चमक गया—चकित हो गया। ५. विश्रब्ध था—भूला था। ६. सचेत किया (विद्)। ७. लाम, सफ़र, प्रवास। ८. या तो। ९. छोड़ो (मोकना—(मुंच)—छोड़ना)। १०. हँसती हुई—हँसी में।

ऊभी मेल्हे[1] चालीयौ।
जल विण राजा क्युं जीवइ हाँस ?" ॥ ६ ॥
"जनमी गोरी तुं जेसलमेर।
परणी आवी गढ अजमेर ॥
बार [ह] बरस की गोरड़ी[2]।
कूं समरयो[3] ऊड़सिउ जगंनाथ ॥
अन मेल्हुँ पाणी तिजुं।
कहित[ो]गोरी थारा[4]जनमकीवात"॥ ७ ॥
"जइ तुं [5]पूछइ हो धरह नरेस ! ।
वन खंड रहती हरिणि कइ वेस ॥
निरजला करती एकादसी।
एक अहेड़ी वनह मंझारी ॥
ले बांणां उरहु[6] हणी।
जनम दीज्यो जगंनाथ दुवार ॥ ८ ॥
हरिणी मणि[7] संभरया जगंनाथ।
संख — चक्र — गदा — धरीय[8] ॥
मांगिहै[9] हरणली मनह विचार।
तो तुंठा त्रिभुवन धणी ॥
पूरव देस म्हारो जनम निवारि" ॥ ६ ॥

---

१. छोड़ कर। २. गोरी, सुंदरी। ३, स्मरण किया, स्मरण करना। ४. तिहारा, तेरे। ५. पूँछते हो। ६. उर में, हृदय में। ७, मन में। ८. धारी, धारण करनेवाले। ६. मांगना-याचना प्रार्थना करना।

"क्यु बीसरायो गोरी पूरब देस ? ।
पाप तणउ तिहां नहीं प्रवेस ॥
अति चतुराई दीसइ घणी ।
गंगा गया छै तीरथ योग ॥
बाणारसी तिहां परसजे[१] ।
तिणि दरसण जाई पतिग[२] न्हासि" ॥१०॥

"पूरब देस को पूरब्या लोक[३] ।
पान फूलां तणउ तुं लहइ भोग ॥
कण संचइ कुकस[४] भखइ ।
अति चतुराई राजा गढ ग्वालेर ॥
गोरड़ी जेसलमेर की ।
भोगी लोक दखण को देस ॥११॥

जनम हुवउ थारउ मारू[५] कइ देस ।
राज कुंवरि अति रूप असेस ॥
रूप नीरोपमी[६] मेदनी[७] ।
आछा कापड़ झीणइ लंक ॥
ललथांगी[८] घन कूंचली ।
अहिरघ[९] वाला, निर्मल दंत ॥१२॥

---

१. परसती–पूजन करती । २. पातक, पाप । ३. लोग । ४. कूकस, अभक्ष्य, निकृष्ट पदार्थ । ५. मारु मारवाड़ (एक देश) ६. निरुपम । ७. पृथ्वी । ८. लोलाँगी–ललितांगी–सुन्दर अंगवाली । ९. अहितुल्य, नागिन सी लटें (अलकें) ।

कूंवर कहई "सुणी ! साभन्या राव ! ।
कांई स्वामी तु उलगई[1] जाई ? ॥
कह्यउ हमारुउ जइ सुणउ ।
थारइ छइ साठि अंतेवरी नारि" ॥
कर जोड़े धन वीनवइ ।
"राजकुंवरी निति भोगवि राय" ॥१३॥
रावइ कहइ "सुणी ! राजकुमारि ।
दूमनी काई हीयउइ वर नारि ॥
कह्यउ हमारो जउ सुणइ ।
आंणि सूं[2] कोड़ि-टकाउल – हार ॥
देस उड़ीसइ गम करूं ।
जाई जुहारूं जादवराई" ॥१४॥
'रहि रहि राव ओलगी तू जाई ।
माहरी गइली[3] तुं करह[4] पठाई ॥
जाईस पीहर आपणइ ।
आंणिसु अरथ नइ दरब भंडार ॥
आणिसूं हीरा पाथरी ।
मांडव सरसीहु आणि सूं धार" ॥१५॥
"रहि रहि मूरख न बोलि अयाण ।
कउण देसी तोहि मंडव धार ? ॥

---

१. परदेश, अलग । २. लाऊंगा (आनयिष्यामि) ३. गंग्री, सवारी
४. ऊँट ।

कहउ हमारउ जै सूणइं ।
जइ घणां रइहस्यां तो मास वि च्यार ॥
देव जुहारे आवस्यां[1] ।
आवौऊँ सासपसार[2] मां राजकुंमार ॥१६॥

मइ धणी ! थार मिलहीय आस" ।
"मइला[3] राजा थारउ कीसउ हो वेसास ॥
तो हूं दासी करि गीणी ।
सगा सुणी जी मांहि ना गमीमा[4] ॥
जीवत ही मुआं वड़इ[5] ।
वालूं[6] लोभी हूं थारा दाम[7]" ॥१७॥

"कड़वा बोल न बोलीस नारि ! ।
तुं मो मेलहसी चित विसारि ॥
जीभ न जीभ विगोयनो[8] ।
दव का दाधा कुपली मेल्ही[9] ॥
जीभ का दाधा नु पांगूरई[10]" ।
'नाल्ह' कहइ सुणाजइ सब कोई ॥१८॥

---

१. आऊंगा (आगमिष्यामि) । २. झटपट में, शीघ्र, (सांझ सवेरे) । ३. मुझको । ४. लाना (जी में मत लाना) । ५. श्रेष्ठ हैं, जीने से मरना अच्छा है । ६. बात की इच्छुक हूँ । ७. जाल-फंदा । ८. बात से बात नहीं छिप सकती । बातें बनाने से बात नहीं बन सकती । राजमती के व्यंग के विषय में कहता है । ९. अग्नि का जला (वृक्ष) कोपल फेंक सकता है (पर वचन का जला आदमी नहीं) । १०. पनपता है, बचता है ।

पंच सखी मीली वइठी छुई आई।
"निगुणी! गुण होई तो प्रीव क्युं जाई ? ॥
फूल पगर जू गाहजइ[1]।
थारउ आंचल वंध्यो नाह कुं जाई ? ॥१९॥
"राई[2] नहीं, सखी! भइंस पीडार[3]।
अस्त्रीय चरित्र उलिषई[4] ही गंवार ॥
लाख चरित्र आगइं मइं कीया।
चोली खालि दीखाल्या छइ गात ॥
तउ पती न उवालहो[5]।
नीहंचइ[6] सषी! ओलिग जाईण हार" ॥२०॥
पौलि वड़ी प्रीय वइठउ छइ खाट।
आगणौ तुरीय पलांरायां छइ घाट ॥
'कमल-बदन बिलखी हुई।
अंगइ दाह न हिये वैराग ॥
कामनि अंग न आलगेह[7]।
बरस दोई स्वामी उलगि निवारि[8]" ॥२१॥
राई कहई "सुणि हो पड़ीहार[9]।
वेगि पलांण भलाई[10] तुषार ॥

---

१. फूल पगड़ी में जैसे लगा रहता है उसी प्रकार प्रिय के साथ लगा रहे। गहना= ग्रहण) पकड़ना। २. रानी। ३. पेंडार (फणी) सर्प। ४. उल्लेख करते हैं=लिखते हैं। ५. उबला=पसीजा। ६. निश्चय। ७. अच्छा लगता है। ८. मत जा। ९. प्रतिहार। १०. भले, अच्छे घोड़े।

चचल चपल पलाणजइ ।
ईसा तुरीय दीठा तिणि ठाई ॥
कर जोड़ी धन वीनमइ[1] ।
"मुह मरी नीसर[2] कै औलगि जाई" ॥३२॥

राव कहइ "सुणि राजकुंमार ।
दूमनी[3] काई हीयड़इ[4] वरनारिं ॥
कह्यो हमारउ जै सुणइं ।
येक बार रहस्युं खटमास ॥
देव जुहारे[5] आवस्युं[6] ।
ते[7] छइ त्रिभुंवन-मुगति-दातार" ॥२३॥

राई कुंवरि बोलइ ईक चिंत ।
वीप्र हुंकारे[8] वेग तुरंत ॥
आवीयो प्रोहित राव को ।
"पाव्या ? हु थारे गुणदास ॥
देई [9]सचा वर वरसणइं ।
महूरत देई वीर ! कातिग मास" ॥२४॥

---

१. विनती करती है । २. मरी निकाल कर=मरी समझ कर । निसारना (निःसरण) वीसर-पाठ० । ३. दुमनी, दुखित (विमनस) । ४. हृदय । ५. पूजन कर के । ६. आऊँगा-[आगमिष्यासि] ७. वह-देवता ८. हुंकारना-हंकारना-बुलाना । ९. सच्चा ।

"पांड्या ! वीरा ! हूं थारी गुण दास ।
दिन दस महूरत मौड़उ[1] परगास[2] ॥
मास एक वीलंबावज्यो[3] ।
दूजइ फेरई[4] प्रयि समझाई ॥
देसइ[5] हाथ कउ मुंदड़उ[6] ।
[7]सोवन-सिंगी नई कपिला गाई" ॥२५॥

पाड्या ! तोहि बोलावइ छइ राय ।
ले पतड़ो[8] जोसी वेगो आई ॥
सूदन कहै रूड़ा [9]जोईसी ।
वाचइ पतड़ो बोलइ छइ साँच ॥
मास एकां [10]लगी दिन नहीं ।
तिथि तेरस वार सोमवार ॥
चंद्रई ग्यारमो देव है ।
तीसरो चंद्र छइ खोडीला"-जोगि ॥
काल जोगण भद्रा नहीं ।
पुष नछत्र नई[12] कातिक मास ॥

---

१. मोड़ कर निकाल=देर से निकाल । २. प्रकाश-दिखा, बता । ३. विलमाना=देर करना । ४. फिर भी । ५. दूंगा-[दास्यामि] ६. मुंदरी [मुद्रिका] । ७. सोने की सींग वाली । सोने से सींग मढ़ी । ८. पत्रा=पंचांग । ९. ज्योतिषी । १०. तक । लग । अथवा लंगी [लग्न] मुहूर्त । ११. खोडीला=दूषित योग । १२. नक्षत्र ।

जीण[1] दिन स्वामी थे[2] गम करउ।
ज्युं घणी आगइ पूरइ हो आस" ॥२६॥
"पाड्यो कहु कइ परतिष (इ) भांड[3]।
झूठ कथइ छइ नै बोलइ छइ मांड[4] ॥
राज-कुली महूरत कीसउ[5]?।
म्हां तो ओलग चालस्यां आज ॥
कह्यो हमारउ जोसी! जइ सुणई।
जाइ उडसिई[6] पूजूं जगनाथ ॥२७॥
पाड्यां हूं तो ओलग जाऊं।
जाई उड़ीसेइ बात कहांउ ॥
कह्यौ हमारौ जइ सूणइं।
मो हइ घर की गोरड़ी कह्यो कुबोल ॥
मोहि न मंदिर आलिगइ।
जाइ उडीसइ तइ राखस्युं बोल[7] ॥२८॥
"आव दमोदर वइसि नु पाट।
कहि न वीरा म्हां का पीउ की बात" ॥
"परौ हो अयांणउ उफिरई[7]।
आठमो ठांव रवि वारमो राहु ॥

---

१. उस दिन। २. तुम। ३. प्रत्यक्ष भांड=तुझे पांडे कहूँ या प्रत्यक्ष भाँड़ कहूँ। ४. मांड कर, मंडन करके, बात बना कर। ५. राजकुल के लिये महूर्त कैसा (कीसउ)। ६. उडीसे में। ७. उफनाता है=जल्दी करता है।

अह गणतो अतिहि 'वीरा[1]"।
सिर धुणी मूका[2] छइ धाह ॥२९॥
"दासी होई करि निरवहुं[3]।
पाय पषारसुं ढोलसुं[4] वाई[5] ॥
पुहर[6] पुहर प्रति जागसुं।
इण हर सेवस्युं आपणउ नाह" ॥३०॥

"गहिली[7] है, त्री तोहइ लागी छई वाय।
अस्तीय ले[8] कोई उलगि[9] जाई ? ॥
गहिली मुंधउ तुं वावली।
चंद क्युं कूडइ[10] ढांकाणउ जाई ? ॥
रतन छिपायो क्युं रहई ?।
आगई वाचा को हीणो छइ पूरब्यो राइ[11]" ॥३१॥

चालइ उलिगाणा, धन जाण न देहि।
"कै मोहि मारि, कइ साथि तु लेहि" ॥
अंचल गहतै धन रही।
एक इकेली जोवन-पूर ॥

---

१. बुरा। २. मूकना, छोड़ना, धाह मूकना, धाड़ छोड़ कर रोना। ३. निर्वाह करूंगी। ४. ढुलाऊँगी=झलूंगी। ५. वायु = हवा। ६. प्रहर। ७. गहिली। भूत से ग्रस्त की हुई, पागल। ८. लेकर। ९. परदेश। १०. कूड़ा=चंद्र कैसे कूड़े में छिपाया जा सकता है। ११. पूर्व देश के राजे वचन के हीन हैं = धोखा देते हैं। उनका विश्वास करना ठीक नहीं।

सूनी सेज वीदेस पीउ।
दुइ दुख 'नाल्ह' कहइगो [1]कूण ? ॥३२॥

"छोड़ि अंचल धन मोहि दइ जाण।
वरस दोय रहुँ तो देव की आण[2]॥
"कठिण पयोहर दिव करूँ"।
हंसि करि गोरी पूछइ छइ नाह॥
'ए दिव [स] छइ पीउ! आकरा[3]।
ईण दिव थी सुर नर हुआ छार[4]" ॥३३॥

उलिगाणां दिन लेषइ मत लाई।
दिन दिन एक लषो[5] णौ[6] जाई॥
जाई जोवन, धन मसलै[8] हाथ।
जोवन नवि गिणइ दीह[9] ने राति॥
जोवन राख्यो नु रहई।
जोबन प्रिय विण होसीय छार॥३४॥

मे धणी! थारी मेल्ही आस।
जोगणी होइ सेवुं वन वास"॥

---

१. कौन २. देव की आण=देव की कसम। ३. आकरा=क्रूर, बुरे। ४. नष्ट। अंष्ट (योवन में) अर्थात् इस दिन में (युवावस्था में) सुर नर भी असत्य होते हैं, विश्वास योग्य नहीं रहते। ५. लाख। ६. लौं, समान। ८. मलै-हाथ मलना, पछताना। ६. दिन, दिवस (दीह)।

"कइं तप तपुंहुं वाणारसी।
कइ जाइ भेरव[1]×पउण[2] पड़ाई॥
कइं पंडव[3] पंथ संचरूं।
कइ जाय सेवसूं गंग-दूवार॥
कह्यउ हमारु जइ सुणइं।
उलग स्वामी! परियजी[4] वार[5]" ॥३५॥

उलगी जांण सजौ समदाव।
हंसि कर गोरी पूछइ राव॥
'सात वरस पेहलो रह्यो।
चीरी[6] जणह न मोकल्यै[7] कोई॥
लाहो[8] लेता जनम गो।
तुय[9] करै तिसी तोथी होई" ॥३६॥

अंचल गह तिय वइसा[10]ड़ी छइ आणी।
हंसि गल लाई भोजी सो काण[11]॥

---

१. भैरव। २. पड़पड़ाऊँगी=मरूँगी। ३. पांडवों के पथ का अनुसरण करूँ=हिमालय प्रस्थान करूँ। ४. परित्याग कीजिये=छोड़िये। ५. दिन, प्रस्थान करने की तिथि। ६. चीठी=पत्र। ७. भेजी। ८. लाभ। ९. तू कर जैसा तुझे भावे। १०. बैठाई ११. सोकाण=सहित कान=(मर्यादा)।

× लोग भैरव का नाम लेकर पहाड़ पर से या ऊँचे स्थान से कूद पड़ते थे और समझते थे कि इस प्रकार मरने से मोक्ष मिलेगा। काशी में 'करवट' भी लोग इसी विश्वास से लेते थे।

आज ऊलंभोउ[1] भांजवा।
"या घनवीरा! थारइ हिये न समाई॥
कै या बोल की आकरी?।
कौरो दुख देवर! उलग जाई" ॥३७॥
उभी भावज दइ छइ सीष।
"रतन[3] कचौलौ राय सांपजै भीष॥
ते[4] नाउं पगसूं ठेलीजै।
इसी न रायां[5] तणौ नहींच[6] अबास॥
ईसीय न देवल पूतली।
नयण सलूंणां वचन सुमीत॥
ईसीय न खाती[7] कौ[8] घड़इ[9]।
इसी अस्त्री नहीं रवि तलै दीठ" ॥३८॥
उभी भावज सींह-दुवार।
"सौलहौ सोंनो राजा कांइ करौ छार?॥
मरण जीवन छै पग तलइं।
कनक कचोली उरी भयो भार[9]" ॥

---

१. ऊलंभौ=उपालंभ दूँ। २. भांजवा=भागते को-[भाजना=भागना]। ३. रत्न की कटोरी राय (राजा) ने सौंपा भिक्षा में [भोज ने] रत्न की कटोरी (राजमती) दान दी तुझे [व्याह में]। ४. उसे मत पैर से ठेल। ५. रायां=[राज्ञाम्]=राजाओं का, ऐसी न होगी राजाओं के महल में। ६. निश्चय। ७. खाती=मूर्तिकार। ८. कोई। ९. कनक की कटोरी। (राजमती) हुई हृदय का बोझ।
१३. घड़इ-घटति=रचता है, बनाता है, गढ़ता है।

'हेडुउँ[1] का तुरीयं ज्युं ।
तुये दिन दिन हाथ फेरनइ सौ वार" ॥३६॥
"रही ! रही ! भावज वचन तूं वोल ।
राज-कुंवर मोहइ कह्यो हो कुवोल ॥
मोहि रयणो दिन [न] विसराइ ।
राज कुंवर आवे जो साथ ॥
तो विस खाये मरूं ।
वारइ वरस पूजूं जगनाथ" ॥४०॥
पंच सखी मिली वइठी छइ आंण ।
"अरथ दरव लियां[2] जीव की हांण ॥
तोहि वूरो धणी मौ वीरौ ।
तोहि वूरो थारो घरि जाई[3] ॥
अरथ दरिव गाड्यो रहई ।
जीण सोरज्यो होई तेहीज[4] खाय" ॥४१॥
राजमती ! तुं भोज कुमार ! ।
तो सम नि नहीं ईणीई संसार ॥
यान समारो टाहुली[5] ।
चोवा चंदन अंग सुहाई ॥

---

१. भाड़े का टट्टू. तुरीय=तुरग । २. लिये = वास्ते । ३. घर जाता है=घर नष्ट होता है । ४, तेहीज-तेहिये-तेहिकां-उन्हीं को ।
५. टहल करने वाली=नोकरानी=टहलुई ।

सेज पहुंती राव की।
देही आल्यंगन वीसलराय ॥४२॥
'चटकला[1], मटकला मोही न सुहाई।
धन कइ हीयडइ हाथ न लाई॥
हाथ न लाई प्रीय स्त्री-मरम[2] मां।
निर्गुणा! थारो कीसो ही वेसास[3]॥
करकी[4] बांधू हूं दिन गिणू रोवती[5]।
मेल्ही कांई [तूं] ओलगि जाई" ॥४३॥

कूंवरी कहई "सुणी! सांभस्या राव!।
सीस[6] हर पूनम पूरो हो जाई॥
कला संपूरण [7]भोगवइ।
चोवा चंदन तिलक सोहाई॥
चरित्र चउरासी[8] हू आलवूं[9]।
बिल बिलती[10] कांई मेल्हे जाई" ॥४४॥

"आज सखी मोहि विहांण।
पीड़वा[11] कइ दिन कहइ छइ जाण॥

---

१. चटकमटक=बनावट। २. मर्म स्थान में (स्तन) ३. बेसास= विश्वास। ४. हाथ की बांधी=ब्याह में हाथ पकड़ाई हुई। ५. रोवती= रोती हुई। ६. शशि। ७. सम्पूर्ण कलाओं को भोगता है [शशि]। ८. चौरासी—८४। काम शास्त्र के ८४ आसन। ९. आलंवू=आलंबन करूँ=आचरण करूँ। १०. बिलखती हुई=रोती हुई। ११. परिवा।

"आज नीरालइ सीय[1] पड्यो।
च्यारि पहूर मांही नू मीली[2] अंख॥
उछइ[3] पांणी ज्यूं माछली।
जिव जांगु तिव उठुछुं झंपि[4] ॥४५॥

बीज[5] अंध्यारी नइ सुकजोवार।
महूरत नहीया कहइ वर-नार॥
महा — उपग्रह[6] उपजइ।
जै नर उलग ईंण महूरत जाई॥
आवण का सांसा[7] पड़ई।
जाणि हीमालइ राजा गलीया हो जाई॥४६॥

तीजं[8] घरि घरि मंगलचार।
चिहुँ दिसी कामनी करई हो सयंगार॥
रमइ सहेली काजली[9]।
घरि घरि कामिनी मड़इ[10] छद खेल॥
चंद्र वदन विलखी फिरई।
स्नेह[11] तुठी राजा औलगी[12] मेलही॥४७॥

१, शीत=सीय। २. मीली-मेली=आँख मेलना, आँख लगाना। ३. ओछे पानी में। ४. झंपि उठना=चौंक उठना। ब्रजभाषा का 'जकना'। ५. द्विज=द्वितीया। ६. उपद्रव। ७. सांसा—संशय। ८. तीज=तृतीया। ९. कजली-[भाद्रपद की]। १०. खेल माडना=खेल रचना। ११. स्नेह से तुष्ट हो। १२. ओलगी=परदेश जाना!

"चउथ अंधारी [दि] नई मंगलवार ।
चन्द उजालउ घरि घरि बारि ॥
वरति[1] करइ घरि आपणइँ ।
चउथ जुहारउ सांमरया – राव ॥
वचन हमारउ मानज्यो ।
हरिष के पूजो ईणी ठाई ॥४८॥

पंचम कउ दिन पहूतो छइ आई ।
अउत[2] होइ घरि छौड़ो हो राय ॥
तु अजमेरां राजीयो ।
पुत्र कलत्र सहू परिवार ॥
सईभंर[3] थांणउ बइसणइं[4] ।
राई चहुवांण ! औलगि नीवार[5]" ॥४६॥

"रही [रही] कांमणी अंचल छोड़ी ।
औलग जाऊँ हूँ अंऊ न बहोड़ी ॥
देस उड़ीसइ गम करूँ ।"
ये वचन बोल्या तिणि ठाई ॥
छउ सातम दिन अवीयो[6] ।
निहचइ औलगि चालण-हार ॥५०॥

---

१. व्रत=उपवास । २. अउत=अयुक्त, अनुचित । ३. सांभर । ४. बइसणइँ=बैठ कर । ५. निवार=रोक । ६. आवीयो=आने पर ।

राज-वचन सुणि राज-कुंमार।
पलयंग[1] छोड़ि धरती पड़ी नारि॥
बेटी राजा भोज की।
उठइ[2] उछंकि लेइ अंकमाय[3]॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ।
सातम को दिन रहीयौ हो राव!॥५१॥

चंद्र--वदन दीठी धन-नाह।
सीस हरण जांणे गलीयो छइ राह[4]॥
आसू ढाल्या मोर ज्यूं[5]।
कामनी कंत मिल्या तिणी ठाईं॥
आठमकउ[6] दिन आवीऊ।
वरत करइ घरि वीसलराइ॥५२॥

नवमी घरि घरि मंगल होईं।
घरि घरि पूज करइ सब कोइ॥
नव दिन पूंगा[7] नउरतां[8]।
वलि वाकुल[9] पूजा रचौ ठाईं॥
भोग लीयइ जगदीस्वरी।
ईण परिपूजइ छइ वीसलराय॥५३॥

---

१. पलंग=परियंक। २. उठइ=उठा कर। ३. अंकमाय – अंकवार=आलिंगन। ४. शशिहरण किया मानों राहु ने। ५. मोर के समान ६. आठवाँ–अष्टम् [कउ–'क' प्रत्यय का अष्ट रूप-यथा रामकः रामकउ-राम का]। ७. पूगा, पूगा–पूजा (पूजना पूर्ण होना)। ८. नवरात्र। ९. वलि वाकुल–कुल का पूजन–कुल देवताओं की पूजा।

दसराहा को दिन पहूँतो छइ आई ।
तुरीय पलारायां छइ ठायै हौ ठांई ॥
चउरास्या सहू आवीया ।
बाजा बाजहि घूरइहि निसांण ॥
राई अहेड़इ[1] चालियो ।
उड़ीय खेह नइ[2] सूझई भाण ॥५४॥
हर-बासर[3] दिन पहूंतो छइ आय ।
चंद्र-वदन घन लागइ छै पाय ॥
बरित करुं घरि आपणंइ ।
पारणो कीधो द्वादशी जोग ॥
दोई दिन स्वामी थे बिलंबज्यो[4] ।
तेरस कइ दिन करज्यो हो भोग ॥५५॥
चवदश वरत करई भूपाल ।
सांमही छींक[5] हणेइ कपाल[6] ॥
चउरास्या सहू बोलीया ।
सउण[7] विचारै वीसलराय ॥
कुशल ओलगि करि वाहुड़ां ।
अमावस को दिन पहुंतो छइ आय ॥

---

१. अहेर=मृगया, शिकार । २. नहीं । ३. हर-हरि-शिव, रुद्र । रुद्र ग्यारह हैं, अतः 'हर' का अर्थ होगा ग्यारह । वासर=दिन-तिथि; हर-वासर=एकादशी । ४. विलंब कीजिये । ५. छींक । ६. कपाल=कपाल पर लिखा हुआ, भाग्य । ७. शकुन, शुभ अशुभ का विचार ।

पीतरपंड[1] भरावइ छइ राई।
आव्यो प्रोहित राव को॥
सराध[2] सराव्यो वीससराय।
भोजन भगति राणि करइ॥
आगलि बइसि जिमायो छइ नाह॥५६॥

"रहि रहि कांमणी प्रीत नु मंड।
उलगि जांउ पहुवि[3] घर छंडि॥
राज राज मुका[4] सैंभर तणो।
सेवइ राजा सयल[5] परिवार॥
कुसल उलग करै वाहुडूया।
जब लगि रूड़ा[6] रहज्यो नारि"॥५७॥

"सांभलि बात कहुं सुणि नाह॥
वरस एक तूं ओलग नु जाह॥
उलग कहीय छइ एकलां[7]।
दूजण[8] सरिस कहइ घर वास॥
राजा रिधि[9] छइ आपणइं।
ईण परिपूरजई[10] मन की आस"॥५८॥

---

१. पितृपिण्ड–पिंडदान २. श्राद्ध। ३. पृथ्वी–पुहुमी–भूमि–राज्य। ४. मुका–(मुंचितः) छोड़ा-त्याग दिया। ५. सयल–अच्छी तरह से (सती-साध्वी) ६. रूडा, सकल सब। ७. एकलां–जो अकेला हो अर्थात् सन्यासी को ८. दूजण-दो जन हैं जो, दुकेला-अर्थात् गृहस्थ, विवाहित। ९. रिद्धि–वैभव। १०. परिपूजई–परिपूर्ण कर–संतुष्ट हो।

"ओलग जाण की खरिय[1] जगीस[2]।
राज—कुंवर धन देसउं सीख॥
राज माहंइ ईणि परिरहई[3]।
राज चलावकै[4] और परधान॥
ईण सुं विरोध नहुं बोलिजइ।
नावी म साहणी[5] सुघराई मांन॥
दासी सरिसा किणा हंसोउ।
सूनइ रावलई[6] तु मती जाई" ॥५९॥

"उलग जांण की परीय तो सार[7]।
राजनी[8] गति जिसी षंडानि[9] धार॥
मूरख लोक नू जाणही।
चोर जुवारि अनइ[10] कलाल[11]॥
ईण सू हंसि न बोलज्यो।
राजनि उइ भीतरी गोढ़[12]॥
कान निड़ा[13] पग दुर रहा।
मुहड़ा आडों दीजो[14] हाथ॥

१. खरीय—खरी—बड़ी। २. जगीस-जिगासा-उत्सुकता। ३. व्यवहार करना। ४. चलाने वाले को—मंत्री। ५. साहणी—घोड़-साल का दरोगा। ६. सूना रावल—निर्जन महल। ७. जल्दी। ८. राज की। ९. खड्ग की धार=तलवार की धार, विषम, कठिन। १०. अन्यायी, नृशंस। ११. कलाल=मदिरा बेंचनेवाले। १२. गाँठ-ग्रंथि-कपट। १३. निड़ा= नियर=निकट। १४. मुख पर हाथ देना=अधिक मत बोलना।

साँची झूठी मत कहइ।
राज-सभा माँहि साँची वात" ॥६०॥

साधन ऊभी टेकि किवाड़ि।
रतन-कुंडल, [के]सिर तिलक लीलाड़॥
जाल[1] जलाखो —— गोरड़ी।
सोवन पायल पय[2] झलकंति॥
रतन जड़ित सिर राखड़ी[3]।
सवि गति वीसरी थारी च्यंत[4]॥
रात दिवस चालण कहइ।
नित दिन उगती आंखु दीनतो[5] ॥६१॥

आड़ो[6] वोल खरो पछिताय।
नाह बोलावउ धन कवण मुखि जाइ॥
मइ कांई[7] नवि बोलियो।
देवर मनावई अरी वड़ो जेठ॥
हरि पूजो होइ[8] वाहुड़ो।
हुइ गोरी सुं छेहली[9] भेट ॥६२॥

---

१. जल से पूर्ण (छलछलाई) हुई आँखें गोरी की। २. पग=पैर। ३. राखड़ी=आखड़ी=आड़=एक आभूषण। ४. थारी च्यन्त=तेरी चिंता में। ५. दीनता से। ६. आड़ो=आड़ा, टेढ़ा, कड़ा। ७. कांई=कुछ (सं०–कानि)। ८. होइ=होने पर। ९. पिछली=अन्तिम।

आंचली गैहती[१] बइसाढ़ी छइ आंण।
हँसि गल लाइ नई भाँजिय[२] कांण[३] ॥
सा धन रोवइ पीवसुँ !
"गिरवरधणी ! तइ नु राखी मान ॥
यक सरां[४] घर आवज्यो।
था विण नीहचइ होई घरि रान[५]" ॥६३॥
"उठी ! उठी ! गोरी करि सिंगार।
लाखणउ कांचवउ[६] नवसर हार ॥
पहिर नु चोली नवरंगी।
बावन[७] चन्दन अंग सउहाई[८] ॥
चित फाटा मन उचट्या।
रूठी गोरी रहइ गलिलाई[९] ॥६४॥
लांव[१०] डग हेला[११] हेला उठिवार।
आगणई तुरीय पलांराया छै वार[१२] ॥
पैहर न आछी चूनड़ी।
कुं कुं चन्दन खौल[१३] कराई ॥

---

१. तिंय, स्त्री। २. भाँजिय (भंजितः) भंग की। ३. काण, कान = मर्यादा। ४. सरां = वार। ५. रान = अरण्य, जंगल, उजाड़।
६. कांचवउ=कंचुकी, चोली। ७. उत्तम। ८. सोहाई=शोभा देता ९. गलिलाना=चिल्लाना। १०. लम्बा, डग=कदम ११, हेला=जल्दी। १२. द्वार। १३. खौर=टीका।

उठी सवारां[1] चालस्यां[2] ।"
गाढ़ी रोई गोरी गलिलाई ॥६५॥
तूरी सभा बइठो सांभरयो-राव ।
चउरास्या सहू लीयो बोलाई ॥
माई तेड़ावी[3] राव की ।
सवी मिली मंत्र कियो तिणि ठाई ॥
कहेउ हमारउ जइ सुणो ।
"कोक[4] भतीजौ सूंपजए राज" ॥६६॥
राइ कहई "भली हुई आजि ।"
कोकि भतीजौ सौंप्यौउ राज ॥
थाप्या साहण वर तुरी ।
थाप्या मंदिर घरि कविलास ॥
थाप्या चौरा चउखंडि ।
थाप्या सांभरि का रीणवास ॥
राजा चाल्यो उलगइं ।
सहू अंतेवरी[5] मेल्ही नीसास[6] ॥६७॥
ओलग चाल्यो धन कउ नाह ।
सहू अंतेवरी झूरई[7] राउँ ॥

---

१. सवेरे । २. चलूंगा [चलिष्यामि] । ३. बुलाई गई । ४. नाम भतीजे का । ५. अंतःपुर की स्त्रियाँ । ६. निःश्वास । ७. राजा के लिए दुखित होती है ।

झूरई[1] सहोवर[2] राव का।
कुली छतीसइ झूरइ सोही[3] ॥
धार झूरई राजा भोज सूं[4] ।
सांभरया राव सो पड़्यो विछोह ॥६८॥
झूरइ राइ वइहनंडी अंकन[5]-कुंवार ।
महाजन झूरई राई सांधार ॥
माता झूरइ राव की।
झूरइ बंभण भाट वीयास ॥
येकइं बोल कइं करिणाइं ।
चाल्यो राजा मेल्ही निसास ॥६९॥
चाल्यो ठाकुराला पलांणि ।
सावकरण[6] दियौ वीरभांण[7] ॥
हंसवाहण[8] उदई-स्यगहइ[9] ।
गंगाजल[10] अचला[11] चहुवाण ॥
भूतोभेरव[12] ... भाट कइ[13] ।
काली[14]-कंठ दीयो वछराज[15] ॥
कोड़ीधज[16] चढऊ देवजी[17] ।
वइरीसाल[18] दीयो अषइराज[19] ॥७०॥
अभयचंद[20] दियो राई पंख[21] ।
सकत[22]-स्यंघहै दीयो नीलड़ो[23]-हंस ॥

---

१. दुखित होती हैं। २. सहोदर। ३. सोहों=सभी। ४. सहित। ५. अकन कुंवरि (नाम)। ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २१, २३, नाम घोड़ों के। ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २०, २२, नाम सरदारों के।

मोतीचुर[1] नगराग[2]-हइ ।
रायमहल[3] दीयउ छइ कलियाण[4] ॥
भमर[5] पलाणंयो देव[6]-हइं ।
सेहस[7]-कला जगदे[8]-परमार ॥७१॥

प्रीय तोउ चाल्यो तुरीय पलाण ।
सीगणि[9] जोड़लीयां करिवांण[10] ॥
आसण[11] — पंडउ झलभलई ।
मोचड़ी घाली[12] अणीयाला[13]-सेल ॥
चढि घोड़ो लीयउ चावकउ[14] ।
साधन गयो विललंतीय[15] मेल्हि ॥७२॥
चाला चउरास्या न लावी छइ वार ।
आड़ी आवज्यो इंधणहार[16] ॥
होज्यो देवी[17] जीमणी[18] ।
चूड[19] मल्हा लोवा[20] सीय-माल[21] ॥
चाल्यो राजा जाई भोवाल ॥७३॥

१, ४, ५, ७—नाम घोड़ों के । २, ३, ६, ८ नाम सर्दारों के । ९, सीकल जिसमें तलवार लटकाई जाती है । १०. कृपाण, तलवार ११. आसन, जीन, पलानी, १२. घाली=डाली । १३. अनी वाले शस्त्र (भाले) १४. चाबुक, कोड़े । १५. बिलखती हुई—रोती हुई । १६. गदहा (?) गदहे पर लाद कर ईंधन बेचते हैं, या लकड़हारा । १७. देवी=सोन-चिड़ी=(एक पक्षि) । १८. दाहनी, जीमणी=जिससे जीमते, खाते हैं । १९. चूड़-चूड़ा । २०. लोमड़ी । २१. शृगाल ।

"सहस-फणालइ[1] काल भूयंग ।
जीमणा थी उतरउ वांमेइ अंग ॥
रुपि – चंगा, विस – आगला ।"
दोय कर जोड़े वीनमै मुंध[2] ॥
"उलिगणउ घरि राखज्यो ।
जु म्हां को प्रीय पाछौ बाहुड़इ ।
सोवन कचौली तोही पावस्युं[3] दूध ॥७४॥
लावड़ो[4], हरणइ, सिंह, सियाल ।
पहुँत समीहोज्यो लोवा, सीयमाल ॥"
धन हरिणाखी[5] ईम कहई ।
"निहचई औलग चालणहार ॥
डावउ[6] करेवउ[7] करकरई[8] ।
महा आपसुकन होज्यो प ! भुवाल" ॥७५॥
चाल्यो उलीगांणो नग्र मंझारि ।
आड़ी आवज्यो ईधणहार ॥
साँड तटूकज्यो[9] जीमउइ अंग ।
सांमही जोगणी[10] काल भुयंग ॥
वाट काटे मंजारड़ी[11] ।
सामही छींक हणई कपाल ॥

---

१. फणावाला । २. मुग्धा,=स्त्री । ३. पास्यामि=पिलाऊंगी । ४. लोमड़ी । ५. हरिणाचि=मृगनयनी । ६. बाँये । ७. काक, कारव, कौआ । ८. कटकटाता है । ९. तटूकना=बोलना । १०. जोगिनी=नागिनी (?) ११. बिल्ली, मार्जारी ।

आडी लुकडी[1] आवज्यो ।
गोरड़ी कउ प्रीय पाछो हो वाल ॥७६॥
"नीर[2]पर्वति गोरी ! कइ चलइ पाय ? ।
गंग अपूठी[3] क्युं वहई ? ॥
ध्रुतारो[4] कम छंडइ ठामि[5] ? ।
सूरज पछिम किम उगमई ? ॥
उलीग चालतां क्युं रह्यो आजि" ? ॥७७॥
ड़ावा सारस पहुवि[6] सियाल ।
जीमणी होज्यो हरिण की माल ॥
डांवी देवी बोली तिणि ठाई ।
डावो[7] सांड तड़ूकतो जाई ॥
पूरण - कलस सांम्हो हुओ ।
सुकन सुणी हरीष्यो मन मांहि ॥
चढ़ि मंदर धन जोइयो[8] ।
कूसल ओलग करि आवे राव ॥७८॥
छोडइ छइ तोड़उ नइ जेसलमेर ।
गोरड़ी मेल्ही गढ़ अजमेर ॥
छाड्यो नयर विसाल[9] छो ।
छाड्या सांभरि का रिणवास ॥

१. लोंकड़ी=लोमड़ी । २. नीर=पानी-पर्वत पर क्यों चढ़े । ३. अपूठी=(अ)+पूठे, पीछे, उलटे । ४. ध्रुव तारा । ५. स्थान-ठाँव । ६. पूर्व=सामने । ७. दांवो-बाँए । ८. जोइना=देखना । ९. विशाल ।

येक बलावे[1] वाहुड्या ।
नाह उतरीगो नदीय बनास[2] ॥७६॥
नाह उतरीगो नदीय बनास ।
नारि का नाड़ि नू, हीयउ नै सांस ॥
घन भौमूती[3] भुइ पड़ी ।
चीर सभाल्या[4] नुं पीवई नीर ॥
जांणे हीयणइ हरणी हणी ।
ओको[5] गात उघाड़िज्यो[6] जोवन पूर ॥८०॥
लांघी चांवल[7] पीलो हो खाल ।
डांवी देवी जीमणी [सिय] माल ॥
डांवी महासत्ति[8]* फैकरइ[9] ।
डांवा सारस, स्यंघ[10], सियाल ॥
उठइ तुरीय खूंदावई[11] वीसल-राव ॥८१॥
साठ तुरीय पाखरया संजुत[12] ।
बीसल-दे साथहि वीहसंत[13] ॥

---

१. पहुँचा कर लौटा । २. राजपूताने की एक नदी जो अजमेर और चंवल नदी के बीच में है । ३. भयभीत होकर । ४. सँभालती है [सम+ भृ] ५. उसका । ६. उघड़ा-खुला है । ७. चंवल नदी । ८. महाशक्ति-शृगाली । ९. फैकरइ-रोती है । फैकरना-करुणा करके रोना । १०. सिंह । ११. खूंदाना-घोड़ा कुदाना-दौड़ाना । १२. संयुक्त । १३. विहसंत-हिनहिनाते हुए ।

* लोग कहते हैं कि महाशक्ति के मुख से आग निकलती है । इसे शृगाल से भिन्न एक जन्तु मानते हैं ।

जाई परभोमई[1] संचरयो।
कोई न जांणइ सांभरया-राव ॥
उलिगांणउं होई संचरयो।
देस उडीसइं पहुंता जाई ॥८२॥

राव उडीसइं पहुंतउ जाई।
देव जुहारे लागुं पाय ॥
धन दिहाड़उ आज कउ।
देव उठि दीयो चउगिणउ[2] मान ॥
मेल्ही चावर[3] बइसणइं[4]।
राव उडीसा को परधान ॥८३॥

राई प्रधानपणइं[5] रह्यो जाई।
चउरास्या सहू लागइ पाय ॥
देश देसां का राजिया।
देव कहइ "राजा! म्हारो तु वीर" ॥
मेल्ही[6] चांवर वइसणइं।
मनवंछित[7] भोजन अर चीर ॥८४॥

जे नर सुनइ संवाद संजूत।
अविचल लिछमी वरै[8] राज बहुत ॥

---

१. पराये भूमि में। २. चौगुना। ३. चँवर। ४. बैठक। ५. प्रधानपने-प्रधानता में। ६. मिला। ७. मन वाँछित-(इच्छित) ८ धरे-पावे, लहे।

'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
जू राणी सूं पड़इ विजोग॥
बीघन[1]-हरण जो वर दीयो।
पणिहु[2] बहोडू करूं संजोग॥
दूजौ षंड चय्यो[3] परिमाण।
जे नर सूणइ ते गंगा न्हाण॥
'नाल्ह' रसायण नर भणइ।
राजा रह्यो उड़ीसई जाय॥
बाग[4]-वांणी मो वर दीयो।
श्रृंगारी[5]-रसायण करूं बखाण॥८६॥

इति द्वितीय सर्ग।

---

१. विघ्न विदारण—[गणेश जी]। २. पुनरपि—फिर। ३. चर्या—कहा। ४. वाग-वाणी=सरस्वती। ५. श्रृंगार रस का काव्य।

तृतीय सर्ग

प्रीय बोलावै धन रोवती जाई।
सूनउ मंदिर मेल्हइ छै धाह[1] ॥
सा धन कुरलइ मोर ज्युं।
पांच पडोसण[2] बैठी छइ आय ॥
"ओ निसतान्यों[3] ज्या करि गयो।
दिवसनइं रात मौ चितातां[4] जाई ॥ १ ॥
पंच सखी मिली बइठी छइ आई।
काहरऊं[5] पीवौ न ऊपद[6] खाई ॥
दांत कष्ट बंध्यो गोरडी।
तो थी भली दमयंती नारि ॥
नल राजा मेल्हे गयो।
पुरीप[7] समो नहीं निगुण संसार" ॥ २ ॥
"रहि रहि बेहनड़ी[8] ! वच[9] न-तू रोई।
ले लोटीका[10] जल मुख धोई ॥
फठि रे हिया ! नीघालूवा[11]।
पाथरी घड़ी यो, कै[12] औघट[13] लोह ॥

१. धाह मारना—चिल्ला कर रोना। २. परोसिनें। ३. निस्सन्तान, निर्दयी। ४. चिताता—चिंतन करते हुए। ५. काढ़ा [क्वाथ]। ६. औषध। ७. पुरुष—आदमी। ८. बहन। ९. बोल। १०. लोटिया—एक पात्र-छोटा लोटा। ११. निगोटा—निर्लज्ज। १२. या। १३. घटा है—बना है लोहे का।

झरयझलीयो[१] फूटइ नहीं।
सगुणां प्रीतम तणो विछोह[२] ॥३॥
स्त्री जनम कांई दीयो हो! महेस?।
अवर जनम थारे घड़ा[३] हो नरेस॥
रानह[४] न सिरजी हरिणली[५]।
सुरह न सिरजी धीणु[६] गाई॥
वन—षंड काली कोईली।
वइसती अंब कइ[७] चंप की डालि।
वइसती दाख[८] बीजोरड़ी[९]।
इणि दुख झूरइ अवला वालि॥४॥
"आज सखी सपनतर[१०] दीठ।
राग[११] चूरे राजा पल्यंगे वईठ॥
ईसो हो झंझारो[१२] मइ झंषीयो[१३]।
जो हूं सोहीणइं[१४] जाणती साँच॥
हठि कर जातो[१५] राखती।
जब जागुं जीव पड़ी गयो दाह" ॥५॥

---

१. जर्जरित हो गया है २. वियोग—[विच्छेद]। ३. घड़ाँ—अधिक। ४. रानह-रान-[अरण्य] जंगल की। ५. हरिणी, [ली]—अल्पार्थक है। ६. धेनु। ७. कइ—या—[कै]। ८. दाख-(द्राक्षा)-अंगूर। ९. बी-द्वी-जोरडी-जोड़े अर्थात् अपने जोड़े के साथ। १०. स्वप्नांतर-स्वप्न में। ११. राग-रंग-प्रेम-(अर्थात् अनुराग में)। १२. झंझट में। १३. झंखी-जकी-दुखित हुई। १४. स्वप्न में भी। १५. जाते हुए को।

तोडर[1] पायल पइहरणौ पाय।
सोवंभ – घूंघरी वाजती जाई॥
रतन जड़ित की काँचली[2]।
औ कसी कंचूवउ परउ हो सुमीड़॥
दन्त दाड़िम-कुली[3] जी सी।
मुखी अमृत, जांणे याजै कै वीण॥६॥
ससि-वदनी जीत्यौ मात-गयंद।
आषड़ीया[4] ... ... रतनांलियां॥
भौहरा[5] जांणे भमर भमाय।
मूँग—फली सी आंगुली॥
कूसम—कली, कर—नख जीसा।
कनक कुंडल घज सोहइ कान॥
राय—आंगणि रांणी फिरई।
उणी सोलइ सइ रांणी कउ ऊतारयो मान॥७॥
"प्रीय तो चालीयो कातिग मास।
सूना मंदिर घर कविलास॥
सूना चउरा चोखण्डी।
नयण गमायो[6] पंथि सिर जाई॥

---

१. तोड़ा—एक आभूषण। २. कंचुकी-चोली। ३. कुल-समूह या कुल, वंशज-दाने। ४. आँखें रतनारी—रत्न के समान चमकती हुई। ५. भौंह। ६. गमायो—गलायो; फेरी-डाली।

भूख नहीं त्रीस[1] ऊछली[2] ।
उणी घडां[3] नींद कहा थी होई ? ॥ ८ ॥
आघण[4] कर दिन छोटा होई ।
सषी ! संदेशों मोकलोऊ कोई ॥
संदेसांहि ववज[5] पड़्यो ।
लांघ्या पर्वत दुर्घट-घाट ॥
परिदेसां परि - भूमि गयउ ।
वीरी[6] जणह न चालइ बाट" ॥ ९ ॥
"देखी सखी हिव लागै छइ पोस[7] ।
धन मरती मति लावउ हो दोस ।
दुख भीनी पंजर[8] हुई ॥
धान[9] नू भावई तिज्या सरि न्हाण ।
छाहणी[10] धूप नू आलगई[11] ॥
कवियक[12]-झूपड़ा होई मसाण" ॥ १० ॥
"माह-मास सी[13] पड्यो अतिसार ।
जल-थल-महीयलं सहू कीया छार ॥

---

१. तृष्णा-त्रास-प्यास । २. उछली—उचटी । ३. उलिगणां—परदेशियों के स्त्रियों को-विरहिणियों को । ४. अगहन । ५. ववज, शंशय, वजह, कारण । संदेश न आने में कोई वजह पड़ी । ६. वैरी—शत्रु । ७. पूप । ८. पंजर—कंकला शेप । ९. धन—स्त्री को । १०. छाया । ११. अच्छा लगे । १२. कवियों का कल्पनात्मक-झोपड़ा-(Poet's palace) अर्थात् सुन्द प्रासाद । १३. जाड़ा, शीत ।

आक[1] दयंता वनदह्यो ।
चोली माहि थी दाघउ[2] छइ गात ॥
धणीयनतकां[3] धण ताकजे ।
तुरीय पलांणि वेगो घरि आव ॥
जोवन छत्र ऊंचाईया ।
ईणि कंत ! काया मांहि फेरी छइ आंण[4]" ॥ ११ ॥
"फागुन फरक्या कंप्या[5] रूप ।
चित चमकी नींद न भूख ॥
जूं जोवन जूहे[6] सखी ।
मूरिख लोक नूं जांणइ संसार ॥
दिण परधौ दिस पालटइ ।
सखी वाव[7] फरूकती जाइ संसार ॥ १२ ॥
चैत्र मासां चतुरंगी नारि ।
प्रीय विण जीवूं कवण अधार ? ॥
चूडे भीजे जण हंसौ ।"
पंच सखी मिली थईठी छइ आई ॥
'दंत [8]कवाड्या नइ रंग्या ।
चालउ सखी होली खेलवा जाई" ॥ १३ ॥

१. आक–मदार । २. दग्ध हुआ । ३. स्वामी के होते हुए भी स्त्री औरों से देखी जाती है । ४. हुकूमत । ५. कोंप्या रूप, (रूप ;– वृक्ष में कोंपल लगे । कोंपना-कोंपना-कोंपल लगाना । ६. जूहे–नष्ट हो (सुख) । ७. फरूकना–फूँकना, बजाना । ८. दन्त कपाट नहीं रंगे ।

"सूणी ! सहेली कहुं ईक बात।
महाहरइ फरकइ छइ दांहीणो गात ॥
आज दीसई ते ईक दिन मांहि।
म्हां क्युं होली खेलवा जाई ? ॥
उलीगाणां की गोरड़ी।
म्हां[1] की आँगूली देखता गिलजे बाँह" ॥१४॥

"वैशाखां सखी लहणुजे[2] धान।
सीला[3] पाणी पाका पान ॥
कनक काया घट सींचजै।
मूरिख नाह[4] नू जाणे [सं] सार ॥
हाथि लगामी[5] ताजिणौ[6]।
पार[7] कइ सेवइ राज-दुवार" ॥१५॥

"देखि जठांणी ! लागौ छइ जेठ।
मूखी कुंमलाणौ[8] अरि सुकइ छइ होठ[9] ॥
सनेहा सारण[10] वहई।
धरती पाई[11] न देणउं[12] जाई ॥
अनबलई[13] दव[14] परजलई[15]।
हंस सरोवर छड़इ छइ ठांइ ॥१६॥

---

१. म्हां—मेरा। २. लवना—काटना। धान-शस्य-फसल। ३. शीतल ४. नाथ, पति। ५. लगाम—रास। ६. ताज़ियाना—कोड़ा। ७. परका—पराये का। ८. कुम्हलाया—(कुम्लान)। ९. ओष्ट—अधर। १०. रोग। ११. पैर। १२. दिया—(दत्तं) दीनउं। १३. अनबलई—विना जलाये। १४. दवाग्नि—अग्नि। १५. प्रज्वलित होता है।

"घुरि असाढ़ घडुकया[1] मेह।
खलहल्या[2] पाल्या, वहि गई खेह॥
अजी न असाठां वाहुडूयो[3]।
कोईल कुरलइ अंब की डाल॥
मोर तहूकइ[4] सीखर[5] थी।
माता-मइगल ज्युं पग देई[6]॥
सदी मतवांला ज्युं घलई[7]।
तिणी घरी ओलगी कांई करेसतो[8]? ॥१७॥
श्रावण वरसइ छइ छाडीय[9] धार।
प्रीय विण खेलइ कवण आधार॥
सखीय ते खेलइ काजली।
चीड़ीय कमेड़ी[10] मंड़िय आस॥
पपीहो पीऊ! पीऊ! करई।
सखी असलसलावइ[11] मो श्रावण मास" ॥१८॥
भाद्रवउ वरसइ छइ मगेहर[12] गंभीर।
जल, थल, महीयल सह भरया नीर॥

१. गरजना—टहूकना, टडकना। २. खलयान। वह स्थान जहाँ काटकर फसल रखकर माडते हैं। ३. अभी आसाढ़ में भी नहीं लौटा (प्रिय) ४. टहूके—बोले। ५. शिखर, चोटी (पर्वत या प्रासाद की)। ६. मत्त मयगल (हाथी) की भांति पैर देती है। चलती है। ७. घूमे-चले—(घुरना) ८. कर सकती है (करिष्यति) ९. छोड़कर धार, मूसलाधार धार। १०. एक पक्षि। ११. अकुलाता है, आलस्य उत्पन्न करता है। १२. मेघ, अथवा मघा नक्षत्र।

जाणे सरवर[1] ऊलटइ ।
एक अंधारी बीचखी[2] बाय[3] ॥
सूनी सेज विदेश पीव ।
दोई दुख 'नाल्ह' क्युं सइंहणां[4] जाई ॥१६ ॥
आसोजां[5] घन मंडीय आस ।
माड़या मंदिर घरि कविलास ॥
मांड्या चौरा चउखंडी ।
माड्या सांभरि का रणिवास ॥
एक बलावै[6] वाहुड्या ।
"नाह उत्तरी गयौ गंगा के पार" ॥ २० ॥
असी वरस की हो वूढि वेसि ।
दांत कवाड्या[7] सिर पांडूरा[8] केस ॥
आई अवासां[9] संचरी ।
गलि लागइ नै रूदन कराई ॥
"किस भव[10] नीगमीस कांमिनी ? ।
राति दिवस मौ थारीय चिंत ॥
कह्यउ हमारउ जइ करउ ।
तोह नइकईसो[11] पटवो[12] करि देउं मीत[13]" ॥२१॥

---

१. सरोवर २. बीचखी-विद्युत-वीज-(जायसी) विजुली । ३. वाय-वायु । ४. सहा जाय । ५. आश्विन-कुँआर । ६. बलावै-साथ में गया हुआ-आदमी । ७. कपाट-दंत-कपाट । ८. पांडुर-स्वेत-सफेद । ९. गृह-वर, महल । किस प्रकार (भव) संसार में अपना दिन काटती है कामिनि । १०. नायक से । १२. पटाना-ठीक करना । १३. मित्रता ।

"उठि ! उठि ! गोरी करि सींणगार।
गलि पइहरउ मोतीय कौ हार॥
नाग-फणां का तड़-कली[1]।
छोटि कसण पयोहर खींची"॥
"प्रीय म्हां कउ चाल्यो उलगइं।
जुं हुं जोवन राखूं संची[2]"॥ २२॥

इतो कहे जब चाली छइ ऊठि।
ले पाटो[3] अरि पटकी छइ पूठि[4]॥
"नाक पाट फडाउं हू कूटणी[5]।
ते तू देवर अरी वडो जेठ॥
जीभ काटुं जीणी वोलियो।
थारो नाक सरीखा ऊपलो[6] होठ" ॥ २३॥

सासु कहइ "बहु ! घर मांहि आव।
चंद कइ भोलइ[7] तोहि गीलसइ[8] राह॥
चंद पूलाणो[9] बनी गयो।
खीर[10] की तौलड़ी कुँ रहइ सेर॥

---

१. ताटंक–तरौना, कर्णाभूषण, तरकी। २. संचय करके=बचा करके। ३. पाट, पाटा=पीढ़ा। ४. पीठ पर=(पृष्ठे–पिछे। ५. कुट्टिनी। ६. उपला (उत्पल)=गोबर का बना हुआ उपला, अथवा ऊपर का। ७. भोले में धोखे में, भ्रम में। ८. निगलेगा–ग्रसेगा। ९. पूर्णिमा। पूनम। १०. खीर की तौलड़ी (तौली–छुद्र पात्र) में किस प्रकार रहे सेर। छोटी वस्तु में बड़ी वस्तु कैसे रह सके।

धणी थाकां[1] धन ताकजइ।
राव ऊडीसइ तु अजमेर" ॥ २४ ॥
"जे कै घरि हरिणांषी-नारि।
तो किम भमई पार कइ बारि[2] ? ॥
कइ मूवां कइ मारिया[3]।
बलेन पूछी धन की सार[4] ॥
नयण ते सारंग होइ रह्यो।
धन मरती नवी लावइ वार" ॥ २५ ॥
राव उडीसइ रहीयो जाई।
राजमती अजमेरां मांहि ॥
दस वरस ईम नीगस्या[5]।
बरस ईग्यारमउ[6] पहतऊ आई ॥
राजा अजु[6] न वाहुड्यो।
तेड़ो ब्राह्मण जण [ह] पठाई ॥ २६ ॥
कातिग मांसा जण [ह] चलाई।
कोरो कागल[7] गुपती लीखाई ॥

---

१. थकां=रहते हुए (बँगला का 'थाके')-पति के रहते हुए स्त्री दूसरों से देखी जाती है। २. वह क्यों फिरे दूसरे के दर्वाजे=द्वार पर। ३. मर गई या मारी गई। इसकी कुछ भी खबर नहीं ली। ४. हाल। ५. (निर्गमः)=बीत गया। ६. आज भी नहीं। ७. कागद=कागज, पत्र।

आप हस्त लिखे गोरड़ी ।
जिम जिम वाचइ तिम तिम चेत ॥
घणी उपाहौ[1] उलगइं ।
राव चलावौ घरा अचेत ॥ २७ ॥

पंच सखी मिली वइठी छइ-आय ।
"तैरय[2] लीखी सखी ! मांही सुणाई ॥
लालच[3] लीखीया वहनड़ी ।
सामहै हीयडइ डावी कूँपी[4] ॥
दोई नख लागा देव का" ।
आपस माणा करत आल[5] ॥
धन विसहर[6], प्रीय गारुड़ी ।
जागी घणी थारा डंक[7] संभाल" ॥ २८ ॥

चीरी लिखी धन आपणइ हाथ ।
जणह चलायो हेडाऊ[8] के साथ ॥
सातसंइ कोस कइ आंतेर[9] ।
जीण परि बोलज्युं न रीसाई[10] ॥
कुहणी फाटइ कांचुवउ ।
पोपरि[11] फाटइ धन को चीर ॥

१, उपालंभ देता है । २, तेरा । ३, प्रेम । ४, कुंपि=[illegible] । ५, आल=हँसी । ६, विसधर=सर्प । ७, डंक-दंश=काटना । ८, हेडाऊ=डेरावे पर जानेवाला—दूत । ९, अन्तर पर । १०, रोष में । ११, खोपड़ी=सिर पर ।

जांणे दव दाधी लोंकड़ी[1]।
दूबली हुई झूरइ ईम नाह॥
डावां हाथ को मूंदड़उ।
आवण लागौ जीवणी बाँह॥२९॥
पाड्यो चाल्यो ओका प्रीय कई देश।
"हुँ कहुँ वीरा! सोई कहेस॥
एक सांरा[3] घरि आवज्यो।
वाट वूहारूँ सीर का केस॥
विरह महा-जल उलटई।
थाग[4] न पावइ मुंघ नरेश!" ॥३०॥
"जोसी कहई वीरा! धन की नाह।
तो यो दीई थी जीमणी बाँह॥
दोव पुजाई थी बांभणो।
चंद सूरिज दुई दीया साख[5]॥
पानी पवन अरि धूर अकासि[6]।
हुँ नवि जांणु य ईम करै॥
मुसी[7] हे! नणद हुँ ईणी विसास[8]" ॥३१॥

---

१. लोमड़ी। २. सुन्दरी बांह में आने लगी। 'मुद्रिका को कंकण की पदवी देना।' केशव दास ने भी ऐसा किया है। विरह के कारण कृषता का वर्णन है। ३. बार। ४. थाह। ५. साक्षि=गवाह (व्याह के समय)। ६. जल, वायु, पृथ्वी, आकाश-विवाह में ये सब साची होते हैं। ७. ठगी गई हूं। ८. विश्वास (के कारण)।

"भूली है वइहनड़ी ईणै वीसास।
हूँ नीव जांणू ओलगि[1] जास॥
बरजति बाप रखावती[2] व्याह।
अंकन[3]-कुँवारी रहती सखी!॥
ओढण[4] लोवड़ी[5] काटती झाड़[6]।
खेत कमाती[7] जाट ज्यु॥
मइं कांई सिरजी उलिगांणा घरि-नारि" ॥३२॥
जे दुख 'नाल्ह' कहैइगो कौण?।
परहरौ पल्यंग नइं भीय तीज्यो न्हाण॥
काथ सोपारी तै विख वड़ौ।
करि जप माला अरि जपइ नाह॥
आंगुली गीणतां दिन गया।
काग* उडावतां दूपइ[8] छइ बाँह ॥३३॥
चीरी दीधी जनोई[9] की गांठि।
गिणि सोनईया[10] बांध्या छइ साठि॥
वरस दीहाँ[11] की सेवलो[12]।
घी वणौ खाज्यो पगाह[13] पगांण॥

---

१. परदेश। २. रोकती=स्थगित करवाती। ३. आजन्म क्वांरी। ४. ओढण=ओढ़ना। ५. लोई=कम्बल। ६. झाड़ी। ७. कमाना, खेत में काम करना। ८. दुखना, दर्द करना पीड़ा होना। ९. जनेऊ। १०. सोने की मोहर। ११. दिन का। १२. सम्बल=रास्ते का खर्च। १३. पैरों में।

* प्रिय के आगमन का समय निश्चय करने के लिये विरहिणी स्त्रियाँ कौआ उड़ाया करती हैं।

पाये पांणही सांबरी[1]।
चउघड्या मांह दीई मिलांण ॥३४॥
"कहि न गोरी! थारा प्रीव का सुहिनांण[2] ।
जीणी अहिनाणहु[3] लेउँ पीछाणी[4] ॥
कौण उणिहारइ[5] कौण सारिखो ?"।
"ऊंचइ गोलइ कड़ो जिम दाढ़ ॥
ऊरि चोडौ कड़ि[6] पातलौ।
माहोलै[7] कोयै जीमणी अंषी ॥
कालौ तिल भमर[8] जीसो।
सीस तिलक उगतई-विहाण[9] ॥
पाय लखीणी मोचणी[10]।
मूँछ करिवांण छै डावइ हाथी[11] ॥
लाख मील्यां मांहि लख लहई।
पाञ्या! म्हांको प्रीव छइ इण तो सहिनांण"॥३५॥
"वरस वावीस कौ वाली-बेस।
दन्त कवाञ्या, सिर किलकिला[12] केस ॥

---

१. सावर (एक प्रकार का चमड़ा) का जूता। २. (संज्ञान) पहचान। ३. (अभिज्ञान)=पहचान। ४. पहचान लूँ। ५. सदृश। ६. कटि=कमर। मध्य के कोये में (आँख के)। ८. भँवर जैसा काला। ९. विभात=सवेरा। १०. जूती (मोजा)। ११. डावइ=बाएँ हाथ में तलवार की मूँठ है। १२. घूँघूर वाले केश।

हाट विहारया[1] कइ जोवज्यो।
कइ जोवज्यो राज - दुवारि" ॥३६॥
"वाहुडि गोरी! तुं घरि जाह।
हुँ लेई आवऊं थारउ हो नाह" ॥
सोना तो बांध्यो गाठड़ी[2]।
दीधी सोपारी दोय कर च्यार॥
"ज्युं बोलइ ते नरिवाहज्यो[3]।
वचन तुमारइ लागी छर नार" ॥३७॥
वहुड़ि गोरी देखाली छे वाट।
ऊँचा पर्वत दुर्घट घाट॥
लांवी वांह देखालियां[4]।
देखितो चालिजे देस की सीम[5]॥
"छाड़ही धूप थे झीणी[6] गीणौ।
चीरी[7] राखज्यो धन को जीव" ॥३८॥
कोस पयांणउ पाड़ीयो जाई।
सात अंगा[8] कर बैठो हो खाय॥
सूतो चाले पग ढवै[9]।
चालता गोरी कह्या हो संदेस॥

---

१. व्यौहरिया=बनिया। २. गाँठड़ी=गठरी में। ३. निर्वाह करना =पूरा करना। ४. देखाला। ५. सीम=सीमा। ६. मिन = मन ७. चीरी। ८. अंगा, वाटी= आँटे की गर्म बाटी। ९. थके।

ते सघला[1] वीसरी गयौ।
पाड्यो सभालै आपणउ पेट ॥३९॥
पाड्यो चाल्यो जगंनाथ के देश।
छंढ़या मंदिर सयल[2] असेस ॥
चाल्यो प्रोहित राव को।
जाई पर-भूमि कियो प्रवेश ॥
घाट दुर्घट ते लांघीया।
सातमइ मास पहुतउ हो जाई ॥४०॥
अचरिज वात ईस सयल असेस।
वलद[3] ते मानजे[4] हलि वहइ[5] गाय ॥
इसो चरित तिहाँ अति घणउ।
साँड विहूणी व्यावइ छइ गाई ॥
माँड पीवइ कण कण रालजे[6]।
लाल[7] विहूणी वाजै छै घंट ॥
ईसी सकति[8] तिहाँ देव की।
चोर नाहर[9] नहीं देव कइ पंथ ॥४१॥

---

१. सकल, सब। २. शैल=पर्वत। ३. वलद=वलीवर्द=बैल। ४. मानजे=तरह, समान। ५. हल में जोते हैं। वहइ=वहन करते हैं। ६. रालना=डालना फेंकना या एकत्र करना। ७. लोल, लटकन, जो घंटे की मध्य में होता है जिसके हिलने से वे बजते हैं। ८. शक्ति। ९. नाहर, सिंह।

फिर फिर जोयो राजा नयर[1] मझार ।
करि जमदाढ[2] खांडो तरवार ॥
खेडौ रूले[3] खोपरि समंद ।
पाट की फूंदा[4] रुलती झूल ॥
साँभर-धणी जोउल[5] दोड़ ।
जे सहिनाण[6] कह्या था मूंध ॥४२॥

पाड्या जाई कीयो परवेस ।
ले विजउरो दुज मीलइ नरेस ॥
कुसल कुसल संप्रसन्न हुवो ।
जब लगि गंग जमुना वहै नीर ॥
जा लगी चंद सूरज तपै ।
ता लगि राजा सयल परिवार ॥४३॥

"पाड्या तुम आव्यौ कौण कइ साथ? ।
लाध्या कूँ पर्वत दुर्घट घाट ?" ॥
"तुम कारण दुत रमिरां[7] ।
सूना साँभर का णिवास ॥
सून चउरा चउखंडी ।
सूना मन्दिर मढ कविलास ॥४४॥

---

१. नगर । २. यमधार—(एक प्रकार की तलवार) । ३. रुले=लुढ़के ।
४. फुन्दना । ५. जोधन=जोद्धा, ढूँढ़ा । ६. पट्टथान । ७. रमिरा=भौंरा ।

राजा प्रोहित येकणि[1] साथी।
वांह लागा पूछइ घनी बात॥
नयनी रूप में रूवड़ौ।
कोट कोसीसा[2] अंत न पार॥
देव–नयर छइ रूवड़उ।
प्रोहित जोवइ पौली पगार॥ ४५॥
पठइ पोथी रामां[3] की छै।
प्रोहित निरखै पोलि पगार॥
चंदन तिलक अंगी खोल कराय।
कंठ जनोई पाटकी।
रगत[4] चंदन की पीली किमाड़॥
सीसम सार की पाटली।
ऊंचा घरि घरि तोरणवार॥
ऊंचा दादुर[5] झलमलइ।
घरि घरि तुलछी[6] वेद पुराण॥
तिण भई[7] पाप न छीपही[8]।
तिहां फिरई जगनाथ की आंण॥ ४६॥
धन! धन! देव! देव! जगंनाथ!।
अमर काया रतनालीय आंख॥

---

१. अकेले में=एकांत में। २. कोसीसा (कुस्थित) दुर्गम। ३. रामायण की। ४. रक्त, लाल। ५. कलश = मुंडेरा, धौरहर। ६. तुलसी। ७. भय, ८. छिपे।

अमर स्यंघासण[1] वइसणह ।
जीण दिन कंठ न ओअंहकार[2] ॥
जिण दिन मेरु न मेदनी ।
जिण दिन स्वामी चंद न सूर ॥
जिण दिन पवन पाणी नहीं ।
जिण दिन स्वामी अभ[3] न गभ ॥
ये तो जुग सूना गया ।
तदि तो दीप नीपायो[4] हो आप ॥ ४७ ॥
पांढ्या परधान तेड़ावीयो आंणि ।
देसू जब लगि चउगुणो मान ॥
मेलही छह चावर वइसणाई ।
कौण देसांरी[5] पूछै छै यात ॥
कौण कारणि औलगि करउ ? ।
तु अंजाणे कांई पूछेई यात ? ॥ ४८ ॥
पांड्या कहै "सूणी घरह नरेस ! ।
उणी गुणवंती फलोउ संदेस ॥
तुम वीरा मे वहनड़ी ।
लाडिलो घणी सांभरी को राव ॥
तु उड़ीसा को घणी ।
थारउ उलिगांणउ घरि वेगि पठाव" ॥ ४९ ॥

---

१. सिंहासन । २. कंठ में ओंकार नहीं था । ३. अभ्र—आकाश । गर्भ—पृथ्वी । ४. उत्पन्न किया । ५. देश की ।

पांड्यो ऊसारै[1] तेड्यौ छइ राई ।
"छीनी उलगी[2] मांई सूं कही ॥
मां ईम कहीयो देव सूं ।
राई चलायो चउगिरणइ मान ॥
लाख पाषर आंगइ जुडइ[3] ।
देस उडीसा कउ परधान" ॥५०॥
"वेगि मया[4] करि तू घरि चालि ।
कठिण पयोहर छांडि छइ ठांमि ॥
सिखर ते धरती रहइ नीम्या[5] ।
अंधला[6]! असूर[7]! असती! अचेती ॥
एक खरो घरी आवनू ।
अस्त्री गेली[8] राम वांध्यो सुरा सेत ॥५१॥
जाणायउ[9] राजा थारौऊ हो जांण[10] ।
दुई का मीलयां छै येक परांण ॥
जेकिम यछै[11] दूरी था ।
कूलइ[12] की बेड़ी, सीयलै जंजीर ॥"

---

१. ओसारा-मकान का बरामदा । २. एकांत में । ३. एकचित हुए । ४. कृपा । ५. निम्नस्थित—नीचे झुके हुए । ६. अंधा । ७. कायर । ८. गेली—के लिए (कृते) ९. जनाया—ज्ञात हुआ-देखा गया । १०. ज्ञान—जानकारी । ११. यछै-यचै, याचै=चाहे, संतुष्ट हो । १२. कूलइ=कुल की-मर्यादा की, (इ) 'भ्यस्' का रूपांतर । १३. शील, लज्जा, कान ।

"जोबन राखो चोर ज्युं ।
पगी पगी स्वामी लागुं हु पाय ॥
ईणी भवि[1] उलिगाणौ हुवौ ।
आवतइ[2] भव होई कालो हो सांप ॥५२॥

हेम की कूंपी[3] मयण[4] की मुंध[5] ।
सा धन समरई जीम मात-गयंद ॥
चौवास्या कई चौखंडी ।
वाव न बाजै[6], नू तपै सूर ॥
वादल छायो है चंद्रमा ।
औ की गात उघाड्या जोबन-पूर" ॥५३॥

"देव ! मया करि तू घरि चालि ।
थारइ घरि होसी अरथ की हाणि ॥
कह्यो हमारउ जे सुणइ ।
थारी गोरडी मरई उगत-विहांण ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहै ।
वेगी करि राज भंवर[7] पलांण" ॥५४॥

"पाड्या ! ते गोरडी कीणइ दुख दीठ ?" ।
"चावल वीणती गोखी[7] बयठ ॥

---

१. जन्म । २. आगेवाले=आगामी-जन्म । ३. कुप्पी=पात्र । ४. मोम । ५. मांड़ी=चढ़े । ६. नाम घोड़े का । ७. गोखी=गवाक्ष=झरोखा ।

मुख मइलइ चितउ उजलइ।
दुइ पगि उतरी कह्यो हो संदेस॥
एक सरां घरां आवज्यो।
चढतो जोवन कहां लहेस?" ॥ ५५ ॥

"पाड़्या! ते गोरड़ी किणइ दुख दीठ?"।
"संदेसोई कह्यो धंन नीठ[1] ॥
आंसू पड़ै जगी रेलिया[2]।
दुबली हुई खरीय कंक[3] ॥
आखड़ीया ... ... रतनालीयां।
तुटी[4] पड़ैलौ, धन कौ लंक" ॥ ५६ ॥

जीम जीम पाड़्यो कहै संदेस।
तिम तिम झूरइ घरहु-नरेस ॥
"कइ तुं कांमणी कांमणौ।
केतु भरीयो सयल[5] जंजीर ॥
कइ तुं वंधण वधीयो।
एक सरां राई घरह सीधाव[6] ॥
साधन नल प्यंगल हुई।
ओकई आंगणई सूकइ[7] चंपकी माल" ॥ ५७ ॥

---

१. नीठि=मुश्किल से—कठिनाई से। २. संसार में आँसू पानी होकर वहा। ३. कंकाल=ठठरी। ४. टूट पड़ेगी। टूट पड़नेवाली है। अति क्षीण है। ५. शील। ६. सिधार=जा, प्रयाण कर। ७. सूकइ=सूखै।

दुष्ट वचन बोल्या तिणि ठाई ।
ले चीठी आयी[1] तणी राई ॥
ईसा गूपती वचन ती बंचीया[2] ।
नव जोवन नवरंगो नेह ॥
अहि-निसि समरई गोरड़ी ।
सांभला – राजा तणौ सनेह ॥ ५८ ॥

चीरी बांची देखी तब राई ।
ततखिण देव पधारो जाई ॥
"कांई राजा मन बिलखीयौ ? ।
सूना पाटण देस पंधार" ॥
कर जोड़े [इ] नै राई वीनई[3] ।
"देहि विदा मौ मुगती[4]-दातार ! ॥ ५९ ॥

चीरी बाचइ छइ दोहो राई ।
करणो[5] जोसी उभौ[6] तीणी ठाई ॥
आजि चलावै देव हइ[7] ।
वचन हमारउ मानो नू मांन ॥
कर जोड़ें दूज[8] वीनमैं ।
थे घरि चालो, नू लावो हो वार" ॥ ६० ॥

---

१. अर्पी, दिया, अर्पण किया । २. पढ़ा, बाँचा । ३. विनय करता है । ४. मुक्ति । ५. कर्ण ज्योतिषी । ६. खोड़ा । ७. पास । ८ द्विज=ब्राह्मण ।

कोकै[1] पांड्यो अरी परधान।
दीधौ छै जव तिहां चउगुणउ मान॥
चौंकी चावर बइसणइ।
नव गज ऊंचा हाथी च्यार॥
आण्या छै अरथ थे दरव भंडार।
आण्या हीरा पाथरी॥
दीधा ताजी मात-गयंद।
कबाइ[2] पइहराइ नव—लखी॥
चाल्यो राजा मास बसन्त॥ ६१॥

भीतर संचर्‍यो दोई राई।
पाट-महा-दे-राणी लीय बोलाई॥
उलांगाणउ घरि चालीयौ।
सह संदेसी नया उपरि पान॥
"म्हां बइठां थे आचरउ[3]।
रहो उड़ीसा का परधान"॥ ६२॥
राजा राणी लेई बोलाई।
गलि लागै अ [रु] रुदन कराई॥
उलिगांणउ घरि चालियौ।
नमि नमि दूणो करै जुहार॥

---

१. बोलावे=कोकना-बुलाना, चिल्लाना। २. चोगा। ३. मेरे रहते तुम राज्य करो।

"राज कीज्यो घरि आपणइं"।
रांणीनइ[1] दीयो कोड़ि टंकावली[2] हार ॥ ६३ ॥
"रहि रहि प्रधान तुं जी मतो जाई।
दोती[3] कराउं थारो हु व्याह ॥
एक गोरी दूजी सांमली।
राई भतीजी नयण सूतार[4] ॥
वहन देवाडूं[5] देवकी।
थारो व्याह करूं गंगा कई पार" ॥ ६४ ॥
"रहि रहि वइहन तु वचन नू हारि।
म्हारइ छइ साठि अंतेवरी-नारि ॥
एक एकां थी आगली।
एक अस्त्रिय जइ रतन संसार ॥
प्रेम प्रीयारी वाल ही[6]।
जे कइ[7] पीहर छै वाई ! मांडव धार" ॥ ६५ ॥
सेवा पूरी[8] चाल्यो घरी राव।
गली लागै मीलै छइ राई ॥
पूठिते उघाड़ी हुई।
सगा मुणी जाता कली पूठि ॥

१. नइ-(ने)-। यह संस्कृत विभक्ति 'एणा' से निकला है। २. कोटि टका, करोड़ रुपये का। ३. दो से। ४. सूतार=अच्छी सुतारका। ५. दिलाऊँ। ६. वाला है। ७. पीहर है=(पितृ गृह) पिता का घर। ८. पूरी, पूर्ण हुआ।

कलिजुग पाप ज अवतऱ्यो ।
राजि के कारण विणसस[1] लंक ॥ ६६ ॥
छत्र दियौ सिर सांभऱ्यइ-राव ।
वाजित्र वाजै निसांणे घाव ॥
देव[2] बलावै बाहुड्या ।
सांभरि गमन करै छइ राई ॥
गढ अजमेरां राजीयो ।
जोगी एक भेट्यो तिणि ठाई ॥ ६७ ॥
राजा पाछ्यो लीयो हो बोलाई ।
अगइं बात कहौ समझाय ॥
थे घरि चालौ देवता ।
"मूरिख राजा अपढ अयाण ॥
हुँ किम चालुं एकलो ? ।
आगइ गोरी तीजइ[3] परांण ॥ ६८ ॥
एक अपूरब जोगी राई ।
मन करै तौ सांभरी ते जाय ॥
चंचल चपल अरि चालणंइ[4] ।
रूप अपूरव वालिय वेस ॥
ज्यों मागौ ज्युं आलज्यौ[5] ।
पाटण सरिसा[6] नयर असेस ॥ ६९ ॥

---

१. विनास होता है । २. उड़ीसा का राजा । ३. तजै=छोड़े । ४. चलने वाला । ५. अच्छा लगे, इच्छा हो । ६. सदृश, समान ।

जोगी कहइ "सूणी धरइ नरेस ।
वीण उणीहारउ[1] कहां उ लहेस ॥
राज घणी राणी घणी[2] ।
उचै गोलइ लाँवइ नाक ॥
जीव पराया ओलखई[3] ।
चोरी दीज्यो प्रभु! धन के हाथ" ॥ ७० ॥
जोगी कह "सूणी त्रीभुवन नाथ! ।
पदम कमल छै धन के हाथ ॥
हिव[4] होसी काचकी कांमली ।
दीस भूलउ रे प्रभु! उणीहार ॥
बोलता बोलइ छई आकुली ।
जोगी! गोरड़ी ईणि उणिहार" ॥ ७१ ॥
"कै धन सूत्र घड़ी सुत्रधार[5] ? ।
कै वा संचइ[6] ढालीय सुनारि ? ॥
कै वा देवी देवां घरी ? ।
कैवा चंद्र वदन उणीहार ? ॥
कइवा[7] देवल - पुतली ? ।
ईसीय छइ प्रभुजी! अमारड़ी[8] नार" ॥ ७२ ॥
चालउ जोगी नू [ला] बीवा वार ।
मंडली पाई भमइ तिण वार ॥

---

१. पहचान, सूरत । २. बहुत । ३. पहिचाने, समझे । ४. अब । ५. सूत्र से क्या की जिसे सूत्रधार ने बनाया है । सूत्र से यहाँ तात्पर्य पुतली-(कठपुतली) से है । ६. सांचे में । ७. क्या । ८. अमारड़ी=हमारी ('अमारी' बच्चा)

मोनइं[1] बन लेई संचरयो।
दुईसंभरया[2] बीध[3] लंघ्या परनत घाट॥
पर—देशां जाई संचरयो।
सात सइ कोस गयो सांभी वार ॥७३॥

जोगी उयण गयो तिणी ठाई।
गढ अजमेर पहूतो जाई॥
सहू महाजन हरषीया।
कोण देस? कहो कुणि ठामि?॥
रावली पोले आवीया।
पौल्या[4] वेगी वधावउं जाइ ॥७४॥

राव आव्या की सांभली[5] बात।
नाचउ रूप मनोहर पात[6]॥
गढ मांही गुड़ी उछली।
घरि घरि तोरण मंगल चार॥
रांवली प्योल आवीया।
सहू आणंद हुवउ तीणी ठार ॥७५॥
जोगी बइठो पउलइ[7] जाई।
वभूत सरी[8] सी वोल कराई॥

---

१. मुझे भी। २. स्मरण करते हैं। ३. वीच में। ४. पौरिया, दरवान। ५. सुना=(सांभरया—सुना—याद किया)। ६. पातुरी=नाचने वाली, रंडी। ७. पौल=पौर—दरवाजा। ८. श्री=रोली। सी=से।

आक[1] धतूरा विस घणौ।
वउलइ बोलते वचन कुठाल॥
राय-ली प्योले आवीया।
वेगी वधावइ चंप की माल॥७६॥
राय-आगणां[2] जोगी पहूँतउ जाई।
जाई प्रधान सूणांव्यो[3] मांहि॥
सघलौ रावलह [लह] लहलै।
साधन पोवती[4] मोती की माल॥
दासी जाई सूंणावीयो।
तव धन उठी मोतीय राल[5]॥७७॥
"आज सखी! म्हारै फरकै छुई अंग।
अंग फरूके चित हंसै॥
कैड्यांरो[6] जीर खीसे खीसे जाई।
चित जणांयौ है सखी"!।
"लखै[7] तुम मीलसी सांभरयो राव"॥७८॥
पंच सहेली मिली धन साथ।
चीरी म्हेली धन आपहण हाथ॥
जाई करी बैठी चौकंटी।
पेहली चांची उपली ओलि[8]॥

१. मदार। २. आगन में। ३. रावल की महल में। ४. पिरोती।
५. डाल कर, फेंक कर। ६. कटि का कपड़ा। ७. लखै=लखती हूँ-मुझे ज्ञान पड़ता है। ८. ओली=पंक्ति।

सा धन खलती[1] कसोर ज्युं।
जाणिक बैठी प्रीव को खोलि[2] ॥ ७९ ॥

चीरी रही धन हीयडउ लगाई॥
जाणिक बाछरू है मेल्ही गाई।
नयन ते आंसू खेरिया॥
कब म्हें भेटस्यां साभरया-राव॥
जीवन घड़ीय ते नवि रहई।
जीणसू कागली[3] हुश्रा वैहार ॥ ८० ॥

"जोगी! थां कौन कहै हो बात।
दुधइ न्हिहावऊँ[4] घणी हो नीबात[5]॥
भैस को दहो यर गरड़ा को भात।
सुसतो[6] जीमें वीरा जोगिया॥
पदमणि आगलि घालइ[7] छइ वाई।
आगल बइसो जीमावीयउ॥
हंसि हंसि पूछइ प्रीव की वात ॥ ८१ ॥

जोगी कहइ "सुणि मोरी माई!।
दिन तीसरई आवइ घरी राय॥

---

१. खिलती। किशोर अवस्था की भांति। २. कोडि=गोद में। ३. कागद का व्योहार=कच्चा व्योहार। ४. नहलाऊँ। ५. मिश्री, नवनीत, मक्खन। ६. सुस्वस्थ=अच्छी तरह। ७. हवा करती है, पंखा झलती है।

हमहै[1] देही पंचामणी।
दीधा मोती अरथ भंडार॥
दीधा हीरा पाथरी।
काल्ही "आवई राजा पती वार" ॥ ८२ ॥
दोत[2] घरि आव्यो वीसलराई।
राई भतीजो सामहो जाई॥
तुरीय पलांराया राव का।
चाल्या चौरास्यौ अरु परधान॥
सांमही चाली छह आरती।
वाजइ पड़ह पखावज भेर॥
राजमती इन्याम[3] दी।
मढ़ी है थानीक चांपानेर[4] ॥ ८३ ॥
जोगी कहै "प्रतीवृता"[5] ! सुणेस हुइ नच्यंत।
प्रीव थारौ आव्यो छइ मास वसंत॥
माणिक मोती ले वल्यो[6]।
उठी नै गोरी तीलक संजोई[7]॥
पांचमइं पहरी घरी आवसी[8]।
वारमै वरस आव्यो घरि राव ॥ ८४ ॥
लांघ्या देस आव्यो घरी राव।
वाजीत्र वाजै निसाणै घाव॥

१. हमैं=हमैं–मुझे-मुझको। २. द्वितीया। ३. इनाम, प्रसाद। ४. नाम नगर, चंपक नगर। ५. पतिव्रता=पतिव्रतापरा। ६. लौटा है। ७. तयारी कर (संयोजन)। ८. पाहुंगा।

आण्या हीरा पायरी ।
आण्या हस्ती मात गयंद ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहै ।
आव्यो राजा मास वसंत ॥ ८५ ॥
बारमइं वरसे आव्यो घरी राव ।
बाजित्र वाजइ नीसाणे घाव ॥
गढि मांही गूडी उछली ।
घरि घरि तोरण मंगल चारि ॥
राजी - कुँवर हरखी फिरई ॥
जीव घरि आव्यो धन को नाह ॥ ८६ ॥
फागुण मासी आव्यो घरि राव ।
फागी रमै सहू वर - नार ॥
राजमती हरीषी फिरई ।
सरव चउरास्या सरिसौ राव ॥
होली खेले राव हरीषीयौ ।
राज कुँवर होली खेलवा जाई ॥ ८७ ॥
जीव घरि आयौ धन को नाह ।
जाणिक उलटइ समंद अथाह ॥
अकलंक कलंक मौ चढयौ[1] ।
समुहो जोवन वीरह[2] वीकराल ॥

---

1. मुझ अकलंकी को कलंक चढ़ा । २. विरह ।

अनवलइ[1] दव परजलै।
पगि पगि मो सखी मडइ आल[2] ॥ ८८ ॥

जाई स्यंघासण[3] वइठो छइ राई।
चउरास्या सहू लागै छइ पाई॥
भाइ भतीजा राव का।
मील्या महाजन वीसलराव॥
मंगल गावइ कामनी।
चारण भाट वोलाइ तिणी ठाई॥ ८९ ॥

राई अंगणी राजा पहुँत्तो जाई।
मॉगलीक[4] उतारै हो माई॥
धन्य दीहाड़उ आज को।
देई प्रदीपणां लगाइ छइ पाई॥
धन माता जीणी जनमीया।
जाणिक भेट्यो त्रिभुवन-राई॥ ९० ॥

राई सुखासण पौढ्यो[5] छै जाई।
अंतेवर सहू लीयो वोलाई॥
केलि गरभ[6] जीसी कूंवली।
कूं कूं चन्दन कीधां खोली॥

---

१. बिना जलाये। २. मंडइ आल=हँसी करती है। ३. सिंहासन। ४. मांगलीक, बाहर से आने पर आये हुए प्रिय मनुष्य की आरती उतारी जाती है। ५. पौढ्यो=सोया। ६. कदली के गर्भ जैसी कोमलांगी।

अंतेंवर सहु आवीयौ ।
जाई बइठीओ प्रीव की खोलि[1] ॥ ९१ ॥
कीयो मरदन[2] घन सचलइ अंग ।
पंचजटा छइ सीरह भूयंग ॥
जटा जुगती जोगणी हूई ।
जे घन मीलतो अंगी सभार ॥
मन[3] भंग होतो वालहो ।
ईणी परि रहता राजी-दूवारि ॥ ९२ ॥
उंचा परबत नीचा घाट ।
जातो जोवन न लहई वाट ॥
कोई मूंसारो[4] मूंसी गयो ।
कंचु कसरा ते लंक की वेठ ॥
रात दिवस धनी पहरीयौ ।
तोही मूंसारौ मूंसी गयो ढेठ[5] ॥ ९३ ॥
रूठी गोरी अल्यंग[6] नू लेहि ।
पल्यंग वइसइ नवि पान नू लेहि ॥
ऊभी दइ छई ओलंभा[7] ।
करि लागइ अरि मोड़[8] पूछइ वांह ॥
"कंत भरोसो कांइ करौ ? ।
बारा वरस कीम रहज्यो नाह ? ॥ ९४ ॥

---

१. क्रोडि, गोद । २. मर्दन, ३. रति में मान भंग हुआ । ४. चोर, मूरख । ५. दृष्ट, ढीठ । ६. आलिंगन । ७. उपालम्भ । ८. मुड़कर, पीछे मुँह करके ।

वरस दीहां का वाराहो मास।
वारा मास का चउवीस पाख॥
तीन सै साठि ए दिन गया।
तीन सै साठि गइ छइ रात॥
ऐता दिन तुम कहाँ हूँता[1]?।
ईव किम वससूं राज की खाट" ॥ ६५ ॥
वारमै वरस मील्यो धन नाह।
अरुजन जू धन लीयो सनाह॥
कसतूरी मरदन कीयो।
झवरक[2] दीव लै गहरी वाट॥
सा धन पान समारिया।
जाई वैठी धन प्रीव की खाट ॥ ६६ ॥
अरजन[3] जू धन लीयो सनाह[4]।
गली पैहरई टंकाहिलो हार॥
कंचु कसण ने खोलिया।
कूं कूं चंदन सीरह स्यंदूर[5]॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ।
कामनी कंत रमइ रस पूर ॥ ६७ ॥
वारमइ वरस मील्यो धन-नाह।
हीयड़ लइ हाथि गला मही बांह॥

---

१. थे, रहे। २. जलते हुए दीपक में जोई बत्ती। ३. कार्तिक में मधुप छिपा था १२ वर्ष पीछे। ४. कवच। ५. सिन्दूर।

अमली समली चुंवणी।
अतिरंग स्वामी भरिजे है पीक॥
सषी सहेली मँह लाजस्युं।
अंतीरंग स्वामी भरि जै छै प्रीक॥९८॥
"सांभलि वात कहै धन नाह।
हीयडइ हाथी गला माही बांह॥
आंगलीया[1] कटका करूं।
पाई[2] तलासू माझीअ रात॥
तोही देऊं भला जीवला[3]।
चोली माहरइ थी काढ़ि दुं पान॥
"थारा कीधा जइ करूं।
तुझ सरसी कीम जीमजै धान॥९९॥
उलगी जाई कांई कीयो नाह?।
मोड़ी उसीसों नू सूतो बांह॥
कठिण पयोहर नू मील्या।
केली गर्भ सा नू मील्या गात[3]॥
जांघ जोड़ावो नू नीरखीयो[4]।
रंग-भरि रयण नू माड़ीयो खेल॥
देव सतावो राजा तुं फिरई।
घीव वीसाही तु जीमो छइ तेल"॥२००॥

---

१. अगुलियाँ कटकाऊँ=अँगुली फोड़ूँ। २. पाँव दबाऊँ मध्य रात्रि में। ३. कदली के गर्भ सा कोमल नहीं मिला गात। ४. देखा=निरखना (निरीक्षण)।

कनक काया घट कूं कूं लोल।
कटीण पयोहर हेम कचोल[1] ॥
केलि गरभ जीसी कूंवली।
घायल[2] ज्युं घन खंचइ[3] अंग ॥
कड़ि[4] चालउ गोरी करइ।
वीरह[5]-वेदन नवि जाणइ कोई ॥
ज्युं राजा राणी मीलइ।
युं ईणि कलि[6] मीलजे सव कोई ॥१०१॥
गवरी को नंदन आव्यो हुइ भाई।
रास कहइ वीसल दे-राई ॥
राज-कुंवर अव[7] वर्णव्या।
सयल सभा साभलो हो संजोग ॥
गंगा फल 'नरपति' कहइ।
पुत्र कलत्र नवि हुवई वीजोग[8] ॥१०२॥
तीजो खंड थयो परिमाण।
घरि आव्यो वीसल-चहुवांण ॥
गढ़ अजमेरां राजीयां।
राजमती धन पूगी आस ॥
चउरास्या सह वर्णव्या।
अम्रत रसायण 'नरपति' व्यास ॥१०३॥

इति तृतीय सर्ग।

---

१. कटोरे। २. घायल, आहत। ३. खिंचे, तने। ४. कटि-कमर। ५. विरह वेदना, विरह का दुःख। ६. कलियुग में। ७. गर्भ-स्थ। ८. सुने। ८. वियोग।

चतुर्थ सर्ग

प्रणमूं हणुमन्त अँजनी-पूत ।
भूल्यो आषर आणज्यो सूत[1] ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहै ।
धार थी आवज्यो भोज नरेस ॥
मात पिता मेलावड़ौ[2] ।
सांभरया रास होई पुण्य प्रवेस ॥ १ ॥
राना-दे[3] मीलीयो सूरिज भरतार ।
रुखमीणी मीलीयो कृष्ण आधार ॥
चंद्र मील्यौ ज्युं रोहणी ।
'नाल्ह' रसायण नर भणई ॥
राणी मिलीय राइ नरयन्द्र ॥ २ ॥
गढ़ अजमेरां उतीम ठाई ।
राज करइ वीसल-दे-राई ॥
चउरास्या जे कई अति घणां ।
राज-कुँवर आव्या[4] सव कोई ॥

---

१. सूत्र में, छंद में । २. मिलानेवाला (मेलावड़ो=मेलावरो—मेलकार-मिलन करानेवाला) अथवा—मिलाप । ३. सूर्य के एक स्त्री का नाम 'संज्ञा' है संभव है कि 'नाल्ह' ने 'संज्ञा' का रूपान्तर सांना—(साना) रखा हो जो प्रतिलिपिकार की असावधानी से 'राना' हो गया हो । अतः इसका अर्थ होगा—संज्ञा देवी । ४. आये ।

भीतरते[1] राजा तणौं[2] ।
मान अधिक दीयी सब कोई ॥ ३ ॥
बोलइ वीसल—दे—परधान[3] ।
राय-कुँवर आयौ बहु—मान[4] ॥
राज-कुँवर तेड़ावियौ[5] ।
पाट पटोला[6] कुलह कवाई ॥
दीधो सोनो सोलहो[7] ।
चीत्रकोट[8] दीधो तिण ढाई ॥ ४ ॥
राय कुँवर बंध्यो सिर मोड़[9] ।
वारा गढ़ 'सुदुरग[10] चित्तोड़ ॥
राइ भतीजो थापीयौ ।
गढ़ अजमेरां उत्तिम ठाँय ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहई ।
राज करइ तिहां वीसल-राय ॥ ५ ॥

---

१. भीतरते=(भितराना-(अवधी) भीतर जाना) भीतर (अन्दर) गये। २. राजा के पास। ३. वीसलदेव का प्रधान मन्त्री। ४. बहु-मन्य, माननीय। ५. बुलाया। ६. रेशमी वस्त्र, पाट—रेशम, पटोला-वस्त्र। ७. उत्तम सोना=सोलहो आना सोना। "यह बोल चाल की बात है कि चोखे सोने को सोलहवाँ सोना कहते हैं। जान पड़ता है कि मध्यकाल में सोलह माशे की मोहर या स्वर्णमुद्रा होती थी अथवा सोलह बार का तपाया हुआ सोना उत्तम होता था—" (ब्रजमोहन वर्मा)। ८. चीत्रकोट=चित्तौर के गढ़ में। ९. मौर=पगड़ी, (मौलि)। १०. सुदर्ग=अच्छा दुर्ग।

कुँवर संतोष्यो[१] मनि हरषीयौ राई ।
धार नग्री वधाउ[२] जाई ॥
तेड़ो प्रोहित राव कौ ।
चोरी लीखी आप छइ हाथ ॥
"धार नग्री थे गम[३] करौ ।
राजा भोज ले आवज्यो साथ" ॥ ६ ॥
आईस[४] दीधौ बीसल-राई ।
प्रोहित मोकलाव्यो[५] तीणी ठाई ॥
लै मौहूरत[६] दूज[७] चालीयो ।
टका वीस दियो छइ राई ॥
वाटइ भीख्या[८] जिण करउ ।
पवन वेग तीण थानीक जाई ॥ ७ ॥
चाल्यो प्रोहित मालागिर[९] देस ।
वस्त्र कंषवर,[१०] अरि भला वेस ॥
हाथ कमण्डल भलमलई ।
ब्राह्मण वेद भणइ मूणकार ॥

---

१. सन्तुष्ट हुआ, संतुष्ट करके । २. बधावा=बुलावा । ३. जाओ ।
४. आयसु=आज्ञा । ५. भेजा । ६. महूर्त=दिन, स्त्रियों की विदा कराने
के लिए जो दिन निश्चय करके लिखा जाता है उसे 'दिन धरना' या
'मुहूर्त भेजना', कहते हैं । ७. द्विज=ब्राह्मण । ८. रास्ते में भिक्षा
[भीख] मत मांगना । ९. मालवगिरि=मालवा । १०. कषायंबर=
पीला वस्त्र, गेरुआ वस्त्र ।

राति दिवस करि चालीयउ।
पनरमइ[1] दिवस पहुतो तिणी ठार[2] ॥ ८ ॥
कोट कोसीसा[3] नयर[4] विसाल।
धार नगी माहइ गम[5] कीयउ ॥
नयर नीरूपम रूवड़ौ।
सरव सोनारौ[6] पोल पगार ॥
माथइ तिलक केसरी तणौ।
जाई पहुचो सीहँ[7]—दुवार ॥ ९ ॥
ब्राह्मण राज कीयउ प्रवेस।
लेइ बीजोरो दूज मील्यो हो नरेस ॥
राज[8] जमाई-घरि आवीयउ।
उठ्यो राई गयो रिणवास ॥
अंतेवर सहु कोकियो[9]।
राजमती की पूरी आस ॥१०॥
आयौ राजा सांभल्यो राई।
ततखिण[10] बल्यउ नीसाणे घाव ॥
राजा माहइ उछव[11] हूवउ।
ब्राह्मण दीयउ बहुत पसाव[12] ॥

---

१. पंद्रहवें दिन। २. ठौर, स्थान। ३. कोसीसां—कुसियत—विकट दुर्गम। ४. नगर। ५. प्रवेश किया। ६. नव सोने का, सोनहला। ७. मुख्य द्वारपर। ८. भोजराज। ९. कोलाहल किया। १०. तत्क्षण। ११. उत्सव। १२. प्रसाद—(पसाव) इनाम।

जीण संजोगी[1] सुणावीयउ ।
सूणी बचन हरष्यो मनि[2] राव ॥११॥
राजा भोज बोलइ तिणी ठाई ।
"देस देसांरा तेड़ावौ राई" ॥
तैरह षोहण[3] दल मिला ।
वाजइ पटह पखावज भेर ॥
असी सहस्र हाथी गुड्या[4] ।
भाण न सूझइ उठी रज रेण ॥१२॥
वाजइ पड़ह पखावज पूर ।
ढोल निसाण वाजइ त्रिणतूर[5] ॥
वीर घंटा तिहां रुणझूणइ ।
मेघाडम्बर छत्र सिर दीयौ राय ॥
अन्तर वासउ हो दियो सिलाण[6] ॥१३॥
दूरुग चितोड़ संसोभित ठाई ।
ततषीण राय पहुंतो जाई ॥
ठाम ठाम डेरा हुवा ।
भोजन भगति करई तीणी वार ॥
साथे चालइ राव को ।
गढ़ अजमेर पहुँतो जाई ॥१४॥

---

१. संयोग सुनाया । २. मन में । ३. अक्षौहिणी । ४. चले= [गम=गोड़, गुड्या, गतः] । ५. एक बाजा, रणभेरी । ६. डेरा ।

चिहु खंडा का मीलीया छइ राय ।
गढ़ अजमेर पहूँतो जाई ॥
आगइ प्रोहीत चालीयउ[1] ।
जाई उभो[2] रह्यो सींह—दुवार ॥
राजमती देइ वंधामणी[3] ।
आयो राजा भोज पमार ॥१५॥
राजा भोज आयो तीणी ठाई ।
सामहौ आयौ छै वीसल-राई ॥
गढ़ अजमेरां राजीयौ ।
राजा भोज नै[4] वीसल—राई ॥
दोई राजा मेलावड़ौ[5] ।
राजा भोज चाल्यो गढ़ मांहि ॥१६॥
राजा भोज आयो तीणी ठाई ।
राजमती हरषी मन मांहि ॥
कुँवर मीलइ जाई वाप हई[6] ।
लेई उछंगति[7] भोज कुँवार ॥
कुसले[8] पुत्रीहे मील्या ।
आज जनम राजा सफल संसार ॥१७॥

---

१. चलाया । २. ऊभना, खड़ा होना । ३. बधाई । ४. और । ५. मिले । ६. से—[हइ—स्यस् [सं०] विभक्ति का रूपान्तर] । ७. उत्संग में=गोद में, अंकवार में । ८. कुशल से; कुशलेन ।

घणी भगति करइ साभरयो-राव ।
पाट पटोला कुलह कवाई ॥
उलहण[1] मीणा सौ पूरव्यो ।
भोजन भगति करइ तिणी ठाई ॥
कर जोड़े 'नरपति' कहई ।
राजमती मुकलावउ[2] राय ॥१८॥
भोज कुँवर मुकलावी राय ।
आंतर वासो दीयो तीणी ठाई ॥
मान अधिक तिहां आपीयो ।
कुँवर बउलावी[3] बीसल-राव ॥
राइ वुलावै वाहुड्या ।
जाई मिलाण दीयो तिणी ठाइ ॥१९॥
राजमती लै आव्यो राई ।
देस मालागिर सेन[4] पठाई ॥
थांणौ[5] आयौ राव आपणौ ।
घरि घरि तोरण मंगलचार ॥
घरि घरि गुड़ि उछली ।
हुवउ वधावउ नगरी धार ॥२०॥

---

१. उलहण=कुलहण-मद्यपान का पात्र, मीणा=बोतल, शराब से भरी (मिलाओ-हँसी के साथ याँ रोना है भिलते कुलकुले मीना ।) शराब । २. विदा करवाई । ३. बुलाता है अर्पण किया = (अर्पितः—अरिपयउ) । ४. सेना । ५. स्थाने, स्थान में ।

कुँवर गई अंतेवर[1] मांहि ।
पाट[2]-महा-दे-राणी मीलै छै आई ॥
अंतेवर सहू को मीलई ।
मील्या सहोवर[3] भोज कुमार ॥
नयण ते आंसू खेरीया[4] ।
राजमती मीली तिण वार ॥२१॥
अंतेवर मांही रमइ राज-कुमार ।
दुख सुख माइ पूछइ तीणी वार ॥
"कही पुत्री ! राई किम गयउ[5] ? ।
रंग भरी रयणी मांडीयो खेल ॥"
"अही-वीष जी मै मो बसई[6] ।
एके वचन थी चाल्यो मेल्ही" ॥२२॥
श्रावण मास सुवाहणो होई ।
सखी सहेली खेलै सब कोई ॥
कुँवर रमई राजा भोज की ।
पेहलई श्रावण खेलाव जाई ॥

---

१. अंतःपुर । २. पट्टमहादेवी=राजमती की माता । ३. सहोदर ।
४. गिराया-टाला । ५. राजा बीसलदेव के उड़ीसा के प्रस्थान के विषय में पूछती है । ८. राजा राजमती के कहने पर ही रुष्ट होकर उड़ीसा गया था अतः राजमती कहती है मेरे जी में सांप का विष बसता है, अर्थात् मैं बड़ी कठोर वचन बोलने वाली हूँ ।

सही[1] सयाणी सब मीली।
"कहि कुँवर! कीसौ बीसल-राई?" ॥२३॥
राई भलो जीसो पून्यमचंद।
गोकुल मांही सोहे ज्युँ गोव्यंद॥
ईसो राजा सांभरी[2] तणौ।
राय[3] मुकुट राया सिर अंग॥
चउरस्या जै के उलगै[4]।
राई वदन जिसौ पूरणचंद॥२४॥
आसोज[5] मास सुहावण होई।
घरि घरि पूज करई सब कोई॥
पूजी देव्या मनी हरीखीयौ।
बहु मादल[6] वाजइ तिणी ठाई॥
दीवल्यां[7] कई आगही।
धूरि दसरावै चाल्यो राव॥२५॥
धूरि दसरावै चाल्यो राव।
वाजित्र वाजइ निसांणौ घाव॥
चौरास्या सहु आवीया।
सात से हाथी मत-नयंद॥

---

१. सखी। २. साँभर का। ३. राजाओं का मुकुट है और राजाओं के शरीर का सिर है। ४. सरदारों में लगता है जैसे पूर्णिमा का चंद्र। ५. आश्विन। ६. बाजा विशेष। ७. दीपावली, दीपाली।

असी सहस सांहण[1] मीले ।
राइ दिसइ[2] जीसौ पून्यमचंद ॥२६॥
मिल्या चौरास्या रांणौ राण ।
जाइ वघेरइ[3] दीयो मेल्हाण ॥
गढ अजमेरां राजीयो ।
मेघाडंबर सिर छत्र दीयो राई ॥
भाट विड़द[4] तिहां उचरै ।
"धनि धनि हो वीसल चहुँवाण" ॥२७॥
चाल्यो राई दीयौ वहुमान ।
काथ सुपारी पाका पान ॥
वलणे[5] चाल्यो राई आपणांइ ।
हीयड़इ हरिप मनि रंग अपार ॥
सूभट सेन्या राज तणी ।
जाई पहुंतो मंडव धार ॥२८॥
धार नयरी [पहुंतो] वीसल-राव ।
सांमहो आव्यो भोज खधार[6] ॥
कुसल रस प्रसन[7] हुवा ।
दासी दी कोला[8] मीली तिणि ठाइ ॥

---

१. घोड़े, सवार । २. दिसइ=(दश) दिखाई दे । ३. स्थान-विशेष । ४. विरुद—भाटों की एक जाति । ५. ससुराल को । ६. खंधार—खंडाधीश, राजा । ७. प्रश्न । ८. नाम दासी का ।

नयर—लोक सहूँ को मील्यो।
जाई जहुणो[1] बीसलराव ॥२६॥
धन जननी जिण जायो बीसलराव।
बीसल समो नवि कोई भौवाल॥
रूप अपूरब पेखीयो।
लावण[2] लांडु अरी पकवांन॥
सेना सहित राज जीमीयौ।
राई भतीजो[3] भोज दे बहुमान ॥३०॥
राजा भोज बोलइ तिणी ठाई।
पाटी[4] बैठाड्या बीसल—राई॥
गढ़ अजमेरां राजीयौ।
माणिक मोती चौक पुराई॥
दीया खरोदक[5] पइहरणइ।
राजा कुँवर बेसांणी[6] आणी॥
मोती का अखा[7] किया।
अंतेवर सहुँ जोवइ[8] छइ राई ॥३१॥
करि पहरावणी भोज संयूत।
दीधा पेई[9] भरी बहूत॥

---

१. जुहारा, प्रणाम किया। २. नामकीन=लावण्य पदार्थ। ३. बीसलदेव का भतीजा=प्रथ्वी भट्ट। ४. सिंहासन पर पाट पर। ५. एक प्रकार का वस्त्र (खीरोदक, श्वेत वस्त्र)। ६. बैसाना—बैठाना—[सं० व्य+स्थ]। ७. अक्षत। ८. देखती हैं। ९. पेटी, पेटारी [पुट]।

हाथी दीधा अति घणां।
पाषरया दीधा-तरल[1] तुषार ॥
पहिरावणी राजा करी।
ऊछव गुड़ी भोज—दुवारि ॥३२॥
अंतेवर सहू मीलेई कुँवार।
दीधा मोती नव-सर[2] हार ॥
कूँ कूँ काजल, सयल संयूत।
खावो पीवो घरि आपणइ ॥
अविचल राज करउ बहूत ॥३३॥
राजमती मुकलावी राई।
पाट—महा-दे-रांणी रुदन कराई ॥
कुँवर चालि घर आपणो।
वाजइ पडूह पखावज भेर ॥
भोज वलावे वाहुड्यो।
चाल्यो राजा गढ़ अजमेर ॥३४॥
वाजइ गुहीर[3] निसांणो वाव।
दुरंग[4] चीतोड़ पहुंतो राई ॥
अंतर—वासइ[5] नम कियौ।
सांभर थाणौ आवीयो राय ॥

---

१. तेज, चपल। २. नव सर का, सर—(सृज्—सं०) लड़ी। ३. गंभीर, ऊँची आवाज से। ४. दुर्ग। ५. अंतःपुर।

चौरास्या सहू बाहुड्या ।
ठामि ठामि घरि आव्यो कहइ राव ॥३५॥
गढ अजमेर पहुँतो जाई ।
बाजित्र बाजै नीसाणौ घाई ॥
गढि मांहि गुड़ी उछली ।
कुँवर सहीत लागै छई पाई ॥
राई अवास्यां[1] संचर्‌यो ।
सैज पधार्‌यो सांभर्‌यो—राव ॥३६॥
राजमती धन कीयो सींणगार[2] ।
गलि पहहर्‌यो टंकाउलि हारि ॥
पंहिरि पदारथ कांचु—वड़[3] ।
कहइ नु 'नाल्ह' सारदा कौ दास ॥
राजा रांणी सू मीलइ ।
पढइ सूणइ सवि पूरइ आस ॥३७॥
गायो रसायण लील—विलास ।
'नाल्ह' कहइ सव पूरज्यो आस ॥
रास रसायण उपजई ।
गढ़ अजमेरां उत्तिम ठाई ॥
'नाल्ह' रसायण आरंभई ।
रास चवो[4] तिणी वीसल—राई ॥३८॥

---

१. आवास—महल । २. शृंगार । ३. कंचुकी बढ़िया—सुंदर ।
४. कहा गया ।

सांझी समइ धल कियो सीणगार।
सीरह महसंद[1] गलि मोती-हार ॥
काने कुंडल दाड़ीमां[2] ।
पहिरी पटोली झीणइ जकी[3] ॥
कूँ कूँ भरीय कचोलड़ी[4] ।
बाघन—सेज[5] अदीठे[6] जाई ॥
स्वामी हइ सांसो पड्यो ।
झीणी[7] हरणांपी उपमजाई[8] ॥३९॥

चौथा[9] को लैहँगो भूना[10] को ताव ।
ठमिक ठमिक धन दे छइ पाव ॥
आवी अवांसई सांचरी ।
हीयडइ हरीष मन रंग अपार ॥
धन दीहाड़उ आज फउ ।
कुँवर तगायउ छइ वीसल-राव ॥४०॥

जव लगि महीयल[11] उगइ सूर ।
जव लगि गंग वहइ जल पूर ॥

---

१. मृगमद—कस्तूरी । २. दाड़िमां=अनार में । ३. खचित हुई ४. कटोरी । ५, सिंहासन=शय्या । ६. अधिष्ठित हुई—जाकर बैठी—विराजमान हुई । ७. जिसमें (स्वामी में) । ८. उपमर्दित हुई—(उपमर्दन) । ९. १०. एक प्रकार का वस्त्र । ११. मही में—पृथ्वी पर

जब लगि प्रथमी मै जगन्नाथ।
जीणि राजा सिर दीधो हाथ॥
रास पहुँत्तो राव कौ।
वाजै पड़ह पखावज भेर॥
कर जोड़े 'नरपति' कहइ।
अविचल राज कीज्यो अजमेर॥
जू तारायण[1] मीली सो चंद।
गोवल[2] मांहि मिलइ ज्युं गोव्यंद॥
ज्युँ उलिगाणइ घरि मिल्यो।
गढ़ि उलिगाणइ कीधो हो वास॥
मनका मनोरथ पूरव्या।
भणइ सुणइ तिणी पूरज्यो आस॥४२॥

इति चुतुर्थ सर्ग।

समाप्त।

---

१. तारों में-(-तारागण-तारायण)। २. गोपालों।

बीसलदेव रासो में आए हुए नामों की अनुक्रमणिका।